

मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

(भूतपूर्व जोधपुर नरेश परमपद प्राप्त राजर्षि महाराजा श्री श्री मानसिंहजी महोदय रचित व्यावहारिक आत्म-ज्ञान के पद्यों का संग्रह)

प्रथम भाग

—: संग्रहकर्त्ता :—

स्व. रामगोपाल मोहता

बीकानेर



—: प्रकाशक :—

शिवरतन मोहता

इन्दौर

[तृतीय आवृति]

सम्वत् २०२५

[मूल्य १।।



मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

(भूतपूर्व जोधपुर नरेश परमपद प्राप्त राजर्षि महाराजा
श्री श्री मानसिंहजी महोदय रचित व्यावहारिक
आत्मज्ञान के पद्यों का संग्रह)

प्रथम भाग

—: संग्रहकर्ता :—

स्व. श्री रामगोपालजी मोहता

बीकानेर

प्रकाशक
शिवरतन मोहता

तीसरी बार) सम्वत् २०२५ (मूल्य १।।)

हमारे यहां निम्नलिखित पुस्तकें मिलती हैं

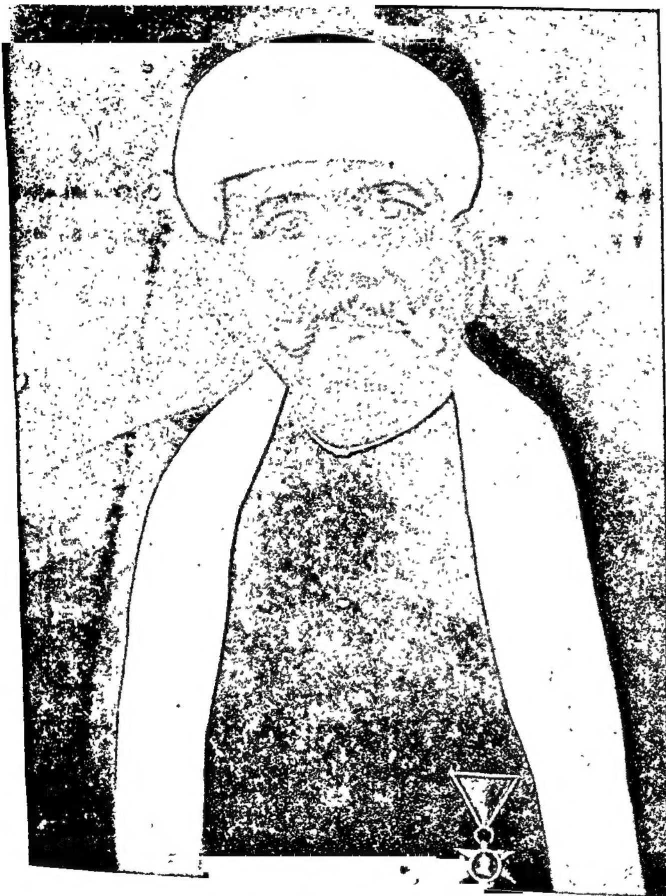
श्री रामगोपाल मोहता कृत

गीता का व्यवहार दर्शन	पृष्ठ ५५०	मूल्य ४)
गीता विज्ञान	पृष्ठ ८४	,, ७५ पैसे
भगवान गौतम बुद्ध और महायोगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण	पृष्ठ ९७	,, ४४ पैसे
ईशावास्य उपनिषद् (व्यवहारिक भाष्य)	पृष्ठ ४६	,, २५ पैसे
समय की मांग (अथवा कृष्ण की क्रांति)	पृष्ठ २७२	,, २)
प्रेम भजनावली	पृष्ठ २५	,, १२ पैसे
एक आदर्श समत्वयोगी-श्री सत्यदेव विद्यालंकार द्वारा सम्पादित	पृष्ठ ४०७	,, १०)

श्री रामगोपाल मोहता द्वारा संपादित

मान पद्य संग्रह	प्रथम भाग	पृष्ठ १७६	,, १॥)
मान पद्य संग्रह	दूसरा भाग	पृष्ठ ३०४	,, २॥)
मान पद्य संग्रह	तीसरा भाग	पृष्ठ १२०	,, १)

प्राप्ति स्थान—
शिवरतन मोहता
मोहता भवन,
बीकानेर



स्व. श्री गोवर्धनदासजी मोहता
(स्व. मनस्वी श्री रामगोपालजी मोहता के पिताश्री)

परन्तु अत्यन्त ही खेद का विषय है कि महाराजा मानसिहजी की उक्त अत्यन्त लोकोपकारी एव कल्याणकर रचनाओ का अनुपम-अमूल्य भण्डार "मान-सागर" ग्रन्थ अप्राप्य है। अनेक सामयिक पत्रो मे और जोधपुर गवर्नमेंट गजट में विज्ञापन निकाले गये और भी बहुत तलाश की गई, परन्तु "मान-सागर" ग्रन्थ का कही पता नही लगा।

साधु मोहनरामजी के याद किये हुए पद्यो में से, जो उनने गाये, उन्हे गाते समय व्यावहारिक-वेदान्त के प्रेमी, बीकानेर निवासी प० आत्मारामजी हर्ष बड़े ही परिश्रम और फुर्ती के साथ लिखते गये। व्यावहारिक-वेदान्त का हिन्दी भाषा मे कविता-मय साहित्य का एक प्रकार से अभाव सा है, और वर्तमान समय मे इसकी अत्यन्त ही आवश्यकता है क्योकि गद्य साहित्य की अपेक्षा पद्य-साहित्य का प्रभाव जनता के चित्त पर अधिक पड़ता है और उसमे भी जब सगीत मे कविता गाई जाती है तो प्रभाव बहुत बढ़ जाता है। इसलिए इन पद्यो का जैसा सग्रह हो सका वैसा ही शीघ्र प्रकाशित करना आवश्यक समझ कर ऐसा किया गया है। इसमे जो *अशुद्धिया एव त्रुटिया रही है उनके लिये पाठक पाठिकाओ से क्षमा प्रार्थना है।*

इस सग्रह का एक मात्र आधार साधु मोहनरामजी की स्मृति ही है, अतः उनकी अद्भुत स्मरण शक्ति की प्रशसा किये बिना नही रहा जाता। उनको अनेक धन्यवाद है कि उनने ये पद्य गा गा कर लिखवाने का अवसर दिया। इसी तरह पण्डित आत्मारामजी हर्ष को भी अनेक धन्यवाद है कि जिन्होने अत्यन्त ही परिश्रम एव अनेक प्रकार की असुविधाओ को सहन करके गाने के साथ साथ लिखने और फिर दुबारा शुद्ध करके लिखने का परिश्रम किया।

कराची, सवत १९९५

विनीत,--

रामगोपाल मोहता

द्वितीय संस्करण की भूमिका

"मान पद्य सग्रह" के प्रथम भाग के पहले सस्करण की दो हजार प्रतिया सवत् १९९५ में छपी थी। दूसरे भाग की एक हजार प्रतिया सवत् १९९७ में और फिर तीसरे भाग की एक हजार प्रतिया सवत् २००७ मे छपी थी। दूसरे भाग का प्रथम सस्करण सवत् २००९ मे समाप्त होने पर उसका दूसरा सस्करण छपाया गया।

अब प्रथम भाग का पहला संस्करण भी समाप्त हो चुका इसलिये इसका यह दूसरा संस्करण छपवा कर प्रकाशित किया जाता है। इसमें कई पद्य जो विशेष उपयोग में नहीं आते वे छोड़ दिये गये हैं ताकि पुस्तक की कीमत अधिक न हो जावे। थोड़े से नये पद्य विशेष उपयोगी समझ कर बढ़ाये भी गये हैं।

रामगोपाल मोहता

बीकानेर
संवत् २०११

तृतीय संस्करण की भूमिका

जनता-जनार्दन ने इस संग्रह के भजनों एवं गीतों को बहुत अधिक पसंद किया एवं विशेष कर राजस्थान की धर्मप्राण जनता ने अत्यधिक सम्मान प्रदान किया। उन्हीं की मांग को ध्यान में रखते हुवे प्रथम भाग का यह तृतीय संस्करण प्रकाशित किया गया हैं।

इन्दौर सं० २०२५

विनीत
शिवरतन मोहता



~ भूमिका ~

मारवाड़ जोधपुर के भूतपूर्व महाराजा राजर्षि श्री श्री मानसिंहजी महोदय बड़े ही विद्वान्, गुणी, कवि और राजनीतिज्ञ होने के साथ साथ पूर्ण आत्म–ज्ञानी हुए। इनके राज्यशासन का काल विक्रम सम्वत् १८६० से १६०० तक बताया जाता है। इनके रचे हुए कई ग्रन्थ पाये जाते हैं और इनके बनाये हुए भजनों का भी राजपूताने में बहुत प्रचार है, परन्तु अधिकतर भक्ति और वैराग्य के भजन ही लोग गाते हैं। यद्यपि महाराजा मानसिंहजी ने आत्म-ज्ञान के और विशेष करके व्यावहारिक-वेदान्त विषयक बहुत से पद्यों की रचना की थी, परन्तु उनका आम तौर से प्रचार नहीं है।

अनुमान तीन वर्ष हुए जोधपुर निवासी कबीर-पन्थी सूरदास साधु मोहनराम जी से बीकानेर राज्यान्तर्गत श्री कोलायतजी तीर्थ पर भेंट हुई। उन्होंने महाराजा मानसिंहजी रचित आत्म-ज्ञान और व्यावहारिक वेदान्त के बहुत से पद्य गाये, जिन्हें सुनकर अपूर्व आनन्द आया। यद्यपि वेदान्त-सिद्धान्त के भजन-वाणी अनेक महात्माओं के रचे हुए बहुत से सुनने में आये थे और बहुत से कंटस्थ भी किये थे, परन्तु साधु मोहनरामजी द्वारा गाये हुए महाराजा मानसिंहजी रचित व्यावहारिक वेदान्त के भावपूर्ण, सरस, निःशंक और ओजस्विनी भाषा के हृदय-ग्राही भजनों और कविताओं का जो प्रभाव चित्त पर पड़ा वह अकथनीय है। साधु मोहनरामजी से पूछने पर विदित हुआ कि उन्होंने महाराजा मानसिंहजी के पद्य एक "मान-सागर" नाम की हस्तलिखित पुस्तक से सुनकर याद किये थे। वह "मान-सागर" पुस्तक, एक पंजाबी साधु के पास थी जिनका नाम भास्करानन्द जी था, जो संवत् १६८५ में उन्हें मिले थे। उनसे वह पुस्तक मांग कर अनुमान तीन महीने तक मोहनरामजी ने अपने पास रखी और उसमें से कई चुने हुए पद्य याद किये, जिनकी संख्या अनुमान दो अढ़ाई हजार के बीच में हैं। फिर स्वामी भास्करानन्दजी ने अपनी पुस्तक पीछी ले ली और चले गये, अब उनका कोई पता नहीं है।

साधु मोहनरामजी द्वारा गाये हुए पद्यों से प्रतीत होता है कि महाराजा मानसिंह जी अपनी प्रथम अवस्था में प्रायः दूसरे साधारण राजाओं जैसे ही राजा थे, परन्तु सद्‌गुरु देवनाथ जी महाराज के उपदेशों से उनको आत्म-ज्ञान हुवा। फिर वे पूर्ण आत्मानुभवी हो गये और आत्मानुभव-युक्त ही राज्य करते रहे और व्यावहारिक-वेदान्त के तो मानो वे मूर्तिमान् स्वरूप ही थे।

परन्तु अत्यन्त ही खेद का विषय है कि महाराजा मानसिंहजी की उक्त अत्यन्त लोकोपकारी एवं कल्याणकर रचनाओं का अनुपम-अमूल्य भण्डार "मान-सागर" ग्रन्थ अप्राप्य है। अनेक सामयिक पत्रों में और जोधपुर गवर्नमेंट गजट में विज्ञापन निकाले गये और भी बहुत तलाश की गई, परन्तु "मान-सागर" ग्रन्थ का कहीं पता नहीं लगा।

साधु मोहनरामजी के याद किये हुए पद्यों में से, जो उनने गाये, उन्हें गाते समय व्यावहारिक-वेदान्त के प्रेमी, बीकानेर निवासी प० आत्मारामजी हर्ष बड़े ही परिश्रम और फुर्ती के साथ लिखते गये। व्यावहारिक-वेदान्त का हिन्दी भाषा में कविता-मय साहित्य का एक प्रकार से अभाव सा है, और वर्तमान समय में इसकी अत्यन्त ही आवश्यकता है, क्योंकि गद्य साहित्य की अपेक्षा पद्य-साहित्य का प्रभाव जनता के चित्त पर अधिक पड़ता है और उसमें भी जब संगीत में कविता गाई जाती है तो प्रभाव बहुत बढ़ जाता है। इसलिए इन पद्यों का जैसा संग्रह हो सका वैसा ही शीघ्र प्रकाशित करना आवश्यक समझ कर ऐसा किया गया है। इसमें जो अशुद्धियां एवं त्रुटियां रही हैं उनके लिये पाठक पाठिकाओं से क्षमा प्रार्थना है।

इस संग्रह का एक मात्र आधार साधु मोहनरामजी की स्मृति ही है, अतः उनकी अद्भुत स्मरण शक्ति की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। उनको अनेक धन्यवाद है कि उनने ये पद्य गा गा कर लिखवाने का अवसर दिया। इसी तरह पण्डित आत्मारामजी हर्ष को भी अनेक धन्यवाद है कि जिन्होंने अत्यन्त ही परिश्रम एवं अनेक प्रकार की असुविधाओं को सहन करके गाने के साथ साथ लिखने और फिर दुबारा शुद्ध करके लिखने का परिश्रम किया।

करांची, संवत् १९९५

विनीत —
रामगोपाल मोहता

द्वितीय संस्करण की भूमिका

"मान पद्य संग्रह" के प्रथम भाग के पहले संस्करण की दो हजार प्रतियां संवत् १९९५ में छपी थी। दूसरे भाग की एक हजार प्रतियां संवत् १९९७ में और फिर तीसरे भाग की एक हजार प्रतियां संवत् २००७ में छपी थीं। दूसरे भाग का प्रथम संस्करण संवत् २००९ में समाप्त होने पर उसका दूसरा संस्करण छपाया गया।

अब प्रथम भाग का पहला संस्करण भी समाप्त हो चुका इसलिये इसका यह दूसरा संस्करण छपवा कर प्रकाशित किया जाता है। इसमें कई पद्य जो विशेष उपयोग में नहीं आते वे छोड़ दिये गये हैं ताकि पुस्तक की कीमत अधिक न हो जावे। थोड़े से नये पद्य विशेष उपयोगी समझ कर बढ़ाये भी गये हैं।

रामगोपाल मोहता

बीकानेर
संवत् २०११

तृतीय संस्करण की भूमिका

जनता-जनार्दन ने इस संग्रह के भजनों एवं गीतों को बहुत अधिक पसंद किया एवं विशेष कर राजस्थान की धर्मप्राण जनता ने अत्यधिक सम्मान प्रदान किया। उन्हीं की मांग को ध्यान में रखते हुवे प्रथम भाग का यह तृतीय संस्करण प्रकाशित किया गया हैं।

इन्दौर सं० २०२५

विनीत
शिवरतन मोहता



पद्य-सूची





स्व. मनस्वी श्री रामगोपालजी मोहता

योग कोई पुजा न्यारी न्यारी तानो । आपनो निज बीज आदि ताहि को भुलानो ।। ३।। 'ओह' 'आह' मेट दूजा 'म' ही को निहारो । ओह सोह सभी गये कौन मुझसे न्यारो ।। ४ ।। वेद गावे सभी ध्यावे महत्व रह्यो न्यारो । अपनो जब आप पावे होय उर उजारो ।। ५ ।। राव रंक नहीं कोई नहीं है दूजा नहीं होय । मान जाग सती सोय आनो नही जानो ।। ६ ।।

।। कवित्त ।।

ॐॐरटत रटत चारो वेद थाक गये, पर ओंकार कहा याको कोई नहीं जोयो है । वेदहू न थाके ये तो थाक गये वाचण हार, वाच्या ही वाच्यों पर मति न उठायो है । ॐहू को दोष नाहि दोष वाचणहार हूँ मे, वाच्यो जैसे पिंजरे में तोते ने रो पढ़ायो है । कहे राव मानसिंह धिक्कार ऐसे वाचन में, वाच वाच मूढ़ ऐसे जन्म क्यों गमायो है ।

।। कवित्त ।।

केते तो ॐ हू को मन्त्र मन्त्र कहके जगत् , केते ॐ हू की एक धर्म झाड गाडी है । है वो ओम् क्या याको कोऊ नहीं जाने देखो, आई है अविद्या की जो उर बीच टाटी है । है सो चारो वेद कहे ॐ एक मूल सभी, पर कहनो महज धारनो तो कड़ी बहुत घाटी है । कहे राव मानसिंह देवनाथ मिले मोहि, ऐसी तो भरमना की भीत दूर फाटी है ।

।। कवित्त ।।

देखो यह भूल जाको मेटे नाहि कोई ऐसी, एक ओ३म् नाम जाकी करत खेंचतानी है । केते तो कहत ॐ अक्षर ही मात्र एक, केतेक कहे ॐ वेदहू की वानी है । केतेक कहे ॐ पूर्ण ब्रह्म रूपयो एक ही ॐ पर केती मन तानी है । अन्ध है विश्वास केतो भासहू न सूझे जाको बोलत चराचर एक ॐ की निशानी है । जेते घट तेते सब रटत ओंकार ध्वनि , बडे बडे पण्डित की मति अलसानी है । कहे राव मानसिंह यह वहम हमेशा ही , सो मे नहीं आना और नहीं अब जानी है । नित्य हू नित्य हू नाही अनित्य में सोक अनित्य कहे याकी अकल भाग खानी है ।

।। दोहा ।।

गणपति गणपति सब कहे, पर गणपति लखे न कोय ।
जो कोई गणपति लखे , तो सहजे गणपति होय ।।
विश्व गणाधिपति सदा, और विश्व आपने माय ।
तू कुछ भिन्न विश्व ते नही, मेटो भूल सदाय ।।

॥ गान ॥

राग बरवा । ताल कैरवा ॥

मन या विधि पूजा कीजे । ऐसो देव अखंडन कहिये,
ताही न दूर भजीजे ॥ टेर ॥

ओंकार को रूप गजानन ऋद्धिसिद्ध वहां रही जे । अनघढ़ देव आतम एक कहिये ता दरशन सुख लीजे ॥ १ ॥ यह जग सबही की भरम को मारग अन्धे अन्धन पतीजे । भरम कूप विच गिरत सकल यह आतम नहीं ओल खीजे ॥ २ ॥ श्रुति स्मृति सब ही कह नित याको झूठ न कहीजे । छान्द योग उपनिषद् देखो कर विश्वास पढ़ लीजे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु समरथ कहिये समरथ होय समझी जे । मानसिंह अब पाय अभय पद भरम अलग कर दीजे ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

ध्यावत ध्यावत पावत पावत , पाय लियो जब पन्थ मिटयो है ।
आवत आवत आय गयो जब, दूजो कय्हो जाको तत्त्व घट्यो है ।
देव अखण्ड मिले हमको , जो न्यारो कय्हो जाते जीव फट्यो है ।
जीव गयो पुनि ब्रह्म भयो, नृप मान जो आपनो रङ्ग चढ्यो है ॥

॥ सवैया ॥

कहते सवी गिरजा सुत है, याको कोई अर्थ करो अब भाई ।
ब्रह्म ते जीव कह्यो इण बुद्धि, जीव भयो तब सुत है सदाई ।
जीवते ब्रह्म भयो जद पाछो, सुत पितु भयो ऐसो आनन्द आई ।
मात हती जाको आन भयो पति, मान कहे कछु धोखा नाई ।

॥ गान ॥

राग आसावरी । ताल दीपचंदी ॥

साधो भाई मैं ऐसा देव विचारा । गणपति नाथ गुणों का आगर,
सोही निज प्राण हमारा ॥ टेर ॥

आदि अन्त मध्य तीन काल में, रेवे एक रस धारा । जन्म ने मरण होय नहीं जिनको सोई निज नैन निहारा ॥ १ ॥ मूल चक्र नहीं मैं तो छेया, ना कोई श्वासा ने मारया। रेचक पूरक कुम्भक नहीं कीना, मिल गया प्राण आधारा ॥ २ ॥ शब्द न रट्या विवेक किया जब, सोहं शब्द उचारा । खोजत खोजत खुदही मिलगया-गम गया खोजन हारा ॥ ३ ॥ मैं हूं गणपति गणारो राजा, मैं ही पुजावण हारा । मानसिंह नहीं देव पुजारी, कहत पाखण्डी न्यारा न्यारा ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

बाहर गणेश मनावत है पर अन्तर ते ताको नहिं जाने ।
मूढ़ की मूढ़ी पड़ी यह कैसे, दौड़ के दौड़ यह बाहर ताने ।
गणेश गणादि भन सभी विन, ताको दर्शन कोउ नहीं पावे ।
मंदिर मंदिर भटकत भटकत, उमर सगरी मानि गमावे ।
गुरुदेवहि साथ कृपा करके कही, होय सचेत तो सहजे पावे ।
पर मान का मान बढ़े जबही, जो महान गणेश को दर्शन पावे ॥

॥ सवैया ॥

करत विनय सबही सरस्वती को, पर सरस्वती अर्थ को व्यर्थ गमावे ।
सरस्वती अर्थ आय जो उर में, तो सबही काज सिद्ध होय जावे ।
सरस्वती अर्थ विचार करो, कुछ, विचार बिना नही सार लखावे ।
सार को सार निकार लेवो तब, सरस्वती अर्थ मिले उर पावे ।
नृप मान कहे यह विचार बिना, सगरो जग योंही बहया नित जावे ।
एक विचार करे उर में सो विचार सभी शब्दन को पावे ।

॥ सवैया ॥

नाम जिन्हों को सरस कहे, सब में जो सरस उन्हें तुम टारो ।
सरस स्वत ही सबमें वो व्यापक, है सत कौन जिन्हे जो विचारो ॥
सत् और मिथ्या का ज्ञान लगे जब अर्थ लगे सरस्वती को सारो ।
भेद बिना सगरो जग यह, बेद बक बके नही अर्थ सभारो ।
गुरुदेव ही नाथ कृपा करके, जो व्यर्थ गयो ताको सार निकारो ।
अब हम ज्ञान को जान लियो, सरस्वती भी है निज रूप हमारो ।
भटके अटके झटके कई दिन, पोल ही पोल्हू [illegible] निज यारो ।
नृपमान कहें जो समझ लगी, जब, सार को सार हतो ते निकारो ॥

॥ गान ॥

राग बिहाग । ताल कँरवा ॥

साधो मोय यह माता नही भावे रे । याते भली तो होत डाकिनी अपने सुत को बचावे रे ॥ टेर ॥
माता बनी जगत सगरे की पुत्र पकड़ डकरावे रे । जामें ही दीन होव जमा को खावे जबरा सुर डर जावें रे ॥ १ ॥ मनुष्य बचाय पशुवन को याबन जुल्म करे माता भारी रे । दधि घृत को आनो मूल गमावे ऐसी क्या महतारी रे ॥ २ ॥ आप चढ़ोरे

स्वाद नहीं छोड़े यह स्वादी ने स्वांग रचाया रे। माता विचारी को नाम धरत हैं लम्पट रोल मचाया रे ।।३ ।। सर्प बिच्छू कई जीव जहरीले जिनको माता क्यों नहीं खावे रे। माता चढ़ाय के लेवे प्रसादी मरतां ने कदवा वचावे रे ।। ४ ।। मात चोमुण्डी मेरी ब्रह्म रूपिणी ब्रह्म स्वरूप कहावे रे। मानसिंह मन मतिया पोल में बैठा ढोल बजावे रे।।

शिव महिमा

।। गान ।।

राग भैरव । ताल दादरा ।।

जय महेश जय महेश सेवक हितकारी ।। टेर।।

शंभुनाथ पकड़ो हाथ सुनो हो त्रिपुरारी। अन्तर्यामी हो नमामि शरण हम तुम्हारी ।। १ ।। पाँचों तत्त्व तीन गुण अन्तःकरण च्यारी। च्यारों ही में एक रहत मूरती तुम्हारी ।। २।। तीनों लोक हाहाकार बजत शंख भारी। आप बजावे बाजे आप गम न लखत थाँरी ।। ३ ।। कहे मान पड़ी जान भगी भरम सारी। मो में शंभु मैं शंभु में अवर नहीं न्यारी ।। ४ ।।

।। सवैया ।।

भंग धतूरां आक पिवे और लांबी चिलम पलीता उटावे।
बम् बम् बम् मुख वम्व कहे इन वम्व में ही जग को बहकावे ।।
जगत ठगाई बने ठग यह और शंकर को ही नाम लजावे।
नृप मान कहे धिक है अस लम्पट संकर कहे कुसंग दिखावे ।।

।। सवैया ।।

लोटा मोटा भंग का भर के घोटा आधी रैन खड़कावें।
विभूति रमाय के भूत जिसा बन अलख अगड़-बम बाज सुनावे।
आप तो डूबे सो डूबे भला पर जगत सबी को लार डुबावे।
महा प्रसाद कर कर शंकर को अपने जैसा सब को बनावे।
नृप मान कहे धिक है अस लंपट सँन्यासी को पद नीचो दिखावे।
संन्यासी को पद विषय नास्ति यह तो दूनी विषय बिच आग लगावे ।।

।। कवित्त ।।

पंडित विद्वान भये मूरख सो स्वान भये, पंडित भये क्या होय बुद्धि को गमाई है।
शंकर गल व्याल खाल भूतन को रहत जाल, देखो इन लंपट सब जगत को बहकाई

है। पियत भङ्ग लगत रङ्ग देखो कुढंग ढंग, आप में कुभग ते शंकर में दरशाई है। आप जो विषय के कीड़े शंकर को कहत यह, लाजत ऐसे लपट को लाजहू न आई है। चके नहीं चोर देखो देवन के देवहू ने, बिलकुल थी सीधी चाल उलटी ते चलाई है। कहे राव मानसिंह मैं तो नहीं मानूं ऐसी, यह तो पोल झोल सब लपट हू बनाई है।

॥ दोहा ॥

ब्याल खाल विभूति की, हैं यह बातें झूठ।
मान कहे यह झूठ नहीं, हैं यह सत्य अखूट॥
तुम कहते ऐसे नहीं, हैं यह बातें और।
असल बात को छोड़ दी, हैं सगरे मन के चोर॥

॥ गान ॥

राग भैरव। ताल ध्रुपद॥
रूप है अनूप नाथ शंकर सुखदाई॥ टेर॥

ब्रह्म रूप शुद्ध स्वरूप निश दिन ब्रह्मचारी। सकल जगत आप माय सकल से किनारी॥ १॥ स्थूल देह त्वक् ओढ़ी भूमि सेज सारी। ॐ ॐ उटन ध्वनि लगत सबहि प्यारी॥२॥ पांच विषय त्रिगुण लकुटी युक्ति करके जारी। जार जार खाक कीन सोई भस्म धारी॥३॥ चतुष्टगण अन्तःकरण रहे नित आज्ञाकारी। वृत्ति गौरी पास रहत लगत जाको प्यारी॥४॥ ओम् सोम् घोटा कीन सुरत की सिलारी। स्वासो स्वास घोटन लागे घुटी भंग भारी॥५॥ किये है विचार गलनता में भंग छानी। स्थूल छोड सूक्ष्म को लोटा भर आनी॥६॥ जीव ब्रह्म पीवन बैठे कर कर मनुहारी। पिवत पिवत पीव मिले कौन रहे न्यारी॥७॥ ज्ञान और वैराग्य दोय ब्याल गल में धारी। मन को नन्दीगण कीनो सजी है सवारी॥८॥ तितिक्षा को सिंह गरज बोलत भयकारी। क्षमारूप बोले महेश धीरज उर धारी॥९॥ शील को कैलाश जाके दसवें पर सोहे। आपही आप और नहीं को पै बोध होवे॥१०॥ देवनाथ शुद्ध महेश ऐसा हम चीना। रेरे कुछ लाज धरो अनरथ अर्थ कीना॥११॥

॥ दोहा ॥

मुखते तो सीधी कहे, चले जो उलटी चाल।
समझे नहीं ये बापुरे, पकड्यो उलटो ख्याल॥
मुखते जो तुम शिव कह्यो, तो सारे क्या रह जाय।
शिव कहना सर्वज्ञ है, सीधा अर्थ लगाय॥

चाहे काशी केदार को, अमरनाथ कैलास ।
तेरो शिव जाने नहीं, जब तक सगरी फास ।।

॥ गान ॥

राग कालिगड़ा । ताल कैरवा ॥

कुण म्हारे काशी जावे, भूल कर कण म्हारे काशी जावे ।। टेर ।। जैसी मूरत काशी में कहिये, तैसी यहाँ मिल जावे ।।१।। वाँही जाय करोत से मरनो, यहां जहर खाय मर जावे ।। २ ।। शिव जो कहे तो एक जगह क्यों, यह मोय हांसी आवें ।। ३ ।। यहाँ पर न्यून विशेष काशी में क्या, यह तो झूठी दुकान लगावे ।। ४ ।। शिव जो है वो यहीं पर, नहीं तर पोल मचावे ।। ५ ।। जावे जिके तो भलांई जावो, मोय तो दाय नहीं आवे ।। ६ ।। काशी गयो सो मोक्ष, कुण पोहँच्यो, पत्र किणी रो आवे ।।७।। बिना पते की मोक्ष कुण माने, अन्ध के पीछे अन्ध जावे ।। ८ ।। देवनाथ प्रत्यक्ष मिले हर, कुण अब दुखड़ो उठावे ।। ९ ।। मानसिंह महादेव मेरो मैं, कुण अब गोता खावे ।। १० ।।

॥ दोहा ॥

अकाल मृत्यु हरणान कहे, एक भुख यही सुणाय ।
क्रोड़ां ही शंकर हुवे, जिनको मिल्यो न थाह ।।
आप ही जन्मे और मरे, हरे क्या और अकाल ।
ऐसो शिव मानूं नहीं, कि जिनको खावे काल ।।

॥ गान ॥

राग कालिंगड़ा । ताल कैरवा ॥

मेरो तो शिव अविनाशी, मिल्यो मोय मेरो तो शिव अविनाशी ।। टेर ।। पाँच विषय चारों अन्तःकरण हरदम रहे गण पासी । तुरीये पद कैलास, वसत जहाँ वृत्ति गवरजा दासी ।। १ ।। आनन्द रूप हमेशा ही रेवे कबहू न होत उदासी । अखिल ब्रह्मांड को करणहार है उनमें ही अखिल समासी ।। २ ।। साची कहो झूठ मत बोलो मुख कालो होय जासी । जगत ठगाई परी उठावो नहीं तो अन्त होवेला हाँसी ।। ३ ।। माया काज मत जगत बहकाओ पोल आखिर उड़ जासी । पोल उड्याँ थांने कोईयन पूछे ज्यूं मगहर ज्यूंही काशी ।। ४ ।। भेड़ मिटावो ने सिंह बणावो तो हो वो असल संन्यासी । छोड़ के काम हराम निमक करो मत बनो विषय के विलासी ।। ५ ।। जैसो गृहस्त संन्यस्त तैसो ही दोनूं बराबर फासी । घर ने मढ़ी थांरा पड़िया रेवेला आवेला काल भख जासी ।। ६ ।। मानसिंह अब

शिव पद जानो तो जीवत मोक्ष मिल जासी। मरिया मोक्ष सुपने मत जानो मत होयो अन्ध विश्वासी ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

एक जो बूटी कारने, दौड़यो शकर आय।
वो शिव क्या मुक्ति करे, मोको नाँय सुहाय ॥

॥ सवैया ॥

मानुष वैफ पीवे पत नाही सबही उनको बुरो बतावे।
तीनहू लोक को नाथ पीवे भग तो हम को किम कर पत आवे।
भग नशे विच चूर रहे फिर क्या हमरो वह न्याय चुकावे।
नशे के बीच उदासी पड़यो रहे ऐसो क्या राजा राज कमावे।
पाप ने पुन को न्याय करे कुण वो तो नशे मे न आखे खलावे।
पोल ही पोल मे जाय धर्म वहा पूछे नही कुण पुण्य कमावे।

॥ सवैया ॥

भस्मासुर आगे ही भाग गयो तो हम उनके अधिक कुछ जोर जमावें।
उन जो रिझाय लियो वगन मे हमहू उनते अधिक रिझावें।
बूटी पिलायाँ गाल बजायाँ रीझे तो क्या तकलीफ उठावें।
पीवें जितनी पिलावें भग और खड़े सभी दिन गाल बजावे।
बम् ही बम् कहाँ खुश हो तो हम बम सिवा कुछ और न गावे।
जैसो बावरो देव मिल्यो है बावरे तैसे पुजारी कहावें।
मुफ्त मे ही शकर को वाहन देखो इन्हे कछु लाज न आवे।
अपने लक्षण छूटे नही जैसे आप मे तैसे उनमे बतावे।
नृपमान कहे रे रे दूर रहो तुम ऐसो शम्भु हमे नही चावे।
मेरो तो शम्भु बसे मुझ मे कही न्यारो नही अब किनको मनावे ॥

॥ गाना ॥

राग भैरवी । ताल तिताला ॥
दीखे मोय शिव पद मय जग सारो ॥ टेर ॥

भग पिलाय के करते खुश सो नही खुश होवन हारो। भग पिया ही होय खुशी तो देव नही है भिखियारो ॥ १ ॥ शक्ति शिव और शिव ही शक्ति न्यारो प्रपच क्यों धारो ! माया ही ब्रह्म ब्रह्म है माया पलक न होय किनारो ॥ २ ॥

ज्ञान की आग चिलम चित केरी सुलफो अज्ञान को डारो। सोहमफूंक स्वास विन लीवी जरके भस्म भयो सारो ।। ३ ।। जरयो अज्ञान चढ़ी खुद मस्ती मैं ही मिल्यो अब म्हारो। मुझ स्वरूप सकल जग दीस्यो यही है शिव पद प्यारो ।।४।। विचार विवेक आक दोय पीया पहिले लगत मोहे खारो। महा भयंकर वैराग धतूरा घोट पी गयो सारो ।।५।। जरणा की भंग पिवी भर लोटा अब उतरे नशो नहीं म्हारो। किन को वर और शाप देऊं किन को सबको मैं ही हूँ आधारो।।६।। भेष धार मत बनो भांड ज्यों जावत काम तुमारो। सर्वज्ञ शिव को त्याग दियो तुम पकड़ लियो एक न्यारो ।। ७ ।। सब में समावे सोई संन्यासी मोय लगे नित प्यारो। है संन्यासी न आसी किसी को हरदम खेले खिलारो ।। ८ ।। धारे स्वांग जाने कहत बहुरुपी प्रगट जहान् में सारो। वो दो दिन के तो यह है ऊमर के एक ही राह तुमारो ।। ९ ।। गृहस्थ संन्यस्त को भेद अड़यो है यही है भरम तुमारो। सम दृष्टि तज चर्मदृष्टि में रह गये ज्यों ज्यों चमारो ।। १० ।। देवनाथ गुरु मिले संन्यासी खोयो भरम हमारो। मानसिंह हूँ शिव पद मांई ऐसो संन्यास उर धारो ।।११।।

श्रीकृष्ण महिमा

।। गाना ।।

राग भूपाली। ताल ध्रुपद ।।

वंदो देव दीन बन्धु स्वतः रूप सोही ।। टेर ।।

निराकार निर्विकार सबके आधार तुम, नेति वेद गात ऐसे सुखकारी ।।१।। पावत नहीं कोऊ पार चारों वेद गये हार, सुर नर मुनि कहे पुकार, ऐसे आप होई ।। २।। कहे राव मानसिंह गुणियन सब भये दंग, हुये देख चित्त व्यंग शामिल न्यारो सोई।।३।।

।। गाना ।।

राग चरचरी। ताल दादरा ।।

मो मन एक अजब खेल देख्यो मैं प्यारी ।।टेर।।

मेरी मैं जान रही औरन से कहत नहीं। कहूँ तो कोई माने नहीं हंसे जगत सारी ।।१।। सभी वन सो वृन्दावन गाँव सब गोकुलारी। सभी शहर मथुरा शहर सभी है बिहारी ।। २ ।। जेती नार कर विचार गोपी ते सारी। जल थल नभ अनल अनिल कृष्ण ही मुरारी ।। ३ ।। देवनाथ कृष्ण आये धर के अवतारी। केते भक्त आगे तारे मान की अब वारी ।।४।।

॥ गाना ॥

राग माड । ताल दादरा ॥

म्हारा श्याम विहारी लागी है तारी न्यारी रही मैं नाय ॥टेर॥

गोकुल माही मथुरा माही रेवे कुब्ज के माय । द्वारापुर में हस्तिनापुर में खाली ठाम न पाय ॥१॥ बदरी माही केदार के माही स्वर्ग के माही कैलाश । काबे माही ने काशी के माही सब में है तुमारो वास ॥२॥ सिंधु के माही वोही ने इंदु के माही रवि के माही प्रकाश । जड़ के माही चेतन के माही वोही ठाकुर वोही दास ॥ ३ ॥ गोपी के माही ने ग्वाल के माही वोही रहे माखण माय । नन्दके माही यशोदा के माही दूध दही दूजो नाँय ॥४॥ यह व्यभिचारी कीनी है ख्वारी दीनी है धूल उडाय । देश का भ्रष्ट कियो इन गुण्डो ने पोल की राह चलाय ॥५॥ शुद्ध बुद्धि को भाव वृन्दावन शुभ इच्छा मथुरा बसाय । शम को गोकुल ने दम की द्वारिका यों कर श्याम मिलाय ॥६॥ करुणा केदार बसे जिनके उर सो क्यो उलटा जाय । ब्रह्म निश्चय को बदरी आश्रम क्यहू नही दुःख पाय ॥७॥ प्रेम को सिन्धु ने वचन को इन्दु ज्ञान को सूर्य उगाय । मूर्धनी देश स्वर्ग निज अपनो दूजो पोल के माय ॥८॥ देवनाथ गुरु कृष्ण मिल्या जद् दियो है भरम उडाय । मान केवे मैं घणा दिन उर यों न्यारो ही न्यारो गाय ॥९॥

॥ आरती ॥

ॐ जय जय हरि देवा, प्रभु जय जय हरिदेवा । अकल अनामी सब घट व्यापक किम विध करूँ सेवा । ॐ जय जय हरिदेवा ॥टेर॥ विश्व अपार पार नही तेरो कहा खोजण जाऊ । कौन शिवाला कौन मस्जिद में हे दरशण पाऊ ॥१॥ है तू अरूप स्वरूप कहू कैसे किम लक्षण लागे । षट् शास्त्र उपनिषद् सगरे वेद कहत थाके ॥२॥ रूप अदेख सकल माही व्यापक मूरख नहीं जाने । फिरत घरो घर दर नित डोलत निज को नही छाने ॥३॥ अष्ट सुगंध विश्व मे जेते है तुमरे माई । पाच तत्त्व और त्रिगुण बीच हो न्यारे किये किम जाई ॥४॥ बाजा विश्व बजत नित ऐसे फिर क्यो कर बजवाऊ । आप घडियाल शंख पुनि आपही किनको सुनवाऊ ॥५॥ देवनाथ गुरु रूप विष्णु को निज अपना कीना । मानसिंह सब मिट गई मैं पन निज को निज चीना ॥६॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह मन में बस्यो मेरे माधव लाल ।
मन वसियो डसियो मोहे ऐसो डस्यो न काल ॥

मानसिंह जहाँ देखिये सब ही गिरधर लाल ।
सब ही गोपी खेल यह देखो काम विशाल ।।

।। कवित्त ।।

नन्द जू को लाल कहें केते कहें ग्वाल उन्हें, केते कहें देवकी वसुदेव हू को जायो है ।
केते कहें गिवरधर कंसा छेदन केते कहें केते कहें लूट लूट माखन दधि खायो है ।
केते कहें गोपिन संग रास रङ्ग कीनो हरि, केते अर्जुन को रथवाही सो बतायो है ।
कहे राव मानसिंह सबको वह और उसके सब, सब में जो समायो ऐसो कृष्ण हम ध्यायो है ।।

।। गान ।।

।।राग भैरवी । ताल दादरा ।।

कृष्ण को स्वरूप रूप जगत है यह सोई ।।टेर।।

हो अजान भूल मान, निजानन्द छोड़ ज्ञान, जोड़ी विषयन से तान प्रेम बेल खोई ।।१।। हतो जाको भूल गया, नहीं ताको दृढ़ लिया, सारासर नहीं विचार किम कर सुख होई ।। २ ।। गावे सदा चारों वेद, जाने नहीं ताको भेद, वेद को करके निषेध भूल नींद सोई ।।३।। देवनाथ पकड़ हाथ, जान लीन जो भुलात, मान को अभिमान खोय ब्रह्मानन्द पोई ।।४।।

।। गान ।।

राग भैरवी—रेखता । ताल कवाली ।।

छवि गोपाल की देखी, निजर नहीं और आती है ।।टेर।।

वेद और ग्रन्थ सब में ही कही है इसी की महिमा । शेष महेश सब थाके कही नहीं आगे जाती है ।।१।। कहते हैं गोपी और गोकुल किया था कृष्ण ने गोकुल क्या किया वश में । कहेंगे हम तो यह न कभी बात नहीं दाय आती है ।।२।। केवल गोपी ही था वश में जग सबही । अभी भी कर रहा वश में धुनि वेदों में आती है ।।३।। कहे नृपमान यों सब से कोई मानो या मत मानो । बताई साफ हमने तो हमें जो दृष्टि आती है ।।५।।

।। सवैया ।।

कौन लखे तुमरी गति को जो वेद विचारो ही कथ के हारो ।
कहीं तो वह अवतार कहे और कहीं ले एक ही एक पुकारो ।
कहीं गोपिन संग नाच नचे कहे कहीं कहे मैं ही नचावन हारो ।
कहीं कहे खुद मैं ही हूं गोपी कहीं कहे मैं हूं कृष्ण पियारो ।

कहीं तो कंस को शत्रु बनावन कही कहे कंस भी रूप हमारो।
कही अर्जन को मित्र बन्यो कहीं बन बैठो रथ हांकन वारो।
कही गुरु बनकर गीता सुनाई आत्म निरूपण कियो जो सारो।
न कोपि पुन न कोपि पाप न कोपि मरता न मारन हारो।
कही कहे हिंसा न करो तुम तेरो तो खेल है अगम अपारो।
नृपमान कहे सब हार गये रिषि मो बपुरो को गणत विचारो॥

॥ गान ॥

राग कालिंगडा। ताल केरवा॥
माधव तुम जानो क्या कहिये॥ टेर॥

एक अनेक अनेक एक तुम ऐसे मिल कर रहिये। अन्तर्यामी इतर क्या तुम ते तुम सर्वज्ञ सही है॥ १॥ कही गोपी कही कृष्ण बने तहा लीला नई नई है। कही पारथ रथवाही बने कही लेखनी लिखन गही है॥ २॥ कही ग्वाल नन्द यशुमति बन गए कहियक माटी खाई है। कहियक चोर भये मक्खन के कहियक योगी कहिये॥ ३॥ कही राम कही रावण भए तुम कही सिया हार दई है। नाना खेल तेरे तू कर ही कहा लग बरणी जई है॥ ४॥ तेरा खेल तू ही तुझ में सब भिन्न छिन्न कछु नही है। मानसिंह लखे जन कोई जो गुरु कृपा भई है॥ ५॥

॥ गान ॥
राग भैरवी। ताल केरवा॥

या ठग को क्या कहू नाम न आवे रे। सब जालो मे जाली अबल को बाधे तो छूट न पावे, या ठग को॥ टेर॥

गूंथे जाल उलझी रहे न्यारो कई पच पच थक जावे रे। नाम नही और अनन्त नाम है रटते पार न पावे॥ १॥ कही गोपी बन रास करे वो कही गोपी मे कान कहावे रे। कही छोटो बन मागन चल दे कही पर दान बटावे॥ २॥ कही एक आत्मा बन ऐसो ब्रह्म उपदेश सुनावे रे। कहीयक खडग त्रिशूल धार कर मार मार कर धावे॥ ३॥ शख चक्र और गदा पद्म धर वीरो मे वीर कहावे रे। कही प्रतिज्ञा शस्त्र न झेलें कही रथ चक्र उठावे॥ ४॥ कही ब्रह्मचारी पतिव्रत को दृढ़ उपदेश दिलावे रे। कही व्यभिचारी सब गोपिन संग वा गति लखियन जावे॥ ५॥ देवनाथ कृष्ण ठग पूरे हम ठग ठगी सी रह जावे रे। मानसिंह ठग के फदे से जो ठग बने छूट जावे॥ ६॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल केरवा ॥

आली इण ठग को नाम न लीजे हे ॥ टेर ॥

जो कोई वर्ण ठगाई उनकी ऊमर सभी जाय छीजे है। सहस्त्र मुखी शेष नित वर्णे तो एक मुख पार किम लीजे ॥ १ ॥ ताते रहो चुपचाप वको मत जो कुछ समझे सो कीजे है। विलगई होन चाहे जो ठगते तो कब हू न विलग रहीजे ॥ २ ॥ कहां वो ग्वाल कहां ब्रजगोपी ऐसी भूल तज दीजे है। समुद्र समुद्रवत इतर कौन कहो ये स्वतः ही तरङ्ग उपजीजे ॥ ३ ॥ माया ब्रह्म ब्रह्म सो माया मिल गलतान रहीजे है। जब तक छिन्न भिन्न तू समझे तब तक ठगन ठगीजे ॥४॥ मिले असल ठग देवनाथ गुरु उन ठग युक्ति दई है हे। मानसिंह हम ठग है ठगन के ठग हू ते ठग ही पतीजे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग टोड़ी जौनपुरी । ताल दीपचन्दी ॥

मोहन वाह वाह रास लिहारो ॥ टेर ॥

रास करे और सब ही नचावे फिर तू रहेवत न्यारो। शामिल आप रास मण्डल में दृष्टि विन देखत सारो ॥ १ ॥ रूप अनेक अनेक नाम है वेद गिनत गिन हारो। आखिर कह्यो नेति कुछ नाहीं है यह खेल अपारो ॥२ ॥ देख रास कई पड़े चक्र में कई मुनि जन मति हारो। कई वेदान्ती सिद्धान्ती फंस गये तू किम कर रहन्यारो ॥ ३ ॥ शिव सनकादि ब्रह्मादि फंस गये फंसे ब्रह्माण्ड जो सारो। मान कहे किम कर मैं निकरूं कौन सो ताप हमारो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

मेरो नाथ जागे सदा काहे को जगाऊँ ॥ टेर ॥

सकल जगत याके माहीं इतर क्या बताऊं। अखिल ब्रह्मांड रूप न्यारो कौन ध्याऊं ॥ १ ॥ छोड़ एक भज अनेक विघ्न क्यों उठाऊं। नाथ रूप चर अचर है दूजो क्यों उपाऊं ॥ २ ॥ नहीं मात नहीं तात कलंक क्यों लगाऊं। नाथ नाथ साथ सकल नाथ मैं समाऊं ॥ ३ ॥ कौन नन्द कौन ग्वाल गोपी कहा नचाऊं। कौन यशोदा मैया काको दधि खिलाऊं ॥ ४ ॥ देवनाथ साथ सकल परिपक्व पाऊं। मान रूप सकल नाथ आऊं ना जाऊं ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल कैरवा ।

हरदम जागे लाल हमारो, उसको क्या तू जगावे रे ॥ टेर ॥

अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप रह्यो है उसे जगावण धावे रे । सब की नींद तो वो ही उडावे उसकी तू क्या उडावे रे ॥ १ ॥ अपनी नींद तो उडे जो नाही मोह निश दिन छावे रे । तीन लोक पति सदा जागता उसको क्या तू जगावे रे ॥ २ ॥ कान यशोदा कोन राधिका क्या कोई प्रेम बधावे रे ॥ सब में वो है सभी उसीमें नहीं आवे नहीं जावे रे ॥ ३ ॥ जो वो सूता तो अब क्या जागे क्या तू शङ्ख बजावे रे । तीन लोक की सुने नहीं तो उसको कौन सुनावे रे ॥ ४ ॥ अपनी नींद उडाय परी तो स्वत ही श्याम मिल जावे रे । मानसिंह सब भरम तोड के क्यों नही रूप समावे रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

ढूंढ ढूंढ हम हारे सन्तो चोर निजर नहीं आवे रे ॥ टेर ॥

चोरी करे पता नहीं देवे लूट लूट धन खावे रे । गजबी चोर गजब यह कहिये चोरी कर छिप जावे रे ॥ १ ॥ कई निर्गुण कई सर्गुण कोई कईयक नाम बनावे रे । कई चौबीस अवतार कहत हैं कई दस में मिल जावे रे ॥ २ ॥ कही पर ईश कही पर माया कही पर जीव कहावे रे । कही प्रकृति पुरुष बन बैठा यह गति लखी न जावे रे ॥ ३ ॥ कही देवकी वसुदेव को जायो कही नन्दलाल बनावे रे । कही पर सखा बने अर्जुन के निज निरलेप सुनावे रे ॥ ४ ॥ कही गोपी सग रास रचावत कही पर गेंद चुरावे रे । कही पर खडे मारे रावण कही बेर शबरी के खावे रे ॥ ५ ॥ यों ढूंढे तो पता न लागे ढूंढ ढूंढ थक जावे रे । देवनाथ कहे मानसिंह सुन खोजी में जाय समावे रे ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

कृष्ण ही कृष्ण को नाम रटे सब नाम रटे सकट नही जावे ।
सकट तो जावे जब ही जो कृष्ण को पद ताको अर्थ लखावे ।
कृष्ण के पद को अर्थ विचारे तो कृष्ण स्वरूप में जाय समावे ।
कृष्ण ही कृष्ण रटो ऊमर भर यू नाम रट्या नही पार लगावे ।
जो नाम रटे और अर्थ विचारे तो शुद्ध स्वरूप होय सोय समावे ।
नृप मान कहे या कृष्ण के अर्थ को शीश धरे सिर सट्टे पावे ॥

॥ सवैया ॥

केते बने जो वैष्णव यूं जल छान ही छान के ऊमर गमावे ।
चौके में च्यारूं पण डूबा इण चौके में कछु हाथ न आवे ।
चौके बिच कई चीटी मरे उनको उलटो शिर पाप चढ़ावे ।
गयो तो हतो भवसागर तिरने उलटी अपनी ही जहाज डुबावे ।
छूत ही छूत करी ऊमर भर थातो छूत कदे नहीं जावे ।
छूत में जनम्यो मरसी छूत में यह वैष्णव पणो तेरो काम न आवे ।
है तू हमेशा शुद्ध उसे जो जान लहे सब छूत मिटावे ।
जानूं मैं सच्चो वैष्णव तब ही तू खुद विष्णु में मिल जावे ।
नृप मान को जान पड़ी अब ही इन पोल के वैष्णव पन न फसावें ।
मेरा तो विष्णु मैं ही हूँ सब दूजो है कौन सो इष्ट उठावें ।

॥ दोहा ॥

जगत है नाम शरीर को, अन्तर करे प्रतिपाल ।
मानसिंह निश्चय रहे, वो सब में गोपाल ॥

॥ सवैया ॥

जगत् सबे यों गेली भई ब्रज के गुण्डन ने गोल मचाई ।
आप ही पुरुष बने बन बैठे जग को सब इन नारी बनाई ।
सीधे ही अर्थ किये इन उलटे देखो इनकी बुद्धि भंग जो खाई ।
गोपाल रहे सब के भीतर उनको तो मूढ़ यह जानत नाँई ।
जो गोपाल को चीनत है तो वह है गोपी के सदृश भाई ।
नृपमान कहे "गो-पीय" हट्यो फिर गोपिन को कोऊ पूछत नाँई ॥

॥ सवैया ॥

वेद तो बाल यति यों कहवत शंकर ने यह मन्त्र सुनायो ।
दुर्वासा भी कह्यो प्रगटे ब्रज वनिता है बाल यति जो बतायो ।
ब्रजराज कही अपने मुख से ब्रज गोपी को पतिव्रता नाम दिरायो ।
नृपमान कहे इस भारत को व्यभिचारिन ने बेड़ा जो डुबायो ॥

॥ सवैया ॥

वे ख्याल पड़े कई जीव विचारे जिनको यह उपदेश सुनावो ।
कृष्ण के पन्थ को जाने नहीं उन पै तुमरो पन्थ जाय जमावो ।

योगिन के महायोगी हरि और योगिन को भी इष्ट कहावो।
नेति नेति निगम कह्यो यो गीता में हरि आप सुनावो।
मैं भूतन में भूत है मो में द्रष्टा दृष्य जो एक बनावो।
ज्ञान अज्ञान विज्ञान न ध्याना चारों ही एक में एक रहावो।
नृपमान कहे जो एक हुनो वो एकहि मो में आन समावो।
लम्पट जावो परे जावो यह व्यभिचार को मन्त्र हमें न सुनावो॥

॥ कवित्त ॥

रास हू विलास करत धरत स्वांग हरि को नित भेद हू न जाने कैसे हरि बन आये है। ललिता की लली इन नन्दजी को लाल बनत, बडा से न चूके कैसी नकल जो बनाये है। कहत जात राधे हू को वेद की श्रुति है यह, कर विषय रस नाना विधि ते बनाये हैं। वाको कहत पूर्ण ब्रह्म कृष्ण चन्द्र सदाई है, तो काहे को स्वांग व्यभिचार को सजाये हैं। गीता जब खोजत तो और ही और मिलत, योगिन के महायोगी कृष्ण सो कहाये हैं। कहे राव मानसिंह गीता में कही सत, कामी ये कूकर सो काम को बढाये हैं॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती। ताल दादरा॥

देखो इण जगत बीच फैल क्या मचायो॥ टेर॥

कोई क्षत्री ग्वाल कोई मन आयो गायो। देवकी और यशोदा को सुत किन्ही बनायो॥ १॥ कोई कहत माखन चोर रास इण रचायो। पूतना और कंस आदि मारके गिरायो॥ २॥ कालयवन आगे कहे भाग के सिधायो। कही शिशुपाल हू से युद्ध विजय पायो॥ ३॥ अर्जुन रथ हांके कही चक्र ले उठायो। थाली को कही चक्कीन दैत्य सिर उडायो॥ ४॥ वही देव वही दैत्य एकसो समायो। है जिनको भूल गये नकल नकल गायो॥ ५॥ नहीं बाल नहीं जवान वृद्ध ना कहायो। सभी खेल उन्हीं के हैं उन्ही खेल खेलायो॥ ६॥ देवनाथ पकड हाथ साक्षी समझायो। मान वीर भयो धीर निश्चय कर ध्यायो॥७॥

॥ सवैया ॥

रास विलास करे सगरे यह रास कहा इनको नहीं जाने।
रास ही रास में आन लगी ये अर्थ को जो अनर्थ लगाने।
पूर्ण ब्रह्म परमात्म कहे उनको भी देखो कलंक लगाने।
नृपमान कहे यह जुल्म बडो ये चुगल हरि में भी नांय चुकाने॥

॥ सवैया ॥

रास के रंग में ढंग करे कई नाना विधि को रास रचावें।
सच्चिदानन्द कहे जिनको उनको ही देखो व्यभिचारी बतावें।
एक नहीं जिनके मुख है इनके दस पाँच जो मुख कहावें।
याही मुखते तो योगी कहें याही मुख ते भोगी कह जावें।
इन मर्दो ते नारी भली जो यों कह कर यों ना बदलावें।
नृपमान कहे यह जुल्म बड़ो दो बात करें जाकी हाँसी आवे॥

॥ सवैया ॥

जिनके हरि भाव हुतो मन में इन लम्पट और ही और लगायो।
हरि भाव को तोड़ के दूर कियो इन जोड़ पति को भाव दिखायो।
स्वप्ने न भाव पति को हतो जगदीश बरोबर कर उन ध्यायो।
व्यभिचारी आचार बिगाड़ दियो आचार बदल व्यभिचार चलायो।
कृष्ण जिते तो योगी किते देखो भारत को जिन मान बढ़ायो।
नृपमान कहे लानत है उनको जिन पूर्ण ब्रह्म को नाम डुबायो॥

॥ सवैया ॥

एक समय घनश्याम प्रभु वंसी को बाहर भूल के आये;
वृषभानु लली वंसी ले आवत दर्शन करन दिल में अति चाये।
आय कह्यो मनमोहन से प्रभु कहाँ तुम वंसी भूल के आये।
हंस दीनदयाल गोपाल कहें यह वंसी कहा तू अंगूठी चुराये।
गई तो हती साहूकार बनन को उलटो चोरी इलजाम लगाये।
वृषभानु लली हिय में डरपी क्या उलटे सीधे बोल सुनाये।
जीव हमेशा कृष्ण स्वरूपी निज सोहं श्वास वंसी विसराये।
वृत्ती खोज कियो वंसी को सत्गुरुदेव को आन दिखाये।
गुरुदेव कहें क्यों भूली तू बावरी निज रूप अंगूठी को विसराये।
वंसी अंगूठी की चोर है तू एक ही लाय सो दो ही लाये।
है वंसी यह श्वास तेरो इसको तो तुम लखने नहीं पाये।
अब रूप अंगूठी लख जल्दी दोनों जो लखे फिर संशय मिटाये।
नृपमान कहे ऐसे कृष्ण और गोपी को प्रेम प्रबल छल भाव दिखाये।
लानत है निर्लज्जन की जिन कृष्ण ही भाव को नाम डूबाये॥

॥ चौपाई ॥

एक समय गिरधर चलि आये । बाल बोध क्रीडा दरसाये ॥
चुपके उतर गये घर माही । कोठी को खोल बिराजे वाही ॥
गूजरि हमी करे अब आयो । पकड्यो कृष्ण काठी पकडायो ॥
भागी मात यशमति पे आई । देख माई तेरो कँवर कन्हाई ॥
नित नित हमको झूठी बतावे । देख लाल तेरो चोर कहावे ॥
सुनत यशोदा दौड उठ धाई । ले अपने कर लकुटी उठाई ॥
यशुमति को अपने घर लाई । गूजरि अति मन में हरषाई ॥
चातुर अति करत चतुराई । दे पट ओट किवाडी खोलाई ॥
काढ्यो बाहर यह बैन सुनायो । बहुत दिवस मेरो माखन खायो ॥
पकर श्याम का हाथ झलायो । और हुतो ते अबर बन आयो ॥

॥ दोहा ॥

शीश सफेदी धार ली, बने जो बूढे आप ।
पति बन्यो निज गोपि को, देखत भई कलाप ॥

देखत रूप कृष्ण को ऐसो गोपी हा हा कर चिल्लाई ।
मात यशोदा ने गारी दिवी कम नारी निठुर तो को लाज न आई ।
मेरे कृष्ण को कलंक लगावत अपने पति को पकड के लाई ।
है तो हमी अब कूटूं तो ये पर जान बउहारी लाज रखाई ।
शर्मिंद भई गुजरी मन मे मलमल के हाथ बहुत पछताई ।
बात तो हाथ से निकल गई अब निकल गई सो फेर न आई ।
जाय के पहुँची घर मे अपने तब और ही और लीला जो दिखाई ।
आगे कृष्ण को खडो वहा देखके गुजरी मन अति ही शरमाई ।
कहन लगे पकड्यो नही हमको पकड्यो हतो पर दीन छुडाई ।
पहिले तो नन्द को लाल हुतो ले उलगो भल अब तेरे आई ।
पहिले मान जो जान तु गुजरी तो काहे रो पति को रूप धराई ।
तैने कियो जैसो मैंने कियो या मे मारू दोष न दीजे कदाई ॥

॥ दोहा ॥

वृत्ती है जो गोपिका, जीव ही कृष्ण महान ।
सतगुरु बनी जो यशुमति, या विधि मेल मिलान ॥

॥ चौपाई ॥

जितने पदारथ माखण भाई । देह कोठी मांहि बड़ बड़ खाई ॥
निपट चोर कह्यो नहीं माने । अपणो नहीं जाको अपणो जाने ॥

॥ दोहा ॥

वृत्ती कह्यो सत्गुरु ताई, माखण लूट के खाय ।
सत्गुरु पकड़यो हाथ तब, अबर ही अबर बनाय ॥
जीव मान छोटो बन्यो, अब कीन अविद्या दूर ।
वृद्ध ब्रह्म को रूप होय यों, झिलमिल झिलकत नूर ॥
बाहिर मुख वृत्ती मिटी, अन्तर मुख पर आय ।
हा हा कार कहने लगी, मैं लीनो जुलम कमाय ॥
तुरीये पद की अवस्था, सोही वृद्ध पन जान ।
अब नीचे पेड़ी उतर कर, कहन लगे यूं मान ॥
जो तूं पहिले मानती तो, काहे को पति बनाय ।
बहुत भुलायो मोय को, अब मैं भूलूं नांय ॥

॥ सवैया ॥

माटी को खान लगे जब माधव कोउ ने जाय के वैन सुनायो ।
लाल तुमारो जो माटी खावत बरजत हम बरज्यो न रहायो ।
मात यशोदा दौड़ी तबै हरि ने ले माटी को डलो उठायो ।
मेल लियो अपने मुख में यशोदा के मन अति क्रोध जो आयो ।
मात यशोदा लिवी लकुटी लकुटी ले उसने श्याम डरायो ।
खावत माटी सूझी तुम्हें क्या पेट में हाऊ होत जगायो ।
खूब दिखायो जब डर हरि को खोल के अपनो मुख जो बतायो।
विश्व अनन्त दिखाय दियो मैया कौन सो हाऊ कहाँ को समायो ।
देखत श्याम की यह चतुराई मात यशोदा के मन डर आयो ।
मैं तो जानत यह लाल मेरो पर यह तो कोई और ही और दिखायो ।
एरी मैया क्यो न हाऊ बतावत मेरे तो हाऊ निजर नहीं आयो ।
एते तो हाऊ दिखाय दियो फिर तेरो वो हाऊ कहाँ पै छिपायो ।
नृप मान कहे वो तो हाऊ को हाऊ उन आगे जो कौन सो हाऊ रहायो ।
हा हू करो मत छोड़ो सभी तुम कृष्ण से हाऊ में जगत समायो ॥

॥ सवैया ॥

मात यशोदा तो चकित भई और भूल गई कि यह अपनो ही जायो ।
ब्रह्मांड अखण्ड को देख्यो जबै वाको गिण न सकी मन अति घबरायो ।
मानो ही सिन्धु मिले पर्वत और नव कुली नाग जो उनमें समायो ।
जलचर थलचर नभचर सबको देखत देखत होश भुलायो ।
त्राहि त्राहि कियो मुख ते यशोदा के मुख से कछु और न आयो ।
मान कहे ऐसे विश्व विधाता है कृष्ण समान कोऊ नहीं पायो ॥

॥ सवैया ॥

रूप विराट को देख्यो यशोदा तो पुत्र के भाव को दूर भगायो ।
हाक भई सगरे ब्रज में जब लों सब लोग जो देखन आयो ।
माया निवेड लई छिन में फिर बाल गोपाल सो रूप बनायो ।
उन बात को भूल गये सगरे हरि बार दोय यह रूप दिखायो ।
एक यशोदा दूजो अर्जुन को तब भी न जगत को भरम मिटायो ।
बालक जवान कहने लगे यो केतेक माखन चोर बतायो ।
जाने नही हरि की यह महिमा मन में देखो अति भरम भरायो ।
नृप मान कहे मोय ऐसो न भावत कृष्ण मिले मव बीच मसायो ॥

॥ सवैया ॥

जुल्म की बात कहे सगरे हरि ने गोपिन संग भोग भोगायो ।
देखो कलियुग बहुत कहर पर ऐसो अनर्थ या में नही पायो ।
अष्ट वर्ष के तो कृष्ण हुते गोपिन संग कैसे भोग भोगायो ।
कहाँ तो आठ और कहाँ जो पन्द्रह कैसे कहो कर जोड मिलायो ।
अष्ट वर्ष तक दुग्ध के दान्त है कहा समझे ?ै भिचार कहा गायो ।
नृपमान कहे मैं तो मानूं नही यह तो लम्पटियो ने सब जाल फैलायो ॥

॥ सवैया ॥

महा बलिष्ठ जो काम किये हरि ऐसे तो कोई करके दिखावो ।
बँशी में विश्व को मोह लियो ऐसो और तो मोह के मोहि बनावो ।
उठाय लियो जिन गोवर्धन कोई एक शिला तो उठाय दिखावो ।
जेती गोपी तेते कृष्ण भये कोई एक ते दूजो होय बनावो ।
अर्जुन को गीता जो कही सगरे उपनिषदो को सार सुनावो ।
एक ही सूत्र को अर्थ करो कोई पीछे तो कृष्ण बराबर कहावो ।

लम्पट लोग डुबाओ मती परब्रह्म जो उनकी न नकल उटावो ।
धर्मी विधर्मी हंसे तुमको नाहक तुर्कों को नांहि हंसावो ।
नृपमान कहे चली पोल घणा दिन अब तो पोल को दूर हटावो ।
पोल के ढोल को फोड़ देवो गीता के अर्थ को न रीता गमावो ।।

।। गान ।।

राग लूहर सारंगा ताल कैरवा।।

मिल्लो मन मतिया मत खोलो । कहाँ तो कृष्ण कहाँ मति अपनी
मन आई मत ठेलो ।। टेर ।।

कृष्ण की होड करे क्यूं गैला कियाँ सूं फोड़ो पड़ेलो ।। १ ।।
कृष्ण उठायो गोवर्धन पर्वत एक शिला तो कोई झेलो ।। २ ।।
काली नाग कृष्ण ने नाथ्यो तू तो नाग सुत देख डरेलो ।। ३ ।।
केवे मानसिंह अजहू समझले नहीं तो काको ही खबर करेलो ।।४।।

।। सवैया ।।

नन्द को लाल कहें सब ही पर कहा अर्थ याको एक न जाने ।
अर्थ को जान स्पष्ट करें तो मुक्ति को मारग मिले जो प्रमाने ।
"नन्द" के पहले "आ" लगावे कहो फिर इनको कहा बनाने ।
लाल तो हर दम लाल ही है यह गुप्त नहीं है प्रगट प्रमाने ।
"को" को तोड़ के दूर करो आनन्द लाल के कौन समाने ।
नृप मान की तान जुड़ी उनसे अब और को लाल नहीं मनमाने ।।

।। सवैया ।।

नन्द को गांव सभी जग ढूंढ़े आनन्द के गाँव कोई नहीं आवे ।
एक ही बार आनन्द के गांव में आवे तो फिर लौट न जावे ।
आनन्द को गांव तो दूर रह्यो यह तो नन्द ही नन्द में यों मर जावे ।
नृप मान कहे आनन्द लखे तो जन्म जन्म के पाप भगावे ।।

।। सवैया ।।

बाजी ही बाजी कहे सगरे पर बाजी कहा इनको नहीं जाने ।
बाजी बाजी तो कहत थके बाजी एक बांस की वंसी बताने ।
एक ही बांस की बांसुरी पै देखो यह लोग क्या हुए दिवाने ।
आदि अनादि ते बाज रही इनको जग मूढ़ कोई नहीं मानें ।

वो तो थो दश अंगुल की यह साढे तीन जो हाथ बखाने।
नाना विधि तें बोल रही यह ना बोलत बोल नही कहूँ छाने।
वो ही तो बसी और वो ही बजावे वो ही सुने अपनी ले ताने।
नृप मान कहे कृष्ण मेरे में ही हूँ मोते बिलग नही आन न जाने॥

॥ गान ॥

राग बरवा । ताल कैरवा॥

क्या सोवत ललित दुलारी । मन मोहन तेरे पास
बसत हैं रही गफलत में न्यारी ॥ टेर ॥

जो गिरधर से मिलनो हो तो गफलत दूर हटा री। गफलत बीच रतन क्यो खोवत मन मे तू कुछ शरमारी ॥ १ ॥ वृत्ती नार श्याम सब भीतर मन को भरम गमारी। देवनाथ गुरु मिले मान को परसत सहज समारी ॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

एक जो जबान होत वे एक ही बात करत, कितनी जबानें कुछ कहते ही जाते है। कभी तो कहे कृष्ण सर्वज्ञ स्वामी नित, कभी कृष्ण लीलाधारी करता बताते है। कभी कहे कृष्ण सर्व-आत्मा रूप है, कभी आय मन मे योग मे ले जाते है। कभी कहे कृष्ण वीर बहादुर मे नाम था कभी कृष्ण हू को ये त्यागी बतलाते हैं। अपनी ही अपनी सब खैंच, खैंच जाते है, कहा कृष्ण है सो न साफ समझाते है। इसके अनुसार तो पड़त भ्रम कूप बीच, ऐसे जाय पड़त फिर ऊँचे हू न आते है। भ्रम कूप डार ऊपर पथ हूँ की देते शिला, लाखो ही जीव ऐसी तरह ही डुबाते है। कहे मान मैं तो ऐसे न मानूं अब, मेरो ही स्वरूप सब खेल यह रचाते है,॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी डके की । ताल कैरवा ॥

बहुत दिवस तक कृष्ण बिना मैं रही दुहेली रे, मिली अब
आज सहेली ॥ टेर ॥

कोई काशी मथुरा भटकाय । कोई कहे जल जमुना बिच न्हाय। कर रहे हाहाकार मैं तो यूं रही अकेली रे ॥ १ ॥ कोई कहे हरि बृन्दावन माँय। कोई कहे गोपी घर माय। भरम भरम मे भूल गई मैं तो अलबेली रे ॥ २ ॥ ये सब फन्द दूर छिटकाय। बैठ गई निज घर के माय। हुई बहुत हैरान फन्द बिच हो गई गैली रे ॥३॥ घर बैठे प्रीतम लियो पाय। देवनाथ दीवी समझाय। मान गयो दुःख आयो अति सुख बनी नवेली रे ॥४॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी डंके की । ताल कैरवा ॥

चलो सखी उण देश जहाँ निज कृष्ण हमारो रे,
लगे सगरो जग खारो ॥ टेर ॥

रहो चेतन निद्रा मत सोय। गाफल नींद दूणो दुःख होय। धरदे मान गुमान रूप निज अपनो निहारो रे ॥१॥ मन की दुरमत दूर हटाय। मन सो पलट निज मनकर लाय। प्रकट होय दीदार मिटे भ्रम को अंधियारो रे ॥ २ ॥ हरि विन फीको लागत मोय। हरि मिलियाँ सहजे सुख होय। भ्रम तम गयो जब दूर निरख सुखी भयो बन म्हारो रे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरुदेव हमारे। उनसे रात दिन अरज गुजारे। मानसिंह कहे तारो नाथ मैं दास तुम्हारो रे ॥४॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी डंके की । ताल कैरवा ।

अमर निज पिया हमारो। एक पलक नहीं रहेवत न्यारो॥ आठ पहर नित रहे पास ओ लागे प्यारो रे; अमर निज पिया हमारो ॥ टेर ॥ जसुमति जायो न जन्म धरायो। ना कोई देवकी गर्भ में आयो। सभी विश्व में खेल रह्यो है खेल अपारो रे (अमर निज पिया हमारो) ॥१॥ गाय न चराई न माखन खायो। नहीं ग्वालन संग खेल रचायो। सब कुछ करे और रहत अकरता चातुर प्यारो रे ॥२॥ नहीं गोपिन संग रास रचायो। नहीं किसको दधि लूट के खायो। एक अनेक अनेक एक यूं सिरजन हारो रे ॥३॥ नहीं अर्जुन के थे रथवाय। अर्जुन भी वहाँ दरसे नाँय। कृष्ण कृष्ण के रूप मांय जग मिल गयो सारो रे ॥४॥ कौन कंस को मारण धाय। शत्रु मित्र जहाँ दीखे नाँय। रात दिवस यह करम जगत को चले खूवारो रे ॥५॥ कालयवन मूं भाग्यो नाँय। कौन कनकपुरी रहे जो जाय। जड़ चेतन जहाँ देखूं वहाँ वो रह्यो न न्यारो रे ॥६॥ ना कोई रुक्मिणि लायो जाय। नहीं शिशुपाल को मार हटाय। करम क्रिया से जुदो रहे ओ खेल खिलारो रे ॥७॥ कुरु पाण्डव मार्‌या नहीं कोय। पाप पुन फिर किनको होय। आप रचायो जगत् आप ही मेटन हारो रे ॥८॥ कई राम कई कृष्ण जो होय। दृष्टि धर देखूं तो नहीं कोय। जहाँ देखूं जहाँ एक अखिल है रूप हमारो रे ॥९॥ देवनाथ गुरु मिले निर्वाण। जिन दीनी साची पहिचान। मान उड़्यो अभिमान भरम तम भागो सारो रे ॥१०॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी इके की । ताल कैरवा ॥

प्रेम पियाला पियो पीवत तुम मत छक जावो रे,
हर्ष से हरि गुण गावो ॥ टेर ॥

मनुष्य जन्म नहीं बारम्बार । लख चौरासी को मुख द्वार । इनको लघ अगाडी कोई मत तुम जावो रे (हर्ष से हरि गुण गावो) ॥ १ ॥ रामचद्र से महा गुणवान । मुनि वशिष्ट से महा विद्वान । सो भी गुणीजन मनुष्य जन्म को खूब सरावो रे ॥ २ ॥ बडे बडे जन सन्त महान् मनुष्य जन्म की करी सरान् । फिट फिट रे नादान रतन तुम मुफत गमावो रे ॥३॥ रतन पदारथ आयो हाथ । कर लो सत् पुरुषा रो साथ । मन को भरम मिटाय रूप निज में मिल जावो रे ॥४॥ मनुष्य जन्म को ये ही लाभ । निज स्वरूप को लखा लो आप । ताप मिटे तिरगुण को जब तुम सब सुख पावो रे ॥५॥ हरि तुम मे अन्तर नही कोय । हरि रूप यह विश्व है सोय । जीव जीव मत बको जगत् को भरम मिटावो रे ॥६॥ नाथ जलन्धर गुरु सुजान । देवनाथ गुरु दिवी पहिचान । मान भयो अब महान् होय निज तत्व दरसावो रे ॥७॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी रसिये की । ताल दीपचदी ॥
खेल रही यो राधे गोरी ॥टेर॥

सग की सहेली नवेली बिच राधे । श्याम गले धर कर बरजोरी ॥ १ ॥ चैत को मास बसन्त फूल रितु । कर रही कोकिल मधुर किलकोरी ॥ २ ॥ बिच बिच सखिन के चलत यूं श्यामा । गोर श्याम की सुन्दर कैसी जोडी ॥३॥ तीनूं ग्वाल भया अब सीधा । तन-मुख, मन-मुख, करम-मुख की टोली ॥ ४ ॥ मानसिंह कहे सुण म्हारी सुरता । छोड देवो अब पिछली चोरी ॥५ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी रसिये की । ताल दीपचदी ॥
कौन गुना मोय त्यागी सांवरा ॥ टेर ॥

क्या मैं आपसे नाथ लडी थी । क्या मैं तुमसे हठ लागी रे सांवरा ॥ १ ॥ बिच जङ्गल म्हारे पास न कोई । रही अकेली डर लागी रे सांवरा ॥ २॥ क्या मैं हाजरी मे हाजिर न रही थी । जब बतलाई जब जागी रे सांवरा ॥ ३ ॥मान कहे गुरुदेव कृपा करो । अपनी जाण कर मत त्यागी रे सांवरा ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग लहर सारंग । ताल कैरवा ॥

म्हारे गिरधर वेण बजाई रे, आधीरे माँहे गिरधर वेण बजाई ॥ टेर ॥ सुनते ही वेण जागी सकल हम । तन मन की सुधि बिसराई रे ॥ १ ॥ ज्यों की त्यों हम उठ कर चाली । म्हारी भरी नींद उचकाई रे ॥ २ ॥ जाग्रत उड़ीने म्हारी सुपन ही उड़ गई । सुषुपति पार पहुँचाई रे ॥ ३ ॥ सुषुपति तुरिया मध आधी रैन गई । उठे होय चित चम्पत धाई रे ॥ ६ ॥ जाग्रत न चहिये म्हारे सुपन न सुषुपति । मैं तो तुरिया कदेई छिटकाई रे ॥ ५ ॥ चारूँ में रहत चारूँ सूँ न्यारो । मैं तो उण सूँ सैन मिलाई रे ॥ ७ ॥ देवनाथ गुरु साक्षी हजूर नित । मान रहे उण मांई रे ॥ ८ ॥

गुरु महिमा

॥ दोहा ॥

नाथ चरण नित वंदना, जिन मोहे कीन सनाथ ।
मान नाथ प्रताप ते, सभी दुःख मिट जात ॥
नाथ चरण भूलूँ नहीं, रात दिवस मोहे भाय ।
नाथ चरण में सुख मिल्यो, दुःख फिर आवे काय ॥

॥छप्पय ॥

सद्गुरु मिले दयाल भरम की गाँठ वहाई । परस्यो पद निर्वाण छाण कर अमी जो पाई । गुण गाऊँ दिन रात नहीं मैं भूलूँ कदाई । ज्ञान की ताल बजाय पोल की चिड़ी उड़ाई । कहे मरुधर पति मान भरम में झूलूँ नाहीं । निज तत्त्व ओलख्यो माँय अबे मुख बोलूं नाहीं ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल रूपक ॥

आज है धन भाग सजनी भलो ऊगो सूर ।
जीव रा गुरु ब्रह्म कीना भेटिया निज नूर ॥ टेर ॥

नाथ म्हारे घर आविया जद बज्यो अनहद तूर । पाँच ने पचीस डरिया हुवा चकनाचूर ॥१॥ चौरासी चौरासी करताँ पायो दुःख मजबूर । गुरु पद ने परसिया अब भरम भागो दूर ॥२ ॥ एक अनेक अनेक एको मिटी दूजी कूर । भेड़ ज्यांरा सिंह दरस्या उड़ी भरम की धूर ॥३॥ नाथ आया सुख पाया कही सो मंजूर ॥ मान कहे गुण नाथ भूलूं भयो पूरम पूर ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

जाने बिन चाले बहुत चाल चाल थाक गये, बिना सतगुरु कोऊ पंथ न बतायो है। ऊजड और मार्ग की खबर नाय पाई कछु, चालत ही रह्यो जैसे अपनो मन चायो है। महा बीगन जगल बीच जाय ऐसे पड़यो, जहाँ भटकट भटकत मन बहुत दु ख पायो है। और नही सहायक जहाँ सदगुरु आय मिले वहा, ज्ञान की चिमट ले अचानक चखायो है। रेरे बेहोश जाग नींद में मत माग लाग, भरम कूप मांय आगे डूब के पगयो हैं। कहे राव मानसिंह जागत ही चेतो हुवो, छोड दियो ऊजड माग माग सीधे आयो है।

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल रूपक ॥

जोगी रेवो सतगुरु दास, गुरु थाने देवे ब्रह्म प्रकाश ॥ टेर ॥

बिना पर बिन अधर उडणी रहणी अधर आकाश । देव विधि सूँदेव भखणो जद मिटेला फास ॥ १ ॥ बिना मुख बिन बोल वाणी जीवणी बिन श्वास । बिना नेणा देख सब कुछ जद मिटेला त्रास ॥ २ ॥ बिना कानाँ पैर मुद्रा वस्त्र बिना सन्यास । बिना खेचरी पियो अमृत सोई सूर श्यावास ॥ ३ ॥ देवनाथ पकड़यो हाथ उठे जान कौन विनाश । मान मिल गयो महाल् में अब करके कुल को नाश ॥४॥

॥ सवैया ॥

जा गुरुदेव के दरस किये तब टूट गई चित की अविद्याई ।
आतम तत्त्व दिखाय दियो जिन शुद्ध स्वरूप की याद दिलाई ।
भूल गयो बहुत ही दिनते अब आन अचानक दीन जगाई ।
ते गुरुदेव को भूलत नाही जन्म अनेक की नीद उडाई ।
नृप मान कहे गये नही आये भूल हती ते दूर भगाई ॥

॥ गान ॥

राग देश । ताल दीपचन्दी ॥

मैया सतगुरु ऐसा मोय कीना ए ।
गया न आया भटक्या नही बाहर निज माँहे भीना ए ॥ टेर ॥
वन में गया नही खाख लगाई मैं भगवाँ न कीना ए । मेहरम खोज महबूब पाब्रिया आतम रंग भीना ए ॥ १ ॥ माँग न खायो फिरी नही झोली फिर भी रंगे ना ए । सब कुछ कियो अकरता रहे हम सहजे सुख लीना ए ॥ २ ॥ नही त्यागी

संन्यासी भयो मैं अमी रस पीना ए । मन से सर्व नाश कर डाला भस्म कर दीना ए ।। ३ ।। करता करम अकृत होय रहेऊं प्रेम रस पीना ए । वाचक ब्रह्म वचन नहीं भाखूं बण न मत हीना ए ।। ४ ।। हूँ सो हूँ मैं नित्य विभु व्यापक चातुर परवीना ए । मानसिंह गुरुदेव कृपा से यह मत चीना ए ।। ५ ।।

।। गान ।।

राग सारंग । ताल कैरवा ।।

सद्गुरु सहज बतायो । जब रतन हाथ में आयो ।। टेर ।।

मन ममता को दूर हटाई ज्ञान भान दरसायो रे । अपणो रूप आप में परख्यो दूजो हतो मिटायो ।। १ ।। मुझ में जगत् जगत् में मैं हूँ यह स्वरूप समझायो रे । मिथ्या भरम मान कर बैठो तन अभिमान गिरायो ।। २ ।। सत संगत अमृत रस पायो पीवत खूब छकायो रे । अनन्त छक्यो जब सोय गयो फिर जग्यो फेर भर पायो ।।३।। नाथ जलन्धर प्रताप भयो जद सन्त शरणागत आयो रे । देवनाथ गुरु मानसिंह के भ्रम तम दूर भगायो ।। ४ ।।

।। सवैया ।।

और कलारी मिली सगरी जिन गंदो ही गंदो शराब पिलायो ।
असल कलार मिले गुरु अब ही जिन शुद्ध करके यह मद पायो ।
गंदे शराब में जूते चखे नित जाय के कीच तै मुख लपटायो ।
असली मद गुरु द्वारा पियो जिसे पीते ही चकचूर बनायो ।
लानत है ऐसे मरदों को जिन गंदे शराब से प्रेम बढ़ायो ।
देव सी योनि मिली मानुष तन देव ही होय के श्वान कहायो ।
मान कहे अब मानो रे यारो साफ केयो जैसो मद मैं चढ़ायो ।
देवनाथ कृपा करके बचाय लियो जात जन्म डुबायो ।।

।। गान ।।

राग सारंग । ताल कैरवा ।।

सतगुरु को कृष्ण कर जानूं । अब दूजा नाँय पिछानूं ।। टेर ।।

करणी केसर शील को चन्दन प्रेम को पानी आनूं । सूरत शिला पर खूब घिसाऊं लेकर तिलक चढानूं ।।१ ।। भाव को भोजन प्रीति को पानी ध्यान को धूप लगाऊं । सूरत निरत दोऊं भरत हाजरी स्वास को पवन ढुलाऊं ।। २ ।। कृष्ण शब्द को अर्थ बताऊं सबसे कहूं प्रमानूं । पाँच पचीस को कृष कर डारे सोई

कृष्ण सत् मानूं ॥ ३ ॥ नाथ जलन्धर दादा गुरु मेरे जिनसे यह युक्ति जानूं। देवनाथ गुरु मिले अविनाशी कहे मान यश ठानूं ॥४॥

॥ सवैया ॥

कन फूंके गुरु हद के होवत बेहद के गुरु और कहावे।
बेहद के गुरु आन मिले तब ही ले ठौर ठिकाना पावे।
कन फूंके गुरु दाम के लोभी चाहे तिरे शिष्य चाहे डुबावे।
बेहद के गुरु ऐसे है जिन को संग किये सही तिर जावे।
आप ही दाम के लोभ मे है फिर औरन की किम जहाज तिरावे।
उलटे भरम के कूप में डारत जाने फिर पीछा नहीं आवे।
नृप मान कहे ऐसे गुरु ना मिले हम यह विधना को अरज सुनावे।
गुरु मिले सत्‌वक्ता मिले सो आप तिरे और शिष्य तिरावे ॥

॥ सवैया ॥

गुरु ही गुरु बने सब ही पर गुरु कहा नही अर्थ लगावे।
देखा देखी गुरु करें सब ही गुरु-पन कहा यह निश्चय नही पावे।
कान फूंकाय किये गुरुआ वो गुरु काम कछु नही आवे।
गुरु पथ तो सन्त लखे विरला गुरु बीच जाय के सहज समावे।
गुरु देव ही नाथ मिले परिपूरण मान सबी मन भरम मिटावे।
गुरु मे शिष्य है शिष्य मे गुरु है यू एक स्वरूप मे सहज समावे ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारो नही गुरु पद कानहू फूंकाये झूठे, कान मान कुर सोई गुरु बन आयो है। ऐसो गुरु काम नही आत है स्वप्न हू मे, जात तिरने को और उल्टो डुबायो है। अर्थ हू न जाने है कि गुरु कहे किन हू को, देखा देखी कर गुरु करने को धायो है। गुरपद पाय ध्याय पार हु हो जाये जब, गुरु को पद कोई सहज न कहायो है। कहे राव मानसिंह गुरु पद नही जाने, मनुष्य जन्म पाय के यो ही लजायो है। अन्न के बदले में घास नही खायो गाफिल, सींग न दिये जो देन पशु ही कहायो है ॥

॥ कवित्त ॥

गुरु पै गयो तो हतो पाप के हटावने को, पाप के हटाने एवज दूणो बान्ध लायो है। मानहू गुमान बीच मावत न फूल्यो फूल्यो, अब गुरु कीन हम ब्रह्म हू कहायो है। ब्रह्म सिवा नही बात वार्ता करे दिन रात, करत हुकम सबही को यो सुनायो है। कहे राव मानसिंह इतके न उतके है, दोनो ही तरफ ते जात वो डुबायो है ॥

॥ सवैया ॥

कलि काल मिले गुरु आन जो ऐसे तान के शिष्य पै छुरी चलावे।
आन ही आन बके सब ही स्वप्ने गुरु पंथ की राह न पावे।
केते ही भूत और प्रेत दिखावत केते ही जन्त्र और तन्त्र बतावे।
आयो है शिष्य केहि काज इसे कोई शिष्य बूझे न कोई गुरु बूझावे।
द्वंद ही द्वंद में जात यों ही दिन आनन्द उन्हें कैसे कर पावें।
शिष्य जान लियो गुरु कौन हमें गुरु जान लियो पूजा यूं आवे।
गुरु शिष्य की आन परे खबरी कोई ताय तपाय कुरसान चढ़ावे।
असली होय करे असली नकली जो होय तुरत भग जावे।
नृपमान कहे गुरु देवनाथ कीने जब पूरण पारख आवे।
हम क्षत्री के पूत हैं भूत से बिन पारख कब शीश नमावें॥

॥ सवैया ॥

औरो के शीश उतार लेवें हम तो अपने किम शीश धरें रे।
पारख परख किया हमने जब शीश उतार के भेंट करें रे।
यावत् मात्र नमें हमको फिर हम क्यों उनके पांव परें रे।
स्वयं विष्णु को रूप कहे हमें तो हम औरों से क्यों जो डरें रे।
पर विष्णु के विष्णु मिले गुरु हैं अभिमान जो मान को दूर हरें रे।
जीव ही जीव मिटयो बकलो गुरु ब्रह्म मिले जा में जीव गरे रे॥

॥ कवित्त ॥

सोनो ज्यूं सुनार ताप देत कस साफ लेत, जौहरी ज्यूं हीरा घन चोट से चढ़ावे है। नाना विध रतन भांति ताहि को परख लेत, अपनी समझ कोई खोटो हू न खावे है। नारी सो ब्याह करत सौ सौ जो परीक्षा लेत, काम जो अनन्त करत बुद्धि को लगावे है। देखो अन्धाधुन्ध या जगत बीच पड़ी कैसी, तारणहार कहत जाको खबर हू न पावे है। सौंपे तन मन धन सगरो पूछत नांय मोक्ष डगरों, कान फूंक देत यूं गुरु जो कहावे है। आप तो डूबे सो डूबे या में नांय कसर नेक, सुत मित्र गोत्रन को यही समझावे है। पीढ़ी अनन्त तक यों ही किये जात, साचे और झूठे को भेद हू न पावे है। सन्त तथा मूर्ख कोई न क्यो होत तहां, वाको नहीं पूजत स्यान को पुजावे है। कहत राव मानसिंह अन्ध विश्वास कैसो, एक भेड़ गिरी जा में सबही गिर जावे है। देवनाथ हाथ पकड़ बार बार कहत यूं, एते परख ले तो क्यों गुरु न परखावे है॥

॥ दोहा ॥

चेलों में श्रद्धा नही, गुरु जो मिला धूरत ।
मान मिले दो एक से, कैसे मिले बेहद ॥
कुछ शिष्य की श्रद्धा होवे, और गुरु उपकारी होय ।
मान तुरत ही तार दे, देरी लगे न कोय ॥
शिष्य जाने कुछ ना देऊ, गुरु सर्वस्व हर लेत ।
मानसिंह दोऊ एक सा, मिली कीच में रेत ॥
गुरु को काम है तारणो, शिष्य को तिरणो होय ।
पातर जोय के शीश धरो, मुफ्त शीश मत खोय ॥
गुरु गूंगा होय ज्ञान में, बावला ब्रह्म में होय ।
अगम निगम गैला रहे, तो शीश नमाऊ सोय ॥
ऊपर से रह बावला, मन मतलबिया यार ।
मानसिंह ऐसे गुरु तणी, बार बार धिक्कार ॥

॥ सवैया ॥

ऊपर तें रहे गैला बगा निज मुख तें कुछ का कुछ बक जावे ।
मरने ते तो डरे इतनो कभी स्वप्ने जहर डली नही खावे ।
जगत दिखाय के स्वांग करे यूं देखो यह बावरे पूजन जावे ।
पत्थर पूजो चाहे पूजो उन्हें उनमे जो मिले तो उनमे पावे ।
जो तुम को कुछ पूजन हो ब्रह्म बेत्ता को पूजो वह तारे निरावे ।
देवनाथ मिले ब्रह्म निष्ठा सो मान की बेड़ी पार लगावे ।

॥ सावैया ॥

होय अजान फिरे हम कई दिन केतेक भूत और प्रेत पूजाये ।
पीर पैगम्बर पूज रहे और बहुतन की जो झूठन खाये ।
तदपि मन यह मान्यो नही और भूल ही भरम बीच भटकाये ।
सतगुरु समरथ आन मिले जब भरम की गांठ को दूर भगाये ।
नृपमान को जान पडी अब ही अब नही हम गये नही हम आये ।
परिपूरन भरयो सब मे मैं व्यापक नर भूले जिके मोय दूर बताये ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी रसिये की । ताल दीपचन्दी ॥

कौन उपाय करूं देवा ॥टेर ॥

धन सुत धरा में त्याग कर जाऊं; यह तन कष्ट मोहे नाँय सहेवा ॥ १ ॥ हेरत हेरत हार गयो मैं; हेरूं कहाँ नहीं खोज लगेवा ॥ २ ॥ जहाँ जाऊं जहाँ दूर बतावे; आगे से आगे थिर ना रहेवा ॥ ३ ॥ द्वारा जगदीश रामेश्वर बद्री; उनसे ही आगे और कहेवा ॥४॥ गङ्गा जमुना और न्हाये गोमती; पार तोई किण नाँय करेवा ॥ ५ ॥ नाँय मिले जद विषय रस ही चोखो; या में तो प्रकट कुछ आनन्द मिलेवा ॥६॥ योगी जपी तपी संन्यासी; इन विषयों से एक हू नाँय बचेवा ॥ ७ ॥ ब्रह्मा दौड़ पुत्री संग भाग्यो; शिव भिलनी के पीछे भगेवा ॥८॥ विष्णु और इन्द्र बचे नहीं एको; तो तुच्छ नर की गत कौन कहेवा ॥९॥ आप मिले अब मोय बतावमें छोड़ देऊँ विषय कैसे गृहवा ॥१०॥ मान कहे म्हाँने अधविच मत छोड़ो; मैं तो भटकने आगे हैरान भयेवा ॥११॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी रसिये की । ताल दीपचन्दी ॥

शिष्य बाहर भटक्याँ तू नहीं पावे ॥ टेर ॥

आगे नहीं ए तो झूठ कहे यूं; झूठा ही कागद रा घोड़ा चलावे ॥ १ ॥
आगो छूटे नहीं सुख पावे नहीं; यों ही जीव मार नित खावे ॥ २ ॥
विषयानन्द तो क्षणिक है भाई; भोग भोग्याँ पीछे मिट जावे ॥ ३ ॥
घर मत त्याग जाय क्यों वन में; मुफ्त धोखे में क्यों उलझावे ॥ ४ ॥
प्रारब्ध भोग राज थ ने मिलियो; भोग भोग क्यों नहीं आफत मिटावे ॥ ५ ॥
जो प्रारब्ध तज्याँ सूँ होवे संचित; फेर जन्म धर दुःख सहावे ॥ ६ ॥
कर कर राज विघ्न नहीं कीजो; जनक कथा सुन चित सुख पावे ॥ ७ ॥
राम वशिष्ठ गया नहीं वन में, दरसण कर मन थिर होय जावे ॥ ८ ॥
देवनाथ कहे है तेरा तू; दूजो है कौन जिनको खोजण जावे ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी डंके की । ताल कैरवा ॥

मान वचन

नाथ हूँ दास तुमारो । जीव अहंकार कियो मोय न्यारो ॥
ऐसी बूटी देवो भस्म होय जावे सारो रे, नाथ हूँ दास तुमारो ॥ टेर ॥

मैं शिष्य शरण तुम्हारी आयो। तुम समान दूजो नहीं पायो। मैं हूँ दास अज्ञान जा
दुःख मेरो निवारो रे, नाथ हूँ दास तुमारो ॥ १ ॥

गुरु वचन

मान अज्ञान निवारो। अपने रूप को आप विचारो। ऐसो है अवसान हाथ रे
मन तुम हारो रे, मान अज्ञान निवारो ॥ टेर ॥ मूल अहंकार तो जासी नाँय
सूक्ष्म रूप रहे उर माय। मत अहंकार जा करे तत्त्वमसि रूप तुम्हारो रे; मान
अज्ञान निवारो ॥ २ ॥

मान वचन

पहले ब्रह्म एक जो होय। फिर कहो जीव भयो किम दोय। यह अचरज मोहे
आय साफ कहो अर्थ विचारो रे, नाथ हूं ॥ ३ ॥

गुरु वचन

पडी अविद्या की उर छाँय। जाते ब्रह्म को जीव कहाय। इसी भरम में अलुझ
गयो जग बण गयो न्यारो रे, मान अज्ञान ॥ ४ ॥

मान वचन

एक हुतो तो पडी क्यो छाँय। क्यो जग प्रपंच के दुःख पाय। भरम भूल फैलाय
कियो सब ही रुलियारे रे, नाथ हूँ ॥ ५ ॥

गुरु वचन

माया ही ब्रह्म रूप यह जान। माया ब्रह्म भिन्न मत मान। देवनाथ कहे मान यही
सिद्धान्त हमारे रे, मान अज्ञान ॥ ६ ॥

मान वचन

भली करी तुम दीन दयाल। थोडे में सब मेट्या जाल। मानसिंह अहसान को नहीं
भूलन हारो रे, नाथ हूँ ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाडी इके की। ताल कँरवा ॥

सूती घोर नींद में मोको आन जगाई रे, हमें सत गुरु चेताई ॥ टेर ॥
सूती आज काल की नाँय। अनन्त जन्म की नींद में छाय। अबके कृपा कर ॐकार
ध्वनि गुरु सुनाई रे, हमें सतगुरु चेताई ॥ १ ॥ मैं तो जानी जग की आस।
बणबण खूब करम की फाम। करम भरम किया दूर सतम मे मोय मिलाई रे

॥ २ ॥ देखी मन में वात बिचार। दूजो वरण वरण खाई मार। एक रूप में मिली फेर मिट गई दुख-दाई रे ॥ ३ ॥ अब नहीं हूँ मैं नर और नार। मिट गये मन के द्वैत विकार। असल रूप को पाय नकल को दूर हटाई रे ॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु कीनो साथ। पकड़ लियो मजबूती से हाथ। मान नाथ की शरण गया करम जल जाई रे ॥५॥

॥ गान ॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

मिथ्या मैं तो भटक भटक मर जाती। बिना सतगुरु गम कैसे पाती।। टेर ॥ पिछली वात याद मोहे आवे, उमगत है मेरी छाती। हा हा जन्म खोया कई भुक्ता, फिर भी मुफ्त खो जाती ॥ १ ॥ वहुत ही वार मनुष्य जन्म लियो, भटक यूँ ही दुःख पाती। जो मिलिया सो मिलिया स्वारथिया, दिन दिन रही मैंजराती ॥ २ ॥ सतगुरु मिलिया अन्तर टलिया, वाची प्रेम की पाती। ऐंड़ा सत्गुरु भव दुःख मेट्या, मेटी त्रिविध दुःख राती ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, नहीं तो वहुत अलुझाती। मानसिंह घर वैठा ही जोया, ऐसी वात सुहाती ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

कर्म तुम ऐसा कीजे; करत करत नहीं छीजे ॥ टेर ॥
हरि मय कर्म करो सभी कुछ, देह दुःख मत लीजे। निर्विकल्प हो करो कर्म सब, ब्रह्म सुधा रस पीजे ॥ १ ॥ पाप ने पुण्य अपणा जद माने, मान्यों ही दुःख भुगतीजे। कृष्ण शरण होय कर्म करो कुछ, फल इच्छा मत लीजे ॥ २ ॥ राम किया और कृष्ण किया कर्म, औरों की कौन कहीजे। लम्पट फन्द करो मत दुष्कर्म, मन मांयलें ने समझीजे ॥ ३ ॥ देवनाथ कहे मान मान शिष्य, गीता भेद पढ़ लीजे। तुम से कही सो झूठ होय तो पलट जाव मोथे दीजे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

आज तुम भली यह वात वताई; भूलूं नहीं गुण मैं गुसाई ॥ टेर ॥
योग ने यज्ञ कर्म यह कह कह, सगरी जगत डुबाई। पोला पंथ को अन्त नहीं आवे, ए तो जिण किण खेंच मचाई, आतम डग में भरमाई ॥ १ ॥ योगी केयो योग को मारग, त्याग संन्यासी लगाई। कर्मकाण्डी के यो यज्ञ हवन करो, निज तत्त्व वात छिपाई, केयां विन कैसे दरसाई ॥ २ ॥ नाना शास्त्र नाना मत कीना, सुरझे नहीं

उग्झाई । गोना एक अनेक भये मन, सुगत मति अकुलाई, लगे अब कौन उपाई ॥ ३ ॥ आज कही तुम वात समझ लो, अब मैं भटकूं नांई । ऐसे ही म्हां ने पहिला कह देवन, लो भूल के क्यो विप खाई, समझ निज रूप लखाई ॥ ४ ॥ मूको ब्रह्म दाय नही आयो, जिनगो दया छिटकाई । कर्ता ब्रह्म हमे समझायो, अब मैं छोड़ूं नांई, धरूं ज्ञान उर के मांई ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु माफ करो मोको, जो तकलीफ उठाई । मानसिंह निज दास आपको, जिण ब्रह्म तेज दरसाई, रूप निज अपणो मिलाई ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

मान तेरे अज हूं अज्ञान रह्यो है, भरमना के बीच छयो है ॥ टेर ॥

काको तकलीफ और कौन उठावें, यह क्या केय रयो है । ठाकुर कौन दास पुनि कौन है, मेरो ही रूप भयो है, भरम सब दूर गयो है ॥ १ ॥ कुण तकलीफ करे कुण दूजो, कुण दुःख सुख सह्यो है । मेरी विभूति विभू विच व्यापक, एको ही छाय रह्यो है, सन्त कोई समझ गयो है ॥२॥ सो नोय दोय समझ अत मन मे, एक ही रह्यो है । देवनाथ कहे मानसिंह तू, नींद मे सोया रह्यो है, वात मेरो भूल गयो होय है ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

मान वचन

नाथ मेरी भूल भई हद भारी, करो अब माफ करतारी ॥ टेर ॥

भूल के कयो नाथ मैं मुख से, कीनो द्वैत विकारी । अब तुम रूप मेरे निज कहिये, भरमना भगी है हमारी ॥ १ ॥

गुरु वचन

मान तुम समझ समझ मुख बोलो, वचन धर काटे तोलो ॥ टेर ॥

करे को माफ गुनो है किसको, इत उत काहे को डोलो । मेरो रूप तो और बने क्यूं, लेत जीव पण ओलो ॥ २ ॥

मान वचन

घणां दिनां सूं पडी अविद्या, छोडन नही मेरी लारी । और ही सौर उमर भर वकियो, आदन पड़ी हमारी ॥ ३ ॥

गुरु वचन

वहुत दिन वक्यो सो छोड़दे अव तू, मत इमरत विष घोलो जहर पियो तुम वहुत दिनाँ तक, अव तो वाहर ढोलो; ॥ ४ ॥

मान वचन

मारूँ वहुत तभी नही माने, मूरख भई बुद्धि नारी । जन्म समूलो अफीम भख्यो मुख, यह क्या जाणत बिचारी ॥ ५ ॥

गुरु वचन

तू और बुद्धि दोय लखेगो, मिटे न भरम रो गोलो । मन बुद्धि चित अहंकार तू ही है, दूजो नहीं किनको जोलो ॥ ६ ॥

॥ मान वचन ॥

हे हे नाथ वात कही अव तुम, याही भूल दुख भारी । कर लूँ एक दोय नही राखूं, नहीं पुरुष नहीं नारी ॥ ७ ॥

गुरु वचन

वाह वाह तू ऐसे कर समझ्यो, तेरे में तू ही मिले लो । देवनाथ कहे यूं कर समझो, जीव जाय ब्रह्म में गले लो ॥ ८ ॥

मान वचन

साची वात हाथ अव आई, मिट गई द्वैत विकारी । मानसिंह गुरु देवनाथ विच, जर गई अविद्या सारी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग काफी—होरी । ताल दीपचन्दी ॥

ऐसी होरी सत्गुरु खेलाई; जुगती सूँ मोय समझाई ॥ टेर ॥

वहुत वियोग सयो मेरी सजनी, भोग भोग दुख पाई । सत्गुरु संग रंग डार्‌यो ऐसो, अव रंग उतरे नाँई; सदा एक रंग रंगाई ॥१॥ लख चौरासी फिरी मैं भटकत, किणी ने सही न वताई । ऊँच ने नीच जन्म धरिया वहुता, घर घर जनम दुःख पाई सुखी नहीं कोई वनाई ॥२॥ और होरी मैं हारत्ते वैठी, जीत कदे ही नहीं आई । सत्गुरु संग कियो है मैं अव के, भिड़ताँई फाग जिताई; पिया जी से आन मिलाई ॥३॥ आ होरी देख आनन्द भयो मन, पिछली को पछताई । ऐसे ही फाग खेल लेती पहिला, मूरख जन्म गमाई; अव के ही सत्गुरु समझाई ॥४॥ किणी तो कैयो घरवार छोड़ दे, किणी कैयो दुःख दाई । सव कुछ करत वताई मेरे सत्गुरु, पिव

उरझाई । सीना एक अनेक भये सत, सुगन भनि अरुलाई, लगे अब कौन उपाई ॥ ३ ॥ आज कही तुम बात समझ की, अब मैं भटकूं नाहि । ऐसे ही म्हाँ ने परिख्या कर देखल, तो भ्रम के बयो विष खाई, समझ निज रूप लखाई ॥ ४ ॥ मूको ब्रह्म दाय नहीं आयो, जिनगो दया छिटकाई । कर्ता ब्रह्म हमें समझावो, अब मैं छाड़ं नाहि, धरूं ज्ञान उर के माई ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु माफ करो मोबो, जो तकलीफ उठाई । मानसिंह निज दास आपको, जिण ब्रह्म तेज दरसाई, रूप निज अपणो मिलाई ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

मान तेरे अज हू अज्ञान रह्यो है, भरमना के बीच दयो है ॥ टेर ॥

काको तकलीफ और कौन उठावे, यह क्या वेष रयो है । ठाकुर कौन दास पुनि कौन है, मेरो ही रूप भयो है, भरम सब दूर गयो है ॥ १ ॥ कुण तकलीफ करे कुण दूजो, कुण दुःख सुख सह्यो है । मेरी विभूति विभू विच व्यापक, एको ही छाय रह्यो है, सन्त कोई समझ गयो है ॥२॥ सो तोय दीय समझ मन मन मे, एक ही रह्यो है । देवनाथ कहे मानसिंह तू, नींद मे सोया रह्या है, बात मेरी भूल गयो होय है ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

मान वचन

नाथ मेरी भूल भई हद भारी, करो अब माफ कसूरी ॥ टेर ॥

भूल के बयो नाथ मैं मुख स, कीनो द्वैत विकारी । अब तुम रूप मेरे निज कहिये, भरमना भगी है हमारी ॥ १ ॥

गुरु वचन

मान तुम समझ समझ मुख बोलो, वचन धर काटे तोलो ॥ टेर ॥

करे को माफ गुनो है किसको, इत उन काहे को डोलो । मेरा रूप तो और बने क्यूं, तेन जीव पण ओलो ॥ २ ॥

मान वचन

घणां दिनां सूं पड़ी अविद्या, छोडन नहीं मेरी लारी । और ही और उमर सब बकियो, आदत पड़ी हमारी ॥ ३ ॥

गुरु वचन

बहुत दिन बक्यो सो छोड़दे अब तू, मत इमरत विष घोलो जहर पियो तुम बहुत दिनाँ तक, अब तो बाहर ढोलो; ।। ४ ।।

मान वचन

मारूँ बहुत तभी नही माने, मूरख भई बुद्धि नारी । जन्म समूलो अफीम भख्यो मुख, यह क्या जाणत बिचारी ।। ५ ।।

गुरु वचन

तू और बुद्धि दोय लखेगो, मिटे न भरम रो गोलो । मन बुद्धि चित अहंकार तू ही है, दूजो नहीं किनको जोलो ।। ६ ।।

।। मान वचन ।।

हे हे नाथ बात कही अब तुम, याही भूल दुख भारी । कर लूं एक दोय नही राखूं, नहीं पुरुष नहीं नारी ।। ७ ।।

गुरु वचन

वाह वाह तू ऐसे कर समझ्यो, तेरे में तू ही मिले लो । देवनाथ कहे यूं कर समझो, जीव जाय ब्रह्म में गले लो ।। ८ ।।

मान वचन

साची बात हाथ अब आई, मिट गई द्वैत विकारी । मानसिंह गुरु देवनाथ बिच, जर गई अविद्या सारी ।। ६ ।।

।। गान ।।

राग काफी—होरी । ताल दीपचन्दी ।।

ऐसी होरी सत्गुरु खेलाई; जुगती सूं मोय समझाई ।। टेर ।।

बहुत वियोग सेयो मेरी सजनी, भोग भोग दुख पाई । सत्गुरु संग रंग डार्यो ऐसो, अब रंग उतरे नाँई; सदा एक रंग रंगाई ।।१।। लख चौरासी फिरी मैं भटकत, किणी ने सही न बताई । ऊँच ने नीच जन्म धरिया बहुता, घर घर जनम दुःख पाई सुखी नहीं कोई बनाई ।।२।। और होरी मैं हारने बैठी, जीत कदे ही नहीं आई । सत्गुरु संग कियो है मैं अब के, भिड़ताँई फाग जिताई; पिया जी से आन मिलाई ।।३।। आ होरी देख आनन्द भयो मन, पिछली को पछताई । ऐसे ही फाग खेल लेती पहिला, मूरख जन्म गमाई; अब के ही सत्गुरु समझाई ।।४।। किणी तो कयो घरबार छोड़ दे, किणी कयो दुःख दाई । सब कुछ करत बताई मेरे सत्गुरु, पिव

पायो है घर माँई, कही न गई न कही आई ॥५॥ राज ने पाट होत होरी ये सब कल कल इण माई । सब गण्यां संग रहुँ मैं रात दिन, सुरत ठिकाणे ठाई, पलक अलगी नही जाई ॥६॥ कियो राज सन्यास लियो नही, सब सुख दरस्यो है मांई । सब कुछ करत अकरता रहणो, ब्रह्म पाग सुखदाई, सुपने ही दुख उपजे नांई ॥७॥ देवनाथ गुरु दया करी है, अब मैं भटकूं नांहि । मानसिंह घर में सिव पायो, अब बाहर जाय बलाई, मिथ्या कुण रोग लगाई ॥८॥

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

हरी जी सूं हेत लगायो, उड गया सब अभिमान ॥ टेर ॥

हरि गुरु धर अवतार आविया, मेट्या म्हारे दुखडे री खान । दे उपदेश पार कियो भव से, प्रकट बताई पिछान ॥१॥ मैं तो गुरु ने मानुष जाण्या, जब तक हुतो अज्ञान । ज्ञान भान म्हांने प्रकट दिखायो, मारया शब्द रा बान ॥२॥ मैं तो जाण्यो हरि दूर बसत है, भोग्या कष्ट महान् । पडदो उठाय देख्यो उर अन्दर, तो मैं ही मेरा आतम राम ॥३॥ गङ्गा जमुना भटक गोदावरी, खूब भयो मैं हेरान । अडसठ तीरथ दिया गुरु घर मे, पीऊँ खूब जल छान ॥४॥ देवनाथ के साथ रयां सूं, होय गयो देव समान । मानसिंह अब भेड पणो नहीं, हुए ब्रह्म गल्तान ॥५॥

॥ गान ॥

राग मारु । ताल कैरवा ॥

मने सूते आय जगायो, गुरु प्रेम पियालो पायो । उठे पीतां ही मगन बणायो, जद जन्म ने मरण मिटायो ॥ टेर ॥

मैं तो मगन नशे रे मांई, उठे उलटी प्रेम दरयाई । सब विषयां रो मूल उडायो । गुरु प्रेम पियालो पायो ॥१॥ मैं तो पूरण नशे मे गट छाया, जद सत्गुरु सैन बताया । मने सैनी सूं समझायो । गुरु० ॥२॥ मैं तो बन मे गयो न रेयो बस्ती, मैं तो पालो चढयो न हस्ती । उठे मग में रतन मिलायो । गुरु० ॥३॥ अब हरि रूप जग सारो, म्हारो हरि नही किण सूँ न्यारो । म्हारो पडदो सतगुरु उठायो । गुरु० ॥४॥ गुरु देवनाथ सन्यासी, ज्यांरी तुरिये रूप माहे कासी । कहे मान शिव रूप समझायो । गुरु० ॥५॥

॥ आरती ॥

ॐ जय नाथं देवा प्रभु जय नाथं देवा; दीनानाथ जगत् मय स्वामी
कर हूं मैं सेवा । ॐ जय नाथं देवा ॥ टेर ॥

ज्ञान विचार काम अति सुन्दर शोभित मन मोवे । शुद्ध विवेक वेराग के कुण्डल देखत सुख होवे ॥ १ ॥ सत की सेली सहज नित सुमरन मूरत मंगलकारी । एक अनेक अनेक एक में गुप्त नहीं है जारी ॥ २ ॥ जीवों काज जन्म धर आये निगुण सगुण होया । मानुष तन धर जीव जगाये भ्रम तम सब खोया ॥ ३ ॥ चाँद ने सूरज जोत जगे निर्मल कभी न बुझे स्वामी । सोहं शब्द को शङ्ख वजत नित जग में अन्तर्यामी ॥ ४ ॥ जेती बूटी जड़ी गंध वह धूप रूप जानो । जेते विश्व पुष्प खिले तेरे ये वरुण माल मानो ॥५॥ तुम हम हम तुम एक हैं स्वामी और नहीं कोई । अपनी आरती आप करत नित नहीं द्वितीया होई ॥ ६ ॥ देवनाथ गुरुनाथ मान के नाथ रूप कीना । ऐसी आरती करी मैं प्रेम सूँनिज स्वरूप चीना ॥ ७ ॥ इन आरती को गावे और चीनो ये ही फल है भाई । अपने आप विच आप समावत फिर न जन्म आई ॥ ८ ॥ जीवन मोक्ष मिलत इन माँही मुवाँ है मोक्ष झूठी । मानसिंह ऐसी करी जो आरती जीवत मोक्ष लूटी ॥ ९ ॥

भरत-रहूगण सम्वाद

॥ सवैया ॥

भरत जिसे तो ज्ञानी नहीं जिन सर्वजीतक नाम परायो ।
मोह की फाँक उठी उनमें जिन हिरण के गर्भ में जन्म धरायो ।
जो कीनी हती सब मोह ने खोई पलट विप्र गृह जन्म जो पायो ।
चेत गयो अपने मन में मुख मौन रह्यो कछु ना जो कहायो ।
माँ और बाप नहीं जिनके कुटुम्ब जंगल विच जा छिटकायो ।
अपने नही कुछ काम की यह देखो स्वारथ को खेल रचायो ।
राजा ते तो भये जो मुनि मुनि ते हिरण अब विप्र कहवायो ।
नृपमान कहे यह मोह की फास है चढ़ने न दियो जिन पीछो गिरायो ।

॥ कवित्त ॥

बैठो मुनि जंगल बीच कोई नहीं आय जहाँ, जंगल बीच राजा एक पिंजस चढ़ आयो है । कहार एक गया थाक कलेजे में एक उठी चाक, और नहीं मिला कोई भरत मुनि पायो है । कहार ने जोड़ दीन दया न कुछ मन में कीन, भरत के मन निज धर्म जो समायो है । पाँव तले चीटीं आय ताको चलते बचाय, अपनो रूप जान उने मारन न चायो है ॥

॥ दोहा ॥

राजा हो यों कहने लगो धक्का लगत है मोय ।
रे तुमको कुछ डर नही, ठीक न चलते कोय ॥

॥ चौपाई ॥

जोड़ी कहार फरियाद सुनाई । है महाराज दोप मम नांई ॥
नयो कहार ठीक नही चाले । तेहि कारण यह पिजस हाले ॥
नृप ने मुनि पर हाथ चलाया । हाहा कर हस दाँत दिखाया ॥

॥ सवैया ॥

जब मुनि को हम जोय, राजा मन शका अति । यह कोई साधु होय, जुलम भयो मम हाथ ते ॥ लागत ऊपर चोट, दन्त काढ हड हड हसे । बधी पाप की पोट, आज सतायो साध हम ॥

॥ चौपाई ॥

तुरन्त नरेश पिजस धरवायो । मुनि चरणो मे शीश नवायो ॥
कहो तुम कौन हो देव दयाला । सबी खोल कहो बात कृपाला ॥

॥ दोहा ॥

भरत मुनि हम के कही, तुम सो हम ही होय ।
तुम हम मे अन्तर नही, भेद न जानो कोय ॥

॥ सवैया ॥

बात सुनि मुनि राज की तो नरेश अति मन में शरमायो ।
जुलम कियो हम जुलम कियो हम जुलम कियो यह मन सतायो ।
माफ करो तुम माफ करो महाराज मेरो यह कसूर बन आयो ।
मै तो जान अजान हनो मो को नही कोई खबर यह पायो ।
ऐसी विनय जब राव करी ऋषिराज फेर मन मे हसियायो ।
जैसे किये तैसे भोगने है नृप तेरो कौन कसूर कहवायो ।
मै सो तू और तू सो मैं हूँ मुझ तुझ मे नही अन्तर रहवायो ।
तेरे स्वरूप मे जाय मिले तो कसूर नही न कसूर कमायो ।
नृप मान कहे देखो गुण सन्त के दु ख पाय के जागरत ज्ञान बताओ ।
मारग मे ही गुरु पाय लियो नृप राह से ही उलटो फिर धायो ॥

॥ चौपाई ॥

भरत महाराज के पद सिर दीना। उत्तम ज्ञान रस अमृत पीना॥
कह यूं भरत भूपति कहाँ जावो। जावत काम कहा मोय बतावो॥
शीश नवाय के कहत नरेशु। जावत लेन गुरु को उपदेशु॥
जो तुम मोको याँही समझायो। चाह हती ते याँ ही मैं पायो॥
"तत्वम्" को मोको अज्ञाना। "तत्वमसि" पद अब पहिचाना॥

॥ सोरठा ॥

एको उपज्यो ज्ञान, लगी कटारी मारकी। वाई सँत सुजान,
वाई खाली ना गई॥

॥ चौपाई ॥

ऐसी कटारी लगे न उर कोई। सुन सुन कथा कान दड़े होई॥
सुनी भागवत बीसोंई वारा। जिनकी कथा कुछ कियो न विचारा॥
जीव "राव" और पिजस "देहा"। अन्तःकरण या में "कहार" जुड़ेहा॥
अब यह चाहे जहाँ ले जावे। इनको वरजण हार न आवे॥
बुद्धि कहार को भई है बीमारी। जगत् जंगल विच गुरु दातारी॥
जिनको भाव कहार है भाई। जोड़ दियो पिजस के माँई॥
दया भाव गुरु कोई ऐसो। अपनो स्वरूप समझ ले जैसो॥
जीव गरीब सो चींटीं बचावे। जीव राव को यह बात न भावे॥
उन ले मन को हुक्म दे दीना। जाण संत पर वार उण कीना॥
कीनो वार संत हंसियावे। अन्तर क्रोध जरा नहीं लावे॥

॥ दोहा ॥

देह अभिमान से उतर के, जीव जो नीचे आय।
सतगुरु चरणों शीश धरयो, भूल के समझ्यो नांय॥
कहे जीव तुम कौन हो, कहा तुमारो नाम।
सही सही मोय बताइये, मोय होय विसराम॥
ज्ञान संत मुख यूं कह्यो, तुम सो मैं ही जान।
मैं तू कोई दूजा नहीं, कहे राव यूं मान॥
तेरो मेरो एक ही, दूजो कोई नहीं गाम।
तू रहे वहां मैं ही रहूं, मुझ में ही तेरो धाम॥

॥ सवैया ॥

ऐसी कटारी दीवी गुरु ने अब जीव पलट पाछो दिस आयो ।
पूछ्यो जब गुरु देव गुसांई कारण कोण आगे तू धायो ।
जानो इनो मैं ढूढन को सो तो तुम अब मुझ मे ही बनायो ।
देवहु नाथ भरत बन के नृप मान जैसो निटुर चेतायो ॥

॥ चौपाई ॥

भरत मुनि की कही जो कहानी । बात न समझो याका समझो निशानी ॥
ऐसे ही भागवत सभी बिचारो । नाहक कूट कूट शिर मारो ॥
एक ते द्वादश स्कध के माँई । ये ही बात कोई दूजी नाँई ॥
पुराण बडो मैं कब तक गाऊ । सार इतो ते साफ सुनाऊ ॥

॥ दोहा ॥

यूं ले सब सक्षेप ते, बारे ही किये बयान ।

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

॥ दोहा ॥

मानसिह या जगत मे, छाछ पीवन सब जाय ।
घृत कोई हरिजन पीवे, रहे सुख रूप समाय ॥
छाछ तो पीनी सहज है, घृत पियो नही जाय ।
पीवत उपजे कुमतुमी, पीये तो नाथ समाय ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल कैरवा ॥
हम पीते ही प्याला मस्तान हुवे ॥ टेर ॥

वहुत दिनाँ तक रहे वियोगी, पच पच के हैरान हुवे ॥ १ ॥
दोय ही दोय एक नही कीना, भँवर जाल परेशान हुवे ॥ २ ॥
गये न बन मे रगे न बस्तर, ना कोई सागन खान हुवे ॥ ३ ॥
स्वासं न रोक्या जराई न लकडी, हम डोलत स्वस्थिर ध्यान हुवे ॥४॥
राज तज्यो नही काज तज्यो नही, सब कुछ करते महान् हुवे ॥५॥
मेरी योग्यता मुझसे झलकी, घर ज्ञान दर्पण पहिचान हुवे ॥६॥
देवनाथ गुरु के स्वरूप मे, मान जाय श्रीमान हुवे ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

काहे को अर्थ व्यर्थ करो निज अर्थ की सुरत नहीं मन आने ।
आप में अर्थ भयो अपनो फिर अनरथ सब ही दीन मिटाने ।
आप को अर्थ न जीयो कभी अनरथ व्यर्थ में आन जुड़ाने ।
नृप मान कहे जब जान परी तो अपनो अर्थ सो आप में आने ॥

॥ सवैया ॥

और के अर्थ अनेक करो जब आपको अर्थ न आप में आवे ।
और के अर्थ ते काज सरे नहीं काज सरे अनरथ मिटावें ।
चारों वेद पुराण अठारह षट् शास्त्र उपनिषद् यह गावें ।
भेदा-भेद को छेद करे और अपनो अर्थ सो आप लगावें ।
नृप मान कहे बिन भेद के छेदे अमृत आनन्द कहो किम पावे ।
नकाब उठाय के देखे जभी परदे ही में निज श्याम मिलावे ॥

॥ सवैया ॥

आप ही तो जीव बन बैठो और आप ही च्यार को जाल फैलायो ।
आप ही नव के बीच फँस्यो और आप ही सतरह बन अलुझायो ।
आप ही साक्षी रूप भयो फिर च्यार मकान जो आप थपायो ।
आप ही फिर निर्लेप भयो इन च्यारों से पार परे कहलायो ।
गुरु देव ही नाथ ने हाथ गह्यो जद यह निश्चय करके पद पायो ।
आय न जाय मरे नहीं जन्मे मान महान् में मान समायो ॥

॥ सवैया ॥

आप बन्यो गुरु आप बन्यो शिष्य आप ही पंडित ज्ञानी कहिये ।
आप ही वेद पुराण है आप ही आप ही सब को मानी कहिये ।
आप ही सिद्ध ने साधु आप ही आप ही फिर अभिमानी कहिये ।
आप ही ऊँच और आप ही नीचा है आप ही में ग्लानी कहिये ।
नृपमान कहे जब आप मिटे तब आप बिना कोई ताप नहीं है ।
श्रवण मनन निदिध्यासन जबी तक आप जराय न खाक भई है ॥

॥ सवैया ॥

एक शत और आठ उपनिषद् उन सब ही ने मोय बतायो
षट् शास्त्र के गीत गाये पर मोय बिना नहीं दूजो मिलायो ॥

वेद उपवेद के सूत्र पढे सब सूत्र तोड के टूक बनायो।
लाखो ही टूक किये उनके पर अन्त मे जोयो तो मैं ही पायो।
स्वसवेद्य कह्यो सबही सोही मैं टटोल के भेद लगायो।
"तू ही है तू ही है तू ही है" कह्यो कोई याके सिवाय नही एक ठहरायो।
नृपमान को जान पडी जब ही मैं होय हैरान अबे यहा आयो।
मेरा मैं ही हूँ जो सभी बिच नाहक ही यह मगज पचायो॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । तिताला ॥

माधो हम आधीन अब किन के ॥ टेर ॥

पाँचो भूत दूत सब मेरे हम हैं स्वामी सबन के। मन बुद्धि चित्त अहकार यह चलते सब ही हमन ते ॥ १ ॥ मेरी सत्ता होत जब इनमें काम चले जो सबन के। जो मेरी सत्ता नहीं होवे तो काम बने क्या इनके ॥ २ ॥ मेरे रचे जो मोय दबावे यह कहो जुलम कवन ते। मान कहे जब ढूंढा मेरे को अब नही डरूँ इनन ते ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल तिताला ॥

अब मेरे भाव अभाव न कोई ॥ टेर ॥

किन की भक्ति करूँ को पावे दूजा है कोऊ नाँही। किन को भजूं मोक्ष हो किन की मैं हूँ मोक्ष सदा ही ॥ १ ॥ स्वर्ग नरक होवत पुनि किन को सब ये मेरे बनाये। किन को दान पुण्य पाप कौन को और को भोग भोगाये ॥ २ ॥ जो कुछ करूँ सो करूँ आप मैं फिर मैं रहूँ अकर्ता। कर्ता क्रियमाण नहीं मुझ में को भोगे को भर्ता ॥ ३ ॥ चितवूं कौन कौन चितवत है चितवत चेता नाँही। मान कहे निज चेतन है तू जो देखे तुझ माँही ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल तिताला ॥

अब हम भीतर रहे और देखें ॥ टेर ॥

जुदा जुदा कह कर मैं हार्यो आखिर जुदा न पायो। मेरो मुझ मे मिल्यो मैं आके दूसर कौन दिखायो ॥१ ॥ दूर कहूँ तो निजर न आवे निकट कहूँ कहा कहिए। दूर निकट सब कहन मात्र है तेरा तू ही मिलइए ॥ २ ॥ देवनाथ मिले ब्रह्म निष्ठा, उनही से तत्त्व चीना। मानसिंह अब नाम और नामी दो हू भाव तज दीना ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

सखी कौन से मन्दिर जाऊँ, घट में श्री कृष्ण मनाऊँ ॥ टेर ॥

आप ही देव आप हीं पुजारी, आप आप में ध्याऊँ । अपणी सेवा करूँ आप से, और न दरसण पाऊँ ॥ १ ॥ दशवें द्वार बिच मन्दिर सुन्दर, ताके पट उघड़ाऊँ । मूरत में निज सूरत दरसे, ऐसो घट ठहराऊँ ॥ २ ॥ आप ही कृष्ण आप भयो गोपी, निश्चय रास रचाऊँ । द्वादश सो वृन्दावन कहिये, इत उत ना भटकाऊँ ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु सहज स्वरूपी, सहजे सहज समाऊँ । कहे मानसिंह मिल्यो अभय पद, क्यूँ मैं बाहिर जाऊँ ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग जौनपुरी टोड़ी । ताल दीपचन्दी ॥

सजनी पर घर क्या हरि पूजे ॥ टेर ॥

उदर भरन के काज करें सब, इन खुद को नहीं सूझे । ये क्या दिखावें खुद ही बापुरे, आप ही जाल अलूझे ॥ १ ॥ कीच कीच ते धोवन लागे, कैसे कीच उतरीजे । और मसाला देवत नाँही, तू इनमें क्यों भरमीजे ॥ २ ॥ वन्धे कहे बन्ध मैं छोड़ूँ, किम कर मन ही पतीजे । मान कहे अब मान बावरी, भूल विश्वास न कीजे ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग जौनपुरी टोड़ी । ताल दीपचन्दी ॥

आली तू कौन से कृष्ण को ध्यावे । कृष्ण अनन्त एक कृष्ण नाँही, का के दर्शन पावे ॥ टेर ॥

कृष्ण और गोपी गिनन तू बैठे, तो गिनत गिनत थक जावे । जाते कृष्ण की उत्पत्ति कहिए, ताहि को क्यों न मिलावे ॥ १ ॥ नाम जपे तो नाम कहाँ है और नाम में क्या पावे । नाम न जप मिलजा नामी में, तो निज में निज ही समावे ॥ २ ॥ करके रास विलास करे नित, क्यों व्यभिचार बढ़ावे । मूरख जन व्यभिचार ख्वार कर, ऊमर मुफ्त गुमावे ॥ ३ ॥ प्रथम देख उपनिषद् को, और गीता बाद दिखावे । रूप विराट प्रत्यक्ष नमूना, कब तक कह समझावे ॥ ४ ॥ केते कृष्ण अर्जुन भये केते, कई कुरु पाण्डु समावे । कई रघुनाथ लखन कई सीता, अब गिनती कौन लगावे ॥५॥ लघु ते लघु, दीरघ ते दीरघ, सब उन माँहि समावे । मानसिंह मिलजा अब ही ते, क्यों भ्रम में भरमावे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

सब करे और नही करे, करत अकरता होय।
ग्रहण त्याग दोनं नही, है सन्यासी सोय ॥
पकड्यो क्या त्याग्यो कहा, यह कुछ समझ न आय।
पकड्यो जाको त्याग दे, तो त्याग कहाँ रह जाय ॥
करम बीच कुकरम बने, ताको देह मिटाय।
नियत कर्म जो कीजिये, सो फिर बाँधत नाँय ॥

॥ सवैया ॥

वाचक ज्ञान में ध्यान धरे सब राचक ज्ञान तो विरला उठावे।
दो शिर हो जिन के तन पैं वे राचक ज्ञान में सुरत रमावे।
एक शीश धरे गुरु चरणां दूजे से व्यवहार चलावे।
व्यवहार करे और राचो रहे रंग लागो सो उतरण नही पावे।
हरष में हरष न शोक में शोक है एक सरीसो जोग कमावे।
नृपमान कहे वो साधु हमें प्राणां से भी अति अधिक सुहावे ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

वाह वाह मौज बताई नाथजी, वाह वाह मौज बताई रे ॥टेर॥

जन्म अनेक बहुत मैं भटक्यो किन हू न राह दिखाई रे। पिछली बात याद मोये आवे जिय धड़कत उर माँई ॥१॥ पूज पूज पत्थर पाथर को यांको अन्त न आई रे। पोला पोल ढोल नही दीसे बह जातो भव माँई रे॥ २॥ राज करे अब दुःख नही हमको और सुख भी व्यापे नाँई रे। राजा वजीर बने चाहे कोई याको फिकर न आई रे॥ ३॥ चाहे कोई ले तखत बिछावो भूली सैज भलाई रे। सैज तख्त मोये दीखत एक से न्यून विशेष न पाई रे॥ ४॥ चाहे रहूँ पहाड़ जङ्गल में चाहे रहूँ गढ के माँई रे। सब मे मैं और सब है मुझ मे यह है खुद मस्ताई रे॥ ५॥ राज दंड मे दंड देऊँ मैं पालन करूँ सदाई रे। पाप पुन मेरे एक बराबर यह गीता में गाई रे॥ ६॥ देवनाथ ब्रह्म निष्ठा पाये जब यह अवस्था आई रे॥ मान कीट से भवर भये अब भवर में भवर उड़ाई रे॥ ७॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल तिताला ॥

कौन रयो मो से न्यारो संन्यस्त अब कौन रयो मो से न्यारो ॥ टेर ॥
कियो सन्यस्त मैं ने तो ऐसो जैसे अर्जुन श्याम पुकारो । घर बैठे सन्यस्त मिले तो कौन बने भिखियारो ॥ १ ॥ कौन उठावे दण्ड कमण्डल कौन सहे शिर भारो । जन्म अनेक घणो ही उठायो मुश्किल भार उतारो ॥ २ ॥ खर कूकर मैं भयो घणां घणां दिन ढोय ढोय भार मैं हारो । अब के उतारी अज्ञान झूल शिर डूबत जात निकारो ॥ ७ ॥ बहुत कठिन तो उतारी गुदड़ी फिर क्यों गुदड़ी डारो । कौन रंगे रंगावे कुण यह कुण सहे कष्ट अपारो ॥ ४ ॥ गीता अन्त कृष्ण यह कहे है सब तज शरण हमारो । शरण तो दूर हम मिले उसी में पाखंड दूर निवारो ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु दया करी जद बिगड़्यो काम सुधारो । मान कहेइस गाफिल पन्थ में भूल पांव मत डारो ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहार ताल कैरवा ॥

साधो मैं तो असल जोग का जोगी रे । असली छोड़ नकल कुण लेवे, कौन बणे ऐसा रोगी रे ॥ टेर ॥

कब अर्जुन ने जोग कमाया, कब जिन प्राण चढ़ाया रे । गीता मात्र सुणी उण कानाँ निज निश्चय उर आया रे ॥ १ ॥ जनक राज कब बन को गया था, कब जिण आसण जमाया रे । ध्रुव ने ध्यान अटल धर लीनो, किण जाने जोग बताया रे ॥ २ ॥ गृहस्त संन्यस्त और वानप्रस्त में, लागो रहूँ एक धारी रे । चारों ही एक एक है चारों, नित प्रति हू मैं ब्रह्मचारी रे ॥ ३ ॥ घर को त्याग जाय जो बन को, उन ने क्या कुछ कीना रे । घर में रहे और घर को ओलखे, ऐसा साधन मैं ने लीना रे ॥४॥ किनका राज और किनका मैं राजा, क्या भोगूं ने क्या भोगी रे । राव ने रंक कोई नहीं मो में, आतम एक संयोगी रे ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु सदा ही आनन्दी, सोनो मिल्यो ज्यों मोगी रे । मानसिंह अब रहु क्यों न्यारो, कारण कौन वियोगी रे ॥६ ॥

॥ दोहा ॥

सब करे और नहीं करे, करत अकरता होय।
ग्रहण त्याग दोनूं नहीं, है सन्यासी सोय ॥
पकड़्यो क्या त्याग्यो कहा, यह कुछ समझ न आय।
पकड्यो जाको त्याग दे, तो त्याग कहां रह जाय ॥
करम बीच अकरम बने, ताको देह मिटाय।
नियत कर्म जो कीजिये, सो फिर बांधत नांय ॥

॥ सवैया ॥

वाचक ज्ञान में ध्यान धरे सब राचक ज्ञान तो विरला उठावे।
दो शिर हो जिन के तन पे वे राचक ज्ञान मे सुरत रमावे।
एक शीश धरे गुरु चरणां दूजे मे व्यवहार चलावे।
व्यवहार करे और राचो रहे रग लागो सो उतरण नही पावे।
हरप मे हरप न शोक मे शोक है एक सरीसो जोग कमावे।
नृपमान कहे वो साधु हमें प्राणों से भी अति अधिक सुहावे ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

वाह वाह मौज बताई नाथजी, वाह वाह मौज बताई रे ॥टेर ॥

जन्म अनेक बहुत मैं भटक्यो किन हु न राह दिखाई रे। पिछली बात याद मोये आवे जिय धड़कत उर मांई ॥१॥ पूज पूज पत्थर पाथर को यांको अन्त न आई रे। पोला पोल ढोल नहीं दीसे बह जातो भव मांई रे ॥ २ ॥ राज करे अब दुःख नहीं हमको और सुख भी व्यापे नाई रे। राजा वजीर बने चाहे कोई याको फिकर न आई रे ॥ ३ ॥ चाहे कोई ले तखत बिछावो सूली सैंज भलाई रे। सैंज तखत मोये दीखत एक से न्यून विशेष न पाई रे ॥ ४ ॥ चाहे रहूँ पहाड़ जङ्गल मे चाहे रहूँ गढ़ के मांई रे। सब मे मैं और सब है मुझ मे यह है खुद मस्ताई रे ॥ ५ ॥ राज दंड मे दंड देऊँ मैं पालन करूँ सदाई रे। पाप पुन मेरे एक बरोबर यह गीता मे गाई रे ॥ ६ ॥ देवनाथ ब्रह्म निष्ठा पाये जब यह अवस्था आई रे ॥ मान कीट से भवर भये अब भवर मे भवर उड़ाई रे ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल तिताला ॥

कौन रयो मो से न्यारो संन्यस्त अब कौन रयो मो से न्यारो ॥ टेर ॥
कियो सन्यस्त मैं ने तो ऐसो जैसे अर्जुन श्याम पुकारो । घर बैठे सन्यस्त मिले तो कौन बने भिखियारो ॥ १ ॥ कौन उठावे दण्ड कमण्डल कौन सहे शिर भारो । जन्म अनेक घणो ही उठायो मुश्किल भार उतारो ॥ २ ॥ खर कूकर मैं भयो घणां घणां दिन ढोय ढोय भार मैं हारो । अब के उतारी अज्ञान झूल शिर डूबत जात निकारो ॥ ७ ॥ बहुत कठिन तो उतारी गुदड़ी फिर क्यों गुदडी डारो । कौन रंगे रंगावे कुण यह कुण सहे कष्ट अपारो ॥ ४ ॥ गीता अन्त कृष्ण यह कहे है सब तज शरण हमारो । शरण तो दूर हम मिले उसी में पाखंड दूर निवारो ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु दया करी जद बिगड़्यो काम सुधारो । मान कहेइस गाफिल पन्थ में भूल पाँव मत डारो ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहार ताल कैरवा ॥

साधो मैं तो असल जोग का जोगी रे । असली छोड़ नकल कुण लेवे, कौन बणे ऐसा रोगी रे ॥ टेर ॥

कब अर्जुन ने जोग कमाया, कब जिन प्राण चढ़ाया रे । गीता मात्र सुणी उण कानाँ निज निश्चय उर आया रे ॥ १ ॥ जनक राज कब वन को गया था, कब जिण आसण जमाया रे । ध्रुव ने ध्यान अटल धर लीनो, किण जाने जोग बताया रे ॥ २ ॥ गृहस्त संन्यस्त और वानप्रस्त में, लागो रहूँ एक धारी रे । चारों ही एक एक है चारों, नित प्रति हू मैं ब्रह्मचारी रे ॥ ३ ॥ घर को त्याग जाय जो वन को, उन ने क्या कुछ कीना रे । घर में रहे और घर को ओलखे, ऐसा साधन मै ने लीना रे ॥४॥ किनका राज और किनका मैं राजा, क्या भोगूं ने क्या भोगी रे । राव ने रंक कोई नहीं मो में, आतम एक संयोगी रे ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु सदा ही आनन्दी, सोनो मिल्यो ज्यों सोगी रे । मानसिंह अब रह क्यों न्यारो, कारण कौन वियोगी रे ॥६ ॥

॥ सवैया ॥

सब व्यवहार करे जग में और मन को सुपुप्ति गुफा में बैठावे ।
तर्क वितर्क उठे मन में नहीं सब कुछ करे और नाँय लिपावे ।

दे उपदेश जगाय सबी जग अपने जैसो बनावन चावे।
दुःख और सुख को पाँव तले दे निर्भय रहे निज मौज उडावे।
मन मुरदा और चेतन साथ है यों ते जीवन समाधि लगावे।
नृप मान कहे कोई ऐसो मिले तो वो साधु जन मोहे सुहावे॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह करणो सो कर, इण खटपट के मांय।
खटपट मिटियाँ क्या करे, पीछे वणसी नांय॥
मानसिंह जब तन रहे, तो खटपट इनके लार।
तन मिटियाँ मिटसी यदि, तो फिर करसी कौन विचार॥

॥ सवैया ॥

आप दुःखी और आप सुखी है आपही अपनो मान्यो कीनो।
आप ही राव और रक ही आप है आपही आपको जो नहीं चीनो।
आप ही ब्रह्मा विष्णु है आपही आपही शकर रूप धर लीनो।
आपही न्यारो भयो जग से और आप फितूर सबी यह कीनो।
आपको आपही भूल गयो गुरु देव हू नाथ मोको कह दीनो।
मान को भ्रान गयो सगरो अब मेरो ही मैं मुझसे मुझ चीनो॥

॥ गान ॥

राग सारग। ताल कैरवा॥

साधो भाई खट पट बुरी बलाई। इण खट पट में चट पट लखलो, अवसर बीतो जाई॥ टेर॥

खट पट बीच लख्या सो ही लखिया, इनर भेद कछु नाँई। इनर कहे सो चीन्हे नाँही, है इन खट पट माँई॥ १॥ या खटपट तो निज ही चाले, जिन खोज्या निज पाई। इनते बिलग होय कहाँ जावे, अवर ना मिले उपाई॥ २॥ जब लग देह तब लग खटपट है, देह मिटे मिट जाई। ताते इनमे लख निज आतम, धर निश्चय उर माँई॥३॥ देवनाथ गुरु मिले सुख सागर, जिन मोहि राह बताई। इन खटपट में अमृत रस है, समझ बिन नहीं पाई॥४॥

॥ सवैया ॥

चारों ही वेद पुराण अठारह षट् शास्त्र सब ही पढ़ गाये ।
एक शत आठ पढ़े उपनिषद् हमको तो त्याग नही दरसाये ।
मेरो ही रूप है विश्व सभी यह मेरे सिवाय कोई और न पाये ।
नृपमान कहे अब त्यागूँ किन्हें भगवान् नहीं कहूँ त्याग बताये ॥

॥ सवैया ॥

च्यारों ही वेद कह्यो "तू है" उपनिषद् यों ही मोय बतायो ।
षट् शास्त्र पुराण अठारह सब मेरे सिवाय कोई और न गायो ।
मैं ही हूँ कोई दूजो नहीं फिर त्यागूँ किन्हें और क्या पकड़ायो ।
मेरे ही मैं को त्यागूँ कहो किम त्याग दियो जो त्यागन चायो ।
देह अभिमान बन्यो मैं बैठो बस ये ही जरूर ते दूर पड़ायो ।
नृप मान कहे यह साचो त्याग गुरुदेव ही नाथ ने मोय बतायो ॥

॥ गान ॥

राग सारंग । ताल कैरवा ॥

ऐसो मैं तो अजर अमर संन्यासी । त्याग ने ग्रहण करो कोई दूजो, ज्याँ रे मन होय उदासी ॥ टेर ॥

देऊँ जिन्हें अब मैं दंड देऊँ फिर क्यों दण्ड उठाऊँ । तीनों ही लोक दण्ड सम मेरे कहो कैसे दूर हटाऊँ ॥ १ ॥ रेचक पूरक करे कुण कुम्भक कुण कोई द्वार मुंदावे । सहज संन्यास पायो निज घर में अब कुण बाहिर जावे ॥ २ ॥ कपड़ा रंगूँ तो होय फिर धोला मांग्योड़ो खूट जावे । आतम भीख आप सूँ ही मांगी कदेई खटण नहीं पावे ॥३ ॥ राज करूँ संन्यास जिसो सुख दुःख नहीं आवत लिगारा । मान कहे मानो होय मरजी जैसो जनक पुकारा ॥४॥

॥ गान ॥

राग सारंग । ताल कैरवा ॥

भागा भरम हमारा; अब मिल गए प्राण आधारा ॥ टेर ॥

लख चौरासी भरम में भरमे भूल पड़े जग सारा । मेरी इच्छा सब जग कहिये मुझ से नहीं दुवारा ॥ १ ॥ वेद ग्रन्थ भागवत गीता कह ललकार के सारा । समझे नहीं दोष दे वां ने भूले भरम विकारा ॥ २ ॥ ना कहीं गया नहीं कोई आया ज्यूँ का त्यूँ ही विचारा । कर का कंगण खोय भूल से ढूंढ़ लिया जग सारा ॥ ३॥ देवनाथ गुरु मिले समरथी मान यों परख पियारा । ब्रह्म जीव ईश सब कल्पित मेरा रूप है सारा ॥ ४ ॥

॥गान ॥

राग मारग । ताल कैरवा ॥

खोजन श्याम मिलाया, सवी घर मे प्रीतम पाया ॥ टेर ॥

काशी मथुरा और द्वारका भटक भटक दु ख पाया । बद्रीनाथ केदार गये हम कोई न पीव मिलाया ॥ १ ॥ रामेश्वर जगदीश गये हम चारो धाम फिर धाया । भटके धाम काम सब त्यागे पर श्याम निजर नही आया ॥ २ ॥ वेद और ग्रन्थ पढे उपनिषद् कई ले अर्थ सुनाया । सूब सूत्र खोज हम बैठे कही निजर नही आया ॥ ३ ॥ अन्त करण च्यार जब खोजे च्यार मे तीन बनाया । तीन से दोय एक कर लीना शेष रह्या सोई थाया ॥ ४ ॥ गो अतीत गोपाल रहत नित सब है उनकी माया । माया ब्रह्म ब्रह्म सो माया माया ब्रह्म समाया ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु मिले जो साचे भेदाभेद मिटाया । मानसिह मरे नही जन्मे शुद्ध हता सो पाया ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिह इण जगत में, घर घर मे ब्रह्म ज्ञान ।
असल बात ने भूल गया, सबी बिगाडी तान ॥

॥ सवैया ॥

वसिष्ट महा मुनि श्रेष्ठ अति उनने यह बात सभी सुरझाई ।
पर गृहस्थ सन्यस्त की सुरझी नही उनही जो रखी उस मे उरझाई ।
गृहस्थ सन्यस्थ और वानप्रस्थ ब्रह्मचर्य को उनने भी फाँक पजाई ।
डूब गये यूँ जीव किते तिरने की पाज कछु ना उपाई ।
पर कृष्ण तो नेक रखी न कोई जो साफ स्पष्ट हती सो सुनाई ।
मान यह काम तो मानो बिगाड्यो जिन टीका की जो अटीका बनाई ॥

॥ सवैया ॥

वस्त्र रग्या नही कान फडाये नही मैं कान में मुद्रा चढाई ।
कगन कडा कछू नही पहर्‌या नही मैं कीनी जगत ठगाई ।
नही रुद्राक्ष तुलसी की माला नही ले चिम्मट धूणी लगाई ।
नही मै चौरासी आसण कीना नही मै समाधि की साज सजाई ।
रेचक पूरक कुम्भक नही कीना प्राण को नही तकलीफ पहुँचाई ।
नही मै कब हू भूख मर्‌यो नांही कभी मैं खूब ही खाई ।
ना कोई देव की पूजा कीनी ना कोई मेरी पूजा कराई ।
ना कभी दण्ड उठायो हाथ मे ना कभी कीनी मैं स्वान डराई ।

गृहस्थ संन्यस्त की कौन बरोबर च्यारों ही साधन एक समाई ।
अब न करूं न भरूं कब हू करण अकरण तो सब ही मिटाई ।
मान की तान गई जब ही आये गुरुदेव नाथ शरणाई ।
नाथ को हाथ लग्यो शिर पर फिर नाथ भये क्यूं अनाथ कहाई ।।

।। सवैया ।।

दौड़ ही दौड़ के जात संन्यत में जो माँग के खानों तो यहीं पर खावो ।
जो न कमाने की हो शक्ति तो माँगो भला कोई नहीं अटकावो ।
संन्यस्त करो संन्यस्त करो इन में कहा कुछ निहाल करावो ।
गृहस्थी रहो और संन्यस्त करो तो संन्यस्त को आनन्द सो तुम पावो ।
व्यवहार के बाण लगे सो सहो सब डर के दूर अलग मत जावो ।
गृहस्थ के बीच संन्यस्त बने वो ऐसो बने कि फिर न उतरावो ।।
गुरु देवनाथ ने गृहस्थ संन्यस्त को भेद हमें सत सत समझावो ।
मान को जान पड़ी जब ही इस गृहस्थ के बीच संन्यस्त कमावो ।।

।। गान ।।

राग विहाग । ताल कैरवा ।।

साधो भाई देखो लैन हमारी रे । मुड़दा सो तो मौंज उड़ावे,
जिंदा फिरत भिखारी रे ।। टेर ।।

मुड़दा सो तो भोग सब भोगे, फिर भी रहे ब्रह्मचारी रे । जिन्दा फिरता यूं सिर कूटत, मिले न एक हू नारी रे ।। १ ।। मुड़दा होय करत बादशाही, कब हू न उतरे शाही रे । जाय बादशाह उन से मांगे, वो कछु मांगत नांही रे ।। २ ।। काल को काल काल डरे उनसे, वो नहीं डरत लिगारी रे । निस दिन मौज करत वो बैठा, खोले मोक्ष दवारी रे ।।२ ।। जो आवे मुड़दा करे ताको, आप समान कर डारी रे । कीड़ा भृंग उड़ाय संग में, सोऽहं शब्द उचारी रे ।। ४ ।। देवनाथ गुरु दश में दरस्या, कर लीना भव पारी रे । कहे मानसिंह हूँ मैं मुड़दा, जिन्द ही जिन्द विचारी रे ।।५ ।।

।। सवैया ।।

जोग में भोग और भोग में जोग है जोग और भोग यह एक समाना ।
भोगी कौन तो जोगी कौन है यह दोनों मिथ्या ही ज्ञाना ।
जोगी बनूं तो विजोगी कद था यह गुरु मन्त्र कह्यो मेरे काना ।
मान को मान गयो मन तो अब मान उतर हो गयो निर्माना ।।

॥ सवैया ॥

जोगी बने जो विजोगी हुए हो हम तो विजोगी भये नही सपने ।
रोगी होय वो पिये दवाई गुरु देव हू नाथ नें काटी कल्पनें ।
मान तो जोगी स्वत ही हने जोग आध्यात्मिक पी लिये दोनें ।
मान को मान तो दूर गयो अब जागे तो कौन और को फिर सोने ॥

॥ गान ॥

राग आसा । ताल दीपचन्दी ॥

साधो मैं तो ऐसा जोग कमाया । जोग न करूँ जुगत सूं जीऊँ, नांहि गया नहीं आया ॥ टेर ॥

रेचक पूरक कुम्भक नही कीना, ना कोई श्वास हिलाया । नही मैं प्राण पश्चिम दिश घेरया, बंक नाल नही धाया ॥ १ ॥ सोहं सोऽहं शब्द नही सिमर्‌या, ना कोई श्वास उड़ाया । मेरी तार लगी अब मुझ में, यों निश्चय कर पाया ॥ २ ॥ जोग में भोग और भोग माहिं जोगी, ऐसा आनन्द सोय आया । मेरा स्वरूप मोहि बिच जाण्या, नही कोई स्वांग सजाया ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु मिल्या दया कर, जद यह योग सिखाया । सहज समाधि मान यों लागी, नहीं कोई गगन चढ़ाया ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग आसा । ताल दीपचन्दी ॥

साधो मैं तो ऐसी लगाई समाधि । चेतन हूँ और रहत समाधि में, नहीं कोई वाद विवादी ॥ टेर ॥

मुझ में जगत, जगत में मैं हूं रहना आदि मदादि । त्यागी समझ श्वास कौन रोके, कौन यह करे उपाधि ॥ १ ॥ प्रीतम प्यारी त्याग ज्यां ते, एक करी वांरी सादी । प्यारी प्रीतम एक मिल्या अब, नही होवें नाशादी ॥ २ ॥ भला जीव बैठा प्राण हिलावे, ज्यांरे मन में आग नही दाजी । मैं तो मेरा मुझ मे ही समझ्या, अब नही राजी नाराजी ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु हाथ पकड के, देव मिलायो अनादि । मानसिंह मेरा मैं ही हूँ, स्थिर भया एकण थानी ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

घर हु न त्यागे हम गये नही वन में कहीं, लीनो न सन्य ... ही रगायो है । त्याग हू को त्याग जान बैठ गयो घर में मान, मान को मार्‌यो तो महान्

वन आयो है। मान को खोय मान पावे तू जब ही मान, मान को छोड़ निर्मान ही कहायो है । कहे यूँ मान जब मान को मेट दियो, मान को मार्यो तो महान् आप ही जो पायो है ॥

॥ गान ॥

तर्ज वाणी । ताल कैरवा ॥

साधो मैं तो इण विध सिमरण कीना ॥ टेर ॥

होठ न हिले कंठ नहीं थाके सो जुगती कर लीना । स्वासा नाँय जरा दुःख पावे बिन मुख अमृत पीना ॥ १ ॥ माला न फेरी घस्या नहीं मण का कष्ट हाथ नहीं दीना । पकड़ सुरत निज माँहे रोक ली सब ही भये मत हीना ॥ २ ॥ मौन न लिवो गुफा में न बैठ्यो नहीं उपवास जो कीना । मूल कमल से दशवें तक यूँ बाजी है वेहद वीणा ॥ ३ ॥ भगवाँ भेष किया नहीं तन पर स्वांग सजाई न कीना । नारी न तजी भग्या न जंगल में घर में ही घर हेर लीना ॥ ४ ॥ परा पश्यन्ति मध्यमा बैखरी च्यार एक सी कीना । इन च्यारों का द्रष्टा हू यूँ दुविधा नेक रहीना ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मनिष्ठा देव स्वरूप कर दीना । यह सहज मानसिंह समाधि कीनी सो आतम चीना ॥ ६ ॥

॥ गाना ॥

राग काफी । ताल दीपचंदी ॥

हुवे कैसे वीर मरदाने; भारत बिच सन्त सयाने ॥ टेर ॥

कीनो राज विचार कियो जिन, पढ़ पढ़ वेद पुराणे । ज्ञान विचार धार उर माँहि, दुःख संकट नहीं आने ॥ १ ॥ गरते राज भोग सब करते, छोड़त नहीं ब्रह्मज्ञाने । मरणों याद रहतो अन्तस में, धर्म में पीठ ना दिखाने ॥ २ ॥ रामचंद्र से नीतिवान कुण, जिन ही वसिष्ठ गुरु माने । षट् प्रकरण में ज्ञान जो भाख्यो, कहां वन गमन कराने ॥ ३ ॥ त्याग ही त्याग कहे कह सब भागत, यह मति मंद अज्ञाने । राम वसिष्ट सम और कुण ज्ञानी, उण क्यों नहीं त्याग बखाने ॥ ४ ॥ गीता कही कृष्ण सबी पण, त्याग कहीं नहीं आने । जोगी कर अर्जुन ने काढ़े तो को महाभारत रचाने ॥ ५ ॥ तज हथियार अर्जुन करे भगवाँ, तो सभी काम बिगड़ाने । कहो यह त्याग काम कहा आवे, ऐसो कुण जुल्म कमाने ॥ ६ ॥ जो संन्यास देत अर्जुन को, क्यों न दियो भगवाने जो आनन्द होय संन्यस्त में, तो क्यों नहीं कृष्ण उठाने ॥ ७ ॥ यज्ञ करम जो किये होय कछु, अर्जुन क्यों न कराने । यज्ञ हवन जो करत वो वा घड़ी, तो शत्रु विजय पद पाने ॥ ८ ॥ जो कुछ करे सो ही करम कहीजे, सहज होत

शत्रु को शीश उतारण चाह्यो ह वीर तो अपनो शीश उतारे।
नृप मान कहे शिर दिया बिना नही वीर है सच्चे कहावो मारे।।

।। गान ।।

तर्ज वाणी की । ताल कैरवा ।।

साधो मैं तो यूं ले शिर धर दीना। शीश दिया फिर संशय किसगो, मुरदा माग कर लीना, मेरे सन्तो, यूं ले शिर धर दीना ।। टेर ।। मार्‌या पाच पच्चीस तीस दश, कुटुम्ब सबी क्षय कीना। उपर व्यवहार रखूं नही अन्तर, यो कर प्याला पीना ।। १ ।। सब कुछ करूँ नही कुछ भी, लखे साध परबीना। गूंगे री गत गूंगो जाणे, क्या जाणे मति हीना ।। २ ।। देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, उण से आतम चीना। मानसिह नही चढत और रग, सदा ही एक रग भीना ।।३ ।।

।। सवैया ।।

घरबारी मिलो ब्रह्मचारी मिलो वनवासी मिलो चाह मिलो उदासी।
देह ते हमको काम नही हम चाहत है सो मिलो परकासी।
और नही हम चाहत है मन चाहत है सन्त ब्रह्म विलासी।
नृप मान कहे ऐसे सन्त मिले तो छूट जाय चौरासी की फासी।।

।। सवैया ।।

मान ही ग्रस्थ सन्यस्त मिल, इन ते हम को नही काम लिगारी।
घर मे रह्यो चाहे बन मे रहो, इनले हमको कहा बात पगारी।
चाहे कचन के तख्त पै रहो, औ कचन है सो कनक रारारी।
नृप मान कहे वो तारे जरूरी, जा के उर आतम ज्ञान भरारी।।

।। गान ।।

तर्ज वाणी की । ताल कैरवा ।।

देखो जग कैसा मति मद दीवाना। कहा न्यून इस गृहस्थ के मांही,
सो सन्यस्त मे आना ।। टेर ।।

गृहस्थी राम वसिष्ठ भये गृहस्थी, गृहस्थी जनक कहाना। गृहस्थी प्रल्हाद हुतो ध्रुव गृहस्थी, गृहस्थ में राम रिझाना ।। १ ।। गृहस्थी हरिश्चन्द्र मोरध्वज गृहस्थी, कब सन्यस्त उठाना। भीष्म द्रोण सन्यस्त लियो नही, बाजे श्रेष्ठ महाना ।। २ ।। कब तक कहूँ मैं गृहस्थ की महिमा, गावत वेद पुराणा। लानत है जिन गृहस्थ असत् कर, साची न बात पिछाना ।। ३ ।। गृह सत् छोड असत् पद पकड गृहस्थ यो, को नाम लजाना। मानसिंह वे मनुष्य दुष्ट सम, वा से तो शूकर भलाना ।। ४ ।।

॥ गान ॥

तर्ज वाणी की । ताल कैरवा ॥

देखो मित्रो नारी किन्हें कव खावे । जुगती सूँ रहो तो गृहस्थ संन्यस्त सम, नारी ही नर उपजावे ॥ टेर ॥

नारी नाम सुणत ही भागे, देखो विपरीत कहावे । नारी ऐसी बुरी तो करी क्यूँ, फिर कैसे जग उपजावे ॥ १ ॥ भोला जीव भरम में अलुभया, उलटो अर्थ बतावे । है नारी और नाहरी कह के, यूँ कर जगत बहकावे ॥ २ ॥ अब उलटें को सुलटो करदो, जब आनन्द पद पावे । नारी है तो अड़े कब थाँरे, नाहरी तो नाहर उपजावे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु समरथ कहिये, सूताँ ने आय जगावे । मानसिंह कहे छोड़ असत् गृह, गृह सत् पद ओलखावे ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

नारी ही नारी कहते भगो मत ठहरो जरा कुछ बात सुनावो ।
नारी के कर्म मिटावो इन्हें और नाहरी के जो कर्म सिखावो ।
नारी नारी रखो मत इनको नारी मिटाय के नाहरी बनावो ।
नारी की नाहरी बने जब ही तब ही तुम यह सद् गृहस्थ कमावो ।
नृप मान कहे यह नाहरी छते मकदूर क्या कामी हाथ लगावो ।
आप ही कामी कुत्ते जो बने फिर नारी को नाहरी कैसे बनावो ॥

॥ गान ॥

ग सारंग । ताल कैरवा ॥

कोई है गृहसत्त निवासी, सब बने असत् गृहवासी ॥ टेर ॥

पर नारी सो मात बहन सम, समझ धरे विश्वासी । पर धन धूल समान पिछाने, ब्रह्म तेज परकासी ॥ १ ॥ ब्रह्म तेज को प्रकट करे नित, रवि सम रहे उजासी । कूड़ अविद्या चूर करे यूँ, ओलख लेवे अविनाशी ॥ २ ॥ रहे गृहस्थ संन्यासी जैसो, क्या कर सके संन्यासी । जीवन्मुक्ति गृहस्थ में जोवे, भरम भेद उठ जासी ॥ ३ ॥ उठे बैठे खावे पीवे, निमिष अलग नहीं जासी । तारो तार अड़ी रहे निशदिन, यूँ गृहस्थी संन्यासी ॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु मिले जो गृहस्थी, मेटी मन री उदासी । मान गृहस्थ संन्यस्त एक सो, अब न बनूँ संन्यासी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग मारग ।ताल कैंरवा ॥

तुम निज स्वरूप पिछानो, तुम और भिन्न मत मानो ॥ टेर ॥

स्वर्ग स्वर्ग कर भगो मती तुम स्वर्ग न कहीं ठिकानो । जीवत मोक्ष करो तो करलो आगे नही परमानो ॥ १ ॥ दूजो देव कोई नही जग में भूल भरम मत ठानो । आतम एक परमातम रूप है सो नही काहू से छानो ॥ २॥ आतम जिनने अनातम करो मत छाडो भेड बखानो । प्रत्यक्ष सिंह भेड किम केवे आ काई मन में आनो ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु कृपा करी यह ना कोई आणो जाणो । मानसिह घर बैठे मिलियो काहे को माग के खाणो ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

कवि वचन

बक कहे नृप मान तुम, बडे जबर हो आप ।
राज करो दु ख सुख नही, नही भोगो सन्ताप ॥

॥ सवैया ॥

राजा वचन

हा हा रे बक तू भूल गयो किम कौन को राज्य और कौन कमावे ।
मैं ही तो राजा प्रजा पुनि मैं ही मैं ही तो दु ख और सुख कहावे ।
कौन है दु ख और सुख है त्यागो सो मोको प्यारो ही मान मनावे ।
दु ख सुख को मूल मैं ही हूँ एक कौन को दु ख और को फिर पावे ।
नृप मान कहे कवि बक सुनो तू क्या मेरो कविराज कहावे ।
मो सग रहे फिर काचो रह्यो और राच्यो नहीं निज रग न आवे ॥

॥ कवित्त ॥

कवि वचन

जानत हूँ मैं आप हू को जानत जनाऊं फिर, काचो नही नृपति ताते फेर मैं बजायो है । काचो जो होंन तो फिर मैं पकाय देत, तुम तो शूर वीर निकस्यो क्षत्राणी को जायो है । साक्षात् प्रगट्यो अर्जुन मरुधर देश माँहि, गीता को ज्ञान अज हू न न विसरायो है । वाह रे वाह मान क्षमा करो मम अज्ञान, कह कवि बक जो कु छ भूल में कहायो है ॥

॥ कवित्त ॥

राजा वचन

भूल कहा तुम्हारी बंक साची तो पूछी मोहि, जैसी तैं पूछी तैसी बात मैं सुनाई है। या मैं नहीं भूल नेक समझो मन बीच देख, देवनाथ कृपा ते जुगति यह पाई है। तुम से कवि जो रवि के समान मिले, फिर काहे को अन्धकार जो रहाई है। रात-दिन खटकात रहत हरदम झटकात रहत, कूड़ो जो हतो नाथ करदी सफाई है। अब तो साफ मल रहित विक्षेप नहीं रंचक भर, जा पर कवि बंक तेरी होत चुटकाई है। कहे राव मानसिंह वाह वाह कवि बंक तुम, तेरी मात तोको आन अमृत हू पिलाई है॥

॥कवित्त॥

राजा वचन

चारणी के जाये में कदर नहीं इतनी होत, तू तो कोई व्यासादि अवतार धर आयो है। चारण और भट्ट जस कुजस के करणहार, क्या जो ताकत ब्रह्मानन्द रस उठायो है। मो को अचरज आत टूटी तेरी भरम रात, तू तो चारण नहीं कोई और ही कहायो है। जनम लियो तो ते भलाँई लियो बंक, पर लक्षणों को देख कोई देव बन आयो है। जामें भी चपेट मेरी आन के लगी है तोहि, जाने कोई पूर्व पुण्य आन प्रगटायो है। कहे राव मान कवि बंक तू बंक निकस्यो, नित नई बाँकी बाँकी बात जो सुनायो है॥

॥ दोहा ॥

राजा वचन

जैसे हम तैसो कवि, तैसो ही मिल्यो दीवान।
एक हतो ते च्यार भये, अब नहीं डर कछु आन॥
एक जो मुड़दा होत तो, फिर कोई मानत नाँय।
मुड़दा तणो समाज है, जीवत कौन बताय॥

॥ सवैया ॥

राजा वचन

जान्यो हतो कवि वंक है जीवत मोते ही पहिले मुड़द कहायो।
गुमान को मानत हो मन में इनको जो गुमान अभी न मिटायो।
पर ये गुमान उतारत और को अपनो गुमान कहीं दूर भगायो।
जान्यो थो मैंने कि उत्तम कनिष्ठक वो तो या में नहीं भाव रहायो।

उत्तम ने तो लख्यो निज उत्तम मान कहे अबे आनन्द छायो ।
एक ते दोय और तीन भये अब तीन हू ने हम चार बनायो ।।

।। सोरठ का दोहा ।।

मानसिंह सोरठ करी, रहे सोरठ बिच सोय ।
अब सूनो जागूं नही, ओड जतन कर जोय ।।
सोरठ मेरी सुन्दरी, मैं सोरठ का पीव ।
मान पीव जीव में मिलया, अब नही जीव नही पीव ।।
एक अरट चाले ज्याँ रे, नीर जो खूटे नॉय ।
मान कहे "सौ-रट" चले, क्यो कर जल खुट जाय ।
एक अरट की बावडी, जिण मे ही नीर अथाय ।
मान "सौ-रटाँ" सूं बन्धी, स्वप्न न खूटण पाय ।।
सोरठ सोरठ तें उडया, हाड चामरी नार ।
ज्यों शूकरी ज्यों सोरठी, क्या शोभा करे यार ।।
एक ही रटत जगाय दे, "सौ-रट" भूंडी होय ।
मानसिंह सोरठ करे वे फिर क्यो कर सोय ।।
एक ही रट कानां सुनी, मैं गया दिवाना होय ।
'सौ-रट' सुन तो मानसिंह, तो करन हाल क्या कोय ।।
म्हारे तो एक रट घणी, "सौ-रट" चहिये नाय ।
एक रट सूं धापे नहीं, चाहे लाखों वे रट जाय ।।
सोरठ सूनों जगाय दे, मैं तो मानूं नाय ।
"सौ रट" दूर है बापडी, वा तो एक ही देत जगाय ।।
म्हारे तो एक रट लगी, नही सोवण रो काम ।
थारे तो "सौ-रट" लगी, थे त्यागो नीन्द तमाम ।।

।। गान ।।

राग सोरठ गिरनारी । ताल कैरवा ।।

अगम घर जोवियो रे जोगिया, अब मैं पलटूं नाय ।। टेर ।।

मेरो मैं मुझसे मिल्यो रे जोगिया, दूजो है न कोई पाय । दरस आपरो रूप ने रे जोगिया, तन सूं मन समझाय ।। १ ।। नारी नर मुझमे नही रे जोगिया, ना कोई भाव अभाव । ग्रहण त्याग कछु ना बने रे जोगिया, शुद्ध ही शुद्ध स्वभाव ।। २ ।। है कहूँ तो ना बने रे जोगिया, नही कछु कहियन जाय । है नहीं के मध्य मे रे

जोगिया, जोयाँ आप समाय ।। ३ ।। देवनाथ सुध देव है रे जोगिया, सैनी में समझाय। मान मिले उरण सैन में रे जोगिया, क्या है किरणने बताय ।। ४ ।।

॥ गान ॥

राग सोरठ-गिरनारी । ताल कैरवा ॥

अगम री नींद में रे जोगिया, विरलाई मौज उड़ाय ।। टेर ।।

सोया असँगत नीन्द में रे जोगिया, कौन जगावरण जाय। कोई री ताकत नहीं रे जोगिया, सो ताहि सके जगाय ।। १ ।। जागे तो सोरणा नहीं रे जोगिया, सोवे तो जागे नाय । सोवरण जागरण सूं रहे परे रे जोगिया, सो निज जोग मिलाय ।। २।। स्वप्न सुपोपति जाग्रत नहीं रे जोगिया, तुरिया में सहज समाय। वेखटके री नींद में रे जोगिया, सोयाँ पीछे डर नाँय ।। ३ ।। देवनाथ गुरु देव है रे जोगिया, हाथ पकड़ ले जाय । मान गुरु शिष एक है रे जोगिया, वारणमी विलास थक जाय ।। ४ ।।

॥ गान ॥

राग सोरठ-गिरनारी । ताल कैरवा ॥

चेतन मन जोय ले रे जोगिया, सो शुद्ध जोगी होय ।। टेर ।।

नित जाग्या कँई जागरणो रे जोगिया, नहि सोया नहि सोय । सूतो कहे सोई झूठ है रे जोगिया, दीवी अकल ने खोय ।।१।। नहीं मरणों मरिया नहीं रे जोगिया, जन्मिया जन्म न होय । शुद्ध चेतनता में रहे रे जोगिया, यूं कर दृढ़ मन जोय ।। २ ।। जोगी होय बातां करे ब्रह्म री रे जोगिया, वखत पड़याँ दे रोय। हरख शोक सूं रहे परे रे जोगिया, सो निज सूं निज जोय ।। ३ ।। माला न फेरे मन्त्र ना जपे रे जोगिया, हरदम मस्त रहोय । मानसिंह उरण सन्त ने सेरे जोगिया, जीव कहो मत कोय ।। ४।।

॥ गान ॥

राग सोरठ –गिरनारी । ताल कैरवा ॥

अगम घर देश है रे जोगिया, बिना प्राण विन जाय ।। टेर ।।

मैं आसिक उण देश रा रे जोगिया, वा घर कोई न आय । उण घर वो नर आवसी रे जोगिया, जिनको जीवन नांय ।। १ ।। जीवतड़ा कई पच मार्‌यो रे जोगिया, गिणती कौन लगाय । जिण जिण मन मुड़दा किया रे जोगिया, वे अब चूके नांय ।।२ ।। चोरी करे फिर चोर नहीं रे जोगिया, अवल साहूकार रहाय । वो चोरा ने मार ले रे जोगिया असली फकर कहाय ।।३ ।। जाग्रत सुपन सुपुपति रे जोगिया, सब इण मांय समाय तुरिया में सेहजे वसे रे जोगिया, सुरत लिवी अटकाय ।।४ ।। जीव ब्रह्म कछु रयो

नही रे जोगिया, क्या हैं कछु न बताय। नामी अनामी क्या कहे रे जोगिया, बचन विलास थक जाय ॥५ ॥ देवनाथ गरु सहज मिल्या रे जोगिया, सहज में सहज समाय। मान जोग और अजोग नही रे जोगिया, वो घर पीव मिलाय ॥६ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ – गिरनारी। ताल कैरवा ॥

आनन्द निज रूप रे जोगिया, भरम जोग ने खोय ॥ टेर ॥
रेचक पूरक कुभक करे रे जोगिया, इणमे दुविधा जाय। शुद्ध समाधि होय रही रे जोगिया, दुविधा मे मुक्ति न होय ॥ १ ॥ मूल महल कुण बन्ध करे रे जोगिया, नाभ कमल कुण सोय। उल्टी बक कौण चड़े रे जोगिया, कौण मेरु ने पोय ॥२ ॥ सबही तो खुलिया पड्या रे जोगिया, श्वास हिले नही कोय। परख लियो निज पीवने रे जोगिया, यूँसन्मुख दरसण होय ॥३ ॥देवनाथ गुरु देखिया रे जोगिया, और नही दीसे मोय। मानसिह अब एक मिल्या रे जोगिया, दूजो किण बिधि होय ।४। ॥

॥ गान ॥

राग सारग। ताल कैरवा ॥

मैं तो सेवक अपने को रे सन्तो, मैं सेवक अपने को ॥ टेर ॥
गरु न चेला ए नोचे झमेला, मेरे काम नही है तपने को ॥ १ ॥ किन को राज प्रजा फिर किन की, यह तो रूप बन्यो है कल्पने को ॥२ ॥अम्ल राज तज आवे कुण इनमें यह तो ठाट सभी स्वपने को ॥३ ॥मान को जाप आप कर लीनो, अब काम नही जपने को ॥४ ॥

॥ गान ॥

राग सारग। ताल कैरवा ॥

माधो अब न्यारो ही नगर बसायो। जो कोई मिले जाने अगनु नगर के, जिणसूँ प्रेम लगायो ॥ तेर ॥
न्यारो नगर जाकी न्यारी परजा, न्यारी ही भुप सजायो। अपना राव आप ही है अब, और को डर नही लायो ॥१ ॥ऐसो नगर कदेई नही बिनसे, सहजे स्वराज्य कमायो नही ठाकुर नही चाकर किणरो अपनो ही रूप दरसायो॥ २ ॥ देवनाथ गुरु नगर के नेता कबहु दुःख नहि पायो। मान कहे रहूँ अखण्ड नगरी में खण्ड देश नही धायो ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई सो निज राज हमारा रे। क्षर अक्षर लागे नहीं कोई,
जाणे जाणन हारा रे ॥ टेर ॥

पाँचो भ्रात पकड़ के मारा, कुटुम्ब मार दिया सारा रे। साढू साली सुसराँ ने सासू, पकड़ सबी को मारा रे ॥ १ ॥ सतगुण रजगुण तमगुण तीनों, त्रिविध नाश कर डारा रे। सातूं ही सुन्न छेद कर पहुँचे, आनन्द बढ़त अपारा रे ॥ २ ॥ ओहं सोऽहं शब्द थके दोनं, ना कोई शब्द उचारा रे। नाम ने नामी लगत नहीं कोई, अपणे आप विचारा रे ॥ ३ ॥ देवनाथ ुरु मेहर करी जद, कीना शब्द उजारा रे। मानसिंह स्वतः परकाशी, मुझ से कोई नहीं न्यारा रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई शूर वीर हूँ मैं वाँका रे। मारूँ मरूँ डरूँ नहीं
किन से, जम बन्धन तोड़ नाँखा रे ॥ टेर ॥

लीनो खड्ग हाथ में अपने, इत उत काहे को झाँका रे। झपट झाट दुश्मण को मारी, ऐसा हूँ असल लड़ाका रे ॥ १ ॥ मुड़दा होवे ज्याँ ने जीवाऊँ, जीवत मुड़दा कीना रे। उलटो ज्ञान सुलट कर देऊं, उलटा सुलटा कीना रे ॥ २ ॥ ज्ञान वारूद वन्दूक नाम की, कीना शब्द भड़ाका रे। विन सिर होय सोई नर सेहवे, सन्मुख अजब तड़ाका रे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु दरसण दीना, मेटया जगत वड़ाका रे। मानसिंह मूर्धनी पर गरुधर, अपणो आप रस चाखा रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग वडहंस । ताल दीपचंदी ॥

साधो भाई सुन पर सुन घर मेरा। सुन और धुन
एक नहीं पहुँचे, सो निश्चय कर हेरा ॥ टेर ॥

परा पश्यंती और मध्यमा, ना कोई वेखरी फेरा। सात सुन्न के परे पार हूँ, ता में किया निवेड़ा ॥ १ ॥ जीव और ब्रह्म नहीं कोई माया, च्यार चौक नहीं घेरा। रेचक पूरक कुम्भक नाँही, निज निवास किया डेरा ॥ २ ॥ पांच तत्त्व तिरगुण तहाँ नाँही, ना कोई पीछा आगेरा। ज्यों का त्यों दीसे निज आतम, शुद्ध स्वरूप कर वेरा ॥ ३ ॥ कुण केवे आव जाव फिर किनको, नहीं थित थान थपेरा। मानसिंह ेई है आतम, पुदुविधा दूर निवेड़ा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह कब तक कहूँ, कही न माने कोय ।
जो मेरी कही मान ले, तो स्वपने दुःख न होय ॥
गुड़न इण संसार में, मगरो उलटो कीन ।
मतलबिया माने नही, अवर ही अवर कर दीन ॥
चाहे कैताई सूत्र ले, अर्थ उप अर्थ लगाय ।
अर्थ न आयो आपणो, तो अनर्थ सभी कहाय ।

॥ सवैया ॥

अपने अर्थ को आप लगावत, अनरथ की सब खाक उड़ावे ।
आपनो खोज जो आप करे तो, औरन खोज कोई नही आवे ।
आपही आपनो रूप सदा, अजाराजजजअजदर्शा क गणतावे ।
आप ही आप मे पाछे फिर्‌यो, तब आपही आपमें आप समावे ।
मरुधर पति मान कहे निश्चय कर, आप मिटे तो सब मिटजावे ।
आपही नाँहि मिटे अपणो, फिर औरन को कहो कैसे मिटावे ॥

॥ सवैया ॥

त्याग और ग्रहण को झोड़ पड़्‌यो, ये झोट अबे तुम दूर निवारो ।
आतम एक रहे सब मे, यह भूल करे क्यों हा हा कारो ।
साधु और गृहस्थ मे दोय लखे, तब नाँय मिलो वो पीव पियारो ।
गृहस्थ सन्यस्त नही उनमे, कहे मान वही निज पीव हमारो ॥
साधु और गृहस्थ में दोय लखे, तब नाँय मिले वो पीव पियारो ।
गृहस्थ सन्यस्त नही उनमे, कहे मान वही निज पीव हमारो ॥

॥ सवैया ॥

न्यारो ही न्यारो कहे सब ही, है न्यारो उसे अब एक मिलावो ।
न्यारे सूँ काम चले न कोई, सुख पावो जबी निज एक मे आवो ।
गृहस्थ सन्यस्त को भेद पड़्‌यो यह, भेद अबे तुम दूर भगावो ।
गृहस्थ सन्यस्त सन्यस्त है गृहस्थ सो, मान कहे परतीत ठहरावो ॥

॥गान ॥

राग आसा तर्ज वाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई तज दी मिथ्या लड़ाई। जीव ब्रह्म रो झगड़ो फालतू
है सो दियो विसराई ॥टेर ॥

क्या तो जीव ब्रह्म क्या कहिये, उलटी बात झलाई । सीधी छोड़ चल्या उलटी में, यह क्या मन में आई ॥ १ ॥ क्या है जो जीव ब्रह्म क्या है तो, थाँ ने हाथ क्या आई । जो है सोई खोजो निज घर में, मिलियाँ आनन्द सुख पाई ॥ २ ॥ है नहीं मेट जिकर यह सगरो, देवनाथ समझाई । मान रूप अपने को खोज के, भाव अभाव मिटाई ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग आसा तर्ज वाणी की । ताल दीपचन्दी अथवा कैरवा ॥

साधो तुम मत कहो न्यारो ही न्यारो । न्यारो ही न्यारो
कह सब भूला, नहीं पायो पिव प्यारो ॥ टेर ॥

न्यारो न्यारो कह मत जगत भुलावो, क्यों यह जाल पसारो । साध होय ने अज हूं रयो न्यारो, कद मिलसी मिलणारो ॥ १ ॥ शीश उतार्‌यां सूँ श्याम मिले तो, क्यों नहीं शीश उतारो । वक्त अमोल मुफ्त एलो जावे, काम कहीं आवे सिर थारो ॥ २ ॥ देवनाथ गुरु दया करी जद, मेरो तो शीश उतारो । मान गृहस्थ संन्यस्त एक मेरे, दीसे नहीं दूजो भरो ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

जीव और ब्रह्म यह नाम ही मात्र के, नाँहि मिले जिते नाम सुनावो ।
जाय मिले फिर नाम कहा, आप तो नामी अनामी कहावो ।
नामी में नाम समाय गयो, कोई दूजो नहीं जाको जाय बतावो ।
नृप मान जो अपनो हुतो, अब कहीं न गयो और कहीं नहीं आवो ॥

॥ गान ॥

राग आसा । ताल कैरवा अथवा दीपचन्दी ॥

साधो भाई ब्रह्म जीव दोनों माँई । ब्रह्म और जीव बनाये
मन के, चेतन आप शुद्ध साँई ॥ टेर ॥

ब्रह्म ही भरम और भरम जीव है, एक हू स्थिर नहीं भाई । शब्द ने वाणी परे कुछ है सो, अक्षर काँन लगाई ॥ १ ॥ ब्रह्म कह्याँ तो भरम में पड़सी, दोनों

ब्रह्म है नहीं क्या तोहे मिलसी, अध बिच में लटकाई ।। २ ।। ब्रह्म और जीव जहाँ तक दीसे, वहाँ तक शब्द पहुँचाई । शब्दातीत प्रतीत अतीत सो, तू तेरा तुझ माँई ।।३ ।। गोरख और कबीर कही यों, सन्त अनेक बनाई । ब्रह्म ही ब्रह्म करे क्या हाको, श्रोछे जन दुःख पाई ।। ४ ।। 'तत्त्वमसि" यह उर बिच धर तू, "तत् त्व" दोनों उडाई । है जो "असि" पद वो ही तू है, समझ लेवे तो सुख पाई ।। ५ ।। मुझ में देव देव में मैं हूँ, यही जो देव कहाई । मानसिंह ऐसी कर निश्चय, वृथा झोड तज भाई ।। ६ ।।

।। कवित्त ।।

ब्रह्म हू की हाक धाक मची सगरे जगत माँय, ब्रह्म निष्ठ कोडो में कोई एक दीस पायो है । बडे बडे पण्डित हेरान भये खोजत खजत, मन नाँय मान्यो ब्रह्म हाथ हू न आयो है । वाद और विवाद करत बडे बडे नित्य प्रति, तरक और वितरक में ब्रह्म को गमायो है । जैसे शराब पिये बके बेहाल होय, पिये कोई भग ज्यूं पागल सो कहायो हे । ब्रह्म छोड भरम बीच आन के गिरयो है ऐसो, जीव हू न जोयो इन ब्रह्मन कहायो है । कहे राव मानसिंह लख्यो सो चुप चाप लख्यो, ब्रह्म को लख्यो है तो नाहरी को जायो है ।।

।। गान ।।

राग सारग -मलार - । ताल दीपचन्दी ।।

क्या है यह कुरण कह सके, कहे तो क्या उरण पाया हाँ ।
नाम रूप उठै ना लगें , किन को कौन बताया ।।

जाणे सो जाणे आनन्द इसो, क्या कहूं बचन न आया हाँ । बचन कहे तो झूठ है तेरा तू, ही दरसाया ।। १ ।। मेरो तो आनन्द आप है, ऐसा कह दरसाऊँ ।। २ ।। जीव ब्रह्म मन भनिया, मान्याँ सूं दुःख होई हाँ । सरप जेवडी कुछ नही, झूठी भरमना सोई ।। ३ ।। सीप पडी मग बीच में, न्यारी कल्पना कीनी हाँ । कोई रूपो कोई रतन कहे, किणी काच कर किन्ही ।। ४ ।। जुदा मान झगडा किया, न्यारा-न्यारा लडिया हाँ । देख लीवी जब सीप ने, सब चुप होय पडिया ।। ५ ।। अखण्ड ब्रह्म जानो सीप ज्यूं, दृष्टा हूँ मैं सोई हाँ । दृष्टा दृश्य ने जाणिया, भरमना सगरी खोई ।। ६ ।। देवनाथ समरथ मिल्या, यह भ्रम दूर भगाया हाँ । सर्प जेवडी में मिल गया, रूपा सीप समाया ।। ७ ।। मान देखे क्यूं सीप ने, क्यूं तो को रतन जो भावे हाँ । [illegible] उड जावे ।। ८ ।।

॥ सवैया ॥

कहत सभी मोहे ब्रह्म बतावो, पर ब्रह्म नहीं फिर कहा बताऊं।
कूद गये दरियाव के भीतर, नीर अथाह किम थाग लगाऊं।
ताल या कूप को नीर जो होय तो, जाय तलें कुछ चीज भी लाऊं।
उपमा जिनकी दरियावत है, दरिया में कूद के फिर किम आऊं।
नृप मान कहे नहीं वरण सकूं, वरणं तो जबे दूजो दरसाऊँ।
'मेरो' 'मैं' मुझको कैसे कहूँ, सब में जो पूरण एक समाऊँ॥

॥ सवैया ॥

वाचक ब्रह्म की हाट मंडी, इन हाट में लाखों हरे सौदाई।
गये तो हते तें ब्याज को लेवण, मूल ही जाकी फेर न आई।
मूरी ठगाय गये जो दुकान में, ऐसी यह वाचक ब्रह्म हटियाई।
इण हाट के ठाट में आवो मती, ब्रह्म चीन्हो तो चीन्ह लेवो घर माँई।
मरुधर पति मान कहे सबसे, मैं तो साच हती ते सबी को सुनाई।
मानो तो मानो मरजी अपनी, यह बाण पड़ी सो तो छूटत नाँई॥

॥ गान ॥

राग कान्हड़ा। ताल दीपचन्दी॥

जीव जीव कह जगत डुवाया। ब्रह्म कह्याँ कुण पार लगाया॥ टेर॥ जीव कहे किण जन्मत जोया, ब्रह्म कहे कद मुक्ति होया। यह तो विवादी हाक मचाया॥ १॥ जीव ब्रह्म निर्णय क्या भाई, जो निर्णय हो कैसे बताई। ब्रह्म लख्या मुख वन्ध हो जाया॥ २॥ ब्रह्म और जीव एक कर लीना, कौन होता जाको यह तत्त्व दीना। काको संशय कौन मिटाया॥ ३॥ स्वतः ही सिंह सिंह क्या करना, कब था भेंड़ जिसे होय डरना। स्वर्ग नरक दण्ड कौन चुकाया॥ ४॥ जीव ने ब्रह्म पोल दोनूं भाई, हे कहताँ अहँकार उपजाई। ब्रह्म ने जीव कहो किम थाया॥ ५॥ देवनाथ गुरु है सो समाया, नित्य प्राप्त प्राप्ति किण पाया। मान "है नहीं" का ख्याल सुनाया॥ ६॥

॥ गान ॥

राग कान्हड़ा। ताल दीपचन्दी॥

नेति नेति सवी क्या गावो। है ही नहीं तो क्या तुम पावो॥ टेर॥ रूप नहीं तो दरस फिर क्याँ का, नाम नहीं मिलना क्या ताका। ऐसे देव को क्यों कर ध्यावो॥ १॥ यह सगरी है अन्ध विश्वासा, नहीं है है यह अजब तमासा। है या नहीं जाको खोज लगावो॥ २॥ लिखिया वाचे पण्डित प्रवीना,

ब्रह्म है नहीं क्या और मिनसी, अब शिव में लटकाई ॥ २ ॥ ब्रह्म और जीव जहाँ लग दीसे, जहाँ तक शब्द पहुंचाई । शब्दातीत अतीत अतीत सो, तू तेरा ढुंढ माहीं ॥ ३ ॥ शास्त्र और कबीर कही यों, मन्त्र अनेक बनाई । ब्रह्म ही ब्रह्म करे बस हाका, औंठे जल दुग्ध पाई ॥ ४ ॥ तत्त्वमसि" यह उर बिच धर तू, "तत् त्व" दोनों उड़ाई । है जो "असि" पद वो ही तू है, समझ लेवे तो सुख पाई ॥ ५ ॥ मन में देव देव में मैं हूँ, यही जो देव कहाई । मानसिंह ऐसी कर निश्चय, वृथा भीड़ तज भाई ॥ ६ ॥

॥ कवित्त ॥

ब्रह्म हू की हाक धाक मची सगरे जगत माय ब्रह्म निष्ठ कोटों में कोई एक दीन पायो है । बड़े बड़े पण्डित हैरान भये खोजत खोजत, मन नाँय मान्यो ब्रह्म हाथ हू न आयो है । वाद और विवाद करत बड़े बड़े नित्य प्रति, तरक और वितरक में ब्रह्म को गमायो है । जैसे शराब पिये बके बेहाल होय, पिये कोई भंग ज्यूं पागल सो कहायो है । ब्रह्म छोड़ भरम बीच मान के गिरयो है ऐसो, जीव हू न जोयो इन ब्रह्मन कहायो है । कहे राव मानसिंह लख्यो सो कुछ चाख लख्यो, ब्रह्म को लख्यो ते तो नाहरी को जायो है ॥

॥ गान ॥

राग सारंग-मलार - । ताल दीपचन्दी ॥

क्या है यह कुण कह सके, कहे तो क्या उण पाया हाँ ।
नाम रूप उठे ना लगे, जिन को कौन बनाया ॥

जाणे सो जाणे आनन्द रुयो, क्या कहूँ वचन न आया हाँ । वचन कहे तो झूठ है तेरा तू, ही दरसाया ॥ १ ॥ मेरो तो आनन्द आप है, ऐसा कह दरसाऊँ ॥ २ ॥ जीव ब्रह्म मन मनिया, मान्यों सूं दुःख होई हाँ । सरप जेवड़ी कुछ नहीं, झूठी भरमना सोई ॥ ३ ॥ सीप पड़ी मग बीच मे, न्यारी कल्पना कीनी हाँ । कोई रूपो कोई रतन कहे, किणी काच कर लिन्हीं ॥ ४ ॥ जुदा मान झगड़ा किया, न्यारा-न्यारा सटिया हाँ । देख लीवी जब सीप ने, सब चुप होय पड़िया ॥ ५ ॥ अखण्ड ब्रह्म जानो सीप ज्यूं, दृष्टा हूं मैं सोई हाँ । दृष्टा दृश्य ने जाणिया, भरमना सगरी खोई ॥ ६ ॥ देवनाथ समरथ मिल्या, यह भ्रम दूर भगाया हाँ । सर्प जेवड़ी में मिल गया, रूपा सीप समाया ॥ ७ ॥ मान देखे क्यूं सीप ने, क्यूं तो को रतन जो भावे हाँ । [illegible] उड़ जावे ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

कहत सभी मोहे ब्रह्म बतावो, पर ब्रह्म नहीं फिर कहा बताऊं।
कूद गये दरियाव के भीतर, नीर अथाह किम थाग लगाऊं।
ताल या कूप को नीर जो होय तो, जाय तले कुछ चीज भी लाऊं।
उपमा जिनकी दरियावत है, दरिया में कूद के फिर किम आऊं।
नृप मान कहे नहीं वरण सकूं, वरणूं तो जवे दूजो दरसाऊँ।
'मेरो' 'मैं' मुझको कैसे कहूँ, सब में जो पूरण एक समाऊँ॥

॥ सवैया ॥

वाचक ब्रह्म की हाट मंडी, इन हाट में लाखों हरे सौदाई।
गये तो हते तें ब्याज को लेवण, मूल ही जाकी फेर न आई।
मूरी ठगाय गये जो दुकान में, ऐसी यह वाचक ब्रह्म हटियाई।
इण हाट के ठाट में आवो मती, ब्रह्म चीन्हो तो चीन्ह लेवो घर माँई।
मरुधर पति मान कहे सबसे, मैं तो साच हती ते सबी को सुनाई।
मानो तो मानो मरजी अपनी, यह बाण पड़ी सो तो छूटत नाँई॥

॥ गान ॥

राग कान्हड़ा। ताल दीपचन्दी॥

जीव जीव कह जगत डुबाया। ब्रह्म कह्याँ कुण पार लगाया॥ टेर॥ जीव कहे किण जन्मत जोया, ब्रह्म कहे कद मुक्ति होया। यह तो विवादी हाक मचाया॥ १॥ जीव ब्रह्म निर्णय क्या भाई, जो निर्णय हो कैसे बताई। ब्रह्म लख्या मुख बन्ध हो जाया॥ २॥ ब्रह्म और जीव एक कर लीना, कौन होता जाको यह तत्त्व दीना। काको संशय कौन मिटाया॥ ३॥ स्वतः ही सिंह सिंह क्या करना, कब था भेंड़ जिसे होय डरना। स्वर्ग नरक दण्ड कौन चुकाया॥ ४॥ जीव ने ब्रह्म पोल दोनूं भाई, है कहतां अहँकार उपजाई। ब्रह्म ने जीव कहो किम थाया॥ ५॥ देवनाथ गुरु है सो समाया, नित्य प्राप्त प्राप्ति किण पाया। मान "है नहीं" का ख्याल सुनाया॥ ६॥

॥ गान ॥

राग कान्हड़ा। ताल दीपचन्दी॥

नेति नेति सबी क्या गावो। है ही नहीं तो क्या तुम पावो॥ टेर॥
रूप नहीं तो दरस फिर क्याँ का, नाम नहीं मिलना क्या ताका।
ऐसे देव को क्यों कर ध्यावो॥ १॥ यह सगरी है अन्ध विश्वासा, नहीं है है यह अजब तमाशा। है या नहीं जाको खोज लगावो॥ २॥ लिखिया वाचे पण्डित प्रवीना,

क्या है नहीं है जिनको नहीं चीना । पिण्ड लखो तो ब्रह्माण्ड दरसावो ॥ ३ ॥ है नहीं मध्य भाग को खोजो, मेरा तू ही है यह कर मोजो । है तो सही नहीं है नाम मिटावो ॥ ४ ॥ वेद नेति यही नहीं है झूठा, दूजो नहीं खुद आप ही टूटा । नाहक अर्थ अनर्थ न लगावो ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरुदेव गुसाईं, मेरा मैं ही मिलाया माई । मान कहे कोई मत हाय जावो ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग कान्हड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

क्या है कौन तुम्हें मैं बताऊँ । खोजन जाऊँ नाहिं मैं मिट जाऊँ ॥ टेर ॥

बरफ होती जद ऊपर छाई, भया जो नीर मैं तो नीर कहाई । किस विध खोजी का खोज लगाऊँ ॥ १ ॥ लवण की पुतली गिरी दरयाई पानी हुती पानी बीच समाई । पानी ही पानी तो और क्या ठहराऊँ ॥ २ ॥ देवनाथ गुरु ऐसा कीना, क्षर और अक्षर निवृत कर दीना । मान सकल बिच सहज समाऊँ ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग कान्हड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

यार मिले बिना यारी कैसी । ज्यों वैश्या मायाजी जैसी ॥ टेर ॥

वाचक ब्रह्म बके बहुतेरा, राचक रस कोई कोई हेरा । हेर लिया तो खुवारी कैसी ॥१॥ बिन देखल्यां सब देश बतावे, वेद शास्त्र उपनिषद गावे । मुख वाचाल बात करी कैसी ॥ २ ॥ कर पाखण्ड दण्ड कई धारा, उर्द्धासन सिद्धासन मारा । जाण लिया तो इन्तजारी कैसी ॥ ३ ॥ जो पति घर में मुख ना दिखावे, भारी व्यभिचार पर पीव रिझावे । नार पिया की बिन प्यारी कैसी ॥ ४ ॥ मानसिंह कहे समझ में न आया, भर गया घट फिर क्यों भरवाया । ब्रह्म नहीं चीन्हा ब्रह्मचारी कैसी ॥५॥

॥ गान ॥

राग सिन्धवी तर्ज हेली । ताल केरवा ॥

अगम निसाणी उण देश री, जांरी गम किम विधि होय,
म्हारी हेली ए अगम निसाणी ॥टेर ॥

आवण जावण उठे है नहीं, नहीं कोई एक न दोय । नहीं तो छाया नहीं कोई पाविया, रहे नित लोम विलोम ॥ १ ॥ इडा पिंगला सुखमण नहीं, त्रिपुटी ध्यान नहीं जोय । नहीं तो मारे मरना नहीं, ना कोई जागे ना सोय ॥ २ ॥ रूप बरण लागे नहीं, लेख न लिखना कोय । द्वादश अक्षर है नहीं, किस विध बरणे सोय ॥ ३ ॥

जीव ब्रह्म माया नहीं, ना कोई शब्द विगोय । छान्द्योग में देखलो, जो परतीत न होय ।। ४ ।। देवनाथ निज देव है, हम उन माँय समाय । मान मान वहाँ है नहीं, जहाँ तहाँ क्या पाय ।। ५ ।।

।। गान ।।

राग सिन्धवी तर्ज हेली । ताल कैरवा ।।

पाँच तत्त्व परे पार है; और पाँच तत्त्व रे माँय, म्हारी हेली ए, पाँच . ।। टेर ।।
अन्दर वाहर सरखो रह्यो, छिन्न भिन्न कछु नाँय । दूजो लखे दुःखिया रहे, एक लख्याँ सुख पाय ।। १ ।। मन बुद्धि चित्त एक है, डारे कल्पित नाम । वो ही तो जीव वो ही ब्रह्म है, वो निज सवको राम ।। २ ।। वो ही अविद्या आप है, और वो ही करत फिर नाश । माया ने ब्रह्म दूजो नहीं, माया ब्रह्म के पास ।। ३ ।। देवनाथ समरथ मिल्या, समरथ सैन समाय । मानसिह निज रूप है, दूजो कौन विध पाय ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सिन्धवी तर्ज हेली । ताल कैरवा ।।

अगम पंथी गली सांकड़ी; चढ़णो दुस्तर होय,
म्हारी हेली ए, अगम . ।। टेर ।।

जीवतड़ा नहीं चढ सके, मुड़दाँ ने परवा नाँय । जीवत मृतक दोनों तजे, सो बैठे घर पाय ।। १ ।। नहीं तो वके और चुप ना रहे, नहीं वैठे नहीं धाय । है छता वे ना रेवे, मिल गलतान समाय ।। २ ।। चाँद सूरज जहाँ है नहीं, नहीं सुखमरा को खेल । विना दीपक ज्योति जगे, अनन्त सूर को तेज ।। ३ ।। जीव विना री जीवरणो, देह विना सव काम । मानसिह सव से कहे, मेरो ही रूप तमाम ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सिन्धवी तर्ज हेली । ताल कैरवा ।।
मैं मुड़दा उरण देश रा; जन्म मरण नहीं होय,
म्हारी हेली ए, मैं मुड़दा . ।। टेर ।।

मारियाँ पीछे जन्मूं नहीं, नहीं लेऊँ गर्भ निवास । अपणो आनन्द निज आप है, कवुवन होवे उदास ।। १ ।। उरण ने देशो री उल्टी रीत है, क्या कहूँ कहियन जाय । मुड़दो खावे उल्टो काल ने, कोई छुड़ावत नाँय ।। २ ।। जीवतड़ा बोले नहीं, मुवाँ पीछे वेद सुणाय । अगम आगम गपत वाँ नहीं, क्या कहूँ लखियन जाय ।। ३ ।। पाँव विना चढ़णो पावड़ी, अंग बिन पिया मिल जाय । भूप मान साची केवे, पापी होवे सो उरण घर आय ।। ४ ।।

|| गान ||

राग सिन्धवी नर्ज हेली । ताल कैरवा ||

जाग्रत नींद में सोवणो, त्रिविधि ताप ने खोय,
म्हारी हेली ए, जाग्रत ।। टेर ।।

पांच तीन नारी नहीं मनगुरु मात न गोय । च्यार दोय के पार है, जागे सो भागी होय ।। १ ।। उतपति परले ह नहीं, बावन अक्षर नांय । षट चक्कर छेद नहीं, अष्ट दलों दल पार ।। २ ।। भक्ति मुक्ति दासी दोउं, शरणे ज्ञान विज्ञान । यह मुझमें इनमें मैं नहीं, सो सिद्ध जाण प्रमाण ।। ३ ।। सूक्ष्म स्थूल सब त्यागिया, कार्य्य कारण विशेष । ध्येय ध्याता परे रूप है यही सार उपदेश ।। ४ ।। तारमिली निज तार में, सबी तार स्वर एक । मान गल्यां निज आप में, सो निज क्रिया विवेक ।।५।।

|| गान ||

राग बिलावल । ताल तिताला अथवा कैरवा ।।

श्री तो म्हां सूं कह्यो नहीं जावे रे, है नहीं क्यों
कर कहूं हो जी ।। टेर ।।

है जो कहूं तो हद बन्धे हो जी, नहीं सूं सब उड जावे । वेद नेति कहते चुप भया होजी, हम क्या शब्द लगावे ।। १ ।। शिव सा योगी थाक गया होजी, शेष अन्त नहीं पावे । म्हारे तो मुख एक है हो जी, क्योंकर पार लगावे ।। २ ।। कह्यां सुण्यां गम नहीं पडे होजी, देख्यां ही पत आवे । बकवादी बडा बके होजी, कहतां नहीं शरमावे ।। ३ ।। वेद नेति कह थाक गया होजी, जासूं नहीं है लगावे । नेति कह्यो तो आगे कोई नहीं होजी, तेरो तू ही तो कहावे ।। ४ ।। नामी समायो नाम में होजी, अब क्या है पकड बतावे । दृष्टि अगोचर दीखे नहीं होजी फिर भी सब में समावे ।। ५ ।। देवनाथ गुरु पवन है होजी, पवन गही प[illegible]ाने । मानसिंह छूटे बन्ध सूं होजी, पवन पवन मिल जावे ।। ६ ।।

|| गान ||

राग बिलावल । ताल तिताला या कैरवा ।।

समझ सहेली मन आपणो होजी, खुद समझ्यां सुख होई ।। टेर ।।

सुणियां मुणियां सूं क्या हुवे होजी, मुक्ति मोल नहीं कोई । मोल दियां मुक्ति मिले होजी, तो ले लेवे सब कोई ।। १ ।। मानों ब्रह्म सब हो गया होजी, पुरुषारथ नें खोई । नियत करम सो चकिया होजी, भरम की गांठ सजोई ।। २ ।। कर्ता अकर्ता नें जोयलो होजी, तो बन्धन नहीं कोई । भखिया सो छिलके नहीं होजी,

छिलके जो खाली होई ॥ ३ ॥ देवनाथ समरथ मिल्या होजी, भरम दिया सब खोई । मानसिह अभिमान री होजी, खाक नहीं नहीं कोई ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज "बंगले" की । ताल कैरवा या तिताला ॥

साधो भाई मुड़दा होवे सो आय, बंगले में जीवतड़ा नहीं पाय ॥ टेर ॥

मेरा बंगला न्यारा सबसे, ज्यां विरला पहुँचे आय । कई तो पूरण पोंच गया कई, अध विच सूं गिर जाय ॥ १ ॥ ऊपर ब्रह्म जीव होय अन्दर, ज्याँ ने दीसे नाँय । समदृष्टि दिव्य दृष्टि होवत विनाई पाँव चढ़ जाय ॥ २ ॥ पक्षापक्ष जो सब ही निवारे, भेदाभेद मिटाय । सो कोई मौज करे बंगले री, फेर आवण रो नाँय ॥ ३ ॥ रूप रेख विन है ओ बंगलो, रूप होवे तो मिट जाय । मर जीवाँ रो देश है बंगलो, पांव पेवड़ी नाँय ॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, बंगले में दियो पोढ़ाय । मानसिह मेरा मुझसे मिलिया, वाहर जाय बलाय ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज "बंगले" की । ताल कैरवा या तिताला ॥

साधो भाई अधर तखत विश्राम, जिन पर खेले सुन्दर श्याम ॥ टेर ॥

अधर तखत जहाँ अधर गलीचा, प्रीतम सदर मकान । विन मुख विन सुर वैन बजत है, सुने कोई बिन कान ॥ १ ॥ विन वृक्ष विन बन एक सुन्दर, खिल रही कलियाँ तमाम । विना रूप विन नाचत गोपी, देखत मगन मन माँय ॥ २ ॥ विना कण्ठ बिन राग जो सुन्दर, गवात है विन ग्राम । विना गिरा विन शब्द उच्चारे, बोलत शुद्ध कलाम ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु भेद बतायो, मेटी अविद्या निकाम । मानसिह जब मेरा मुझ माँही, को ठाकुर को गुलाम ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग हमीर, तर्ज एली । ताल कैरवा ॥

सो ही है साधु सरमाँ ए एली, करता कुछ न कराय ॥ टेर ॥

मेरा ईश्क दुनियां रो अलग है, अलग होय तो पाय; एली । मेरा ईश्क रहे दूर न भागे, लाग रहे इण माँय । ॥ १ ॥ खेलें और अखेल रहे वो, दरद दाग नहीं ताय; एली । रहे खलक में और जुदा है, सो मस्तान कहाय ॥ २ ॥ जन्म ने मरण सबी यह मन के, मन ही देवे मिटाय; एली । मन को पकड़ कर देवे निज मन, कौन है जिनको फिर पाय ॥ ३ ॥ सब भूतन में भूत है मो में, भूत ही हमी कहाय; एली । पहिले गीता छन्दोग्य फिर, देखो दोनूं तो पत आय ॥ ४ ॥ देवनाथ

॥ गान ॥

राग सिन्धवी तर्ज हेली । ताल कैंरवा ॥

जाग्रत नींद में सोवणा, त्रिविधि नाश ने खोय,

म्हारी हेली ए, जाग्रत ॥ टेर ॥

पाँच तीन लागे नहीं, मनरह मान न मोय । च्यार दोय के पार है, जागे सो भागी होय ॥ १ ॥ उत्पत्ति परले है नहीं, बावन अक्षर नाँय । पट चाकर छेद नहीं, अष्ट दलो दल पार ॥ २ ॥ भक्ति मुक्ति दासी दोउं, शरणें ज्ञान विज्ञान । यह मुझमे इनमे मैं नहीं, सो सिद्ध जाण प्रमाण ॥ ३ ॥ सूक्ष्म स्थूल सब त्यागिया, कार्य्य कारण विशेष । ध्येय ध्याता परे रूप है, यही सार उपदेश ॥ ४ ॥ तारमिली निज तार में, सबी तार स्वर एक । मान गल्यो निज आप में, सो निज क्रिया विवेक ॥५॥

॥ गान ॥

राग बिलावल । ताल तिताला अथवा कैंरवा ॥

सो तो म्हाँ सैं कह्यो नहीं आवे रे, है नहीं क्यों कर कहूँ हो जी ॥ टेर ॥

है जो कहूँ तो हद बन्धे हो जी, नहीं सैं सब उड जावें । वेद नेति कहने चुप भया होजी, हम क्या शब्द लगावें ॥ १ ॥ शिव सा योगी थाक गया होजी, शेष अन्त नहीं पावे । म्हारे तो मुख एक है हो जी, क्योंकर पार लगावे ॥ २ ॥ कह्याँ सुण्याँ गम नहीं पडे होजी, देख्याँ ही मन आवे । बकवादी बडा बके होजी, कहताँ नहीं शरमावें ॥ ३ ॥ वेद नेति कह थाक गया होजी, जामें नहीं है लगावें । नेति कह्यो तो आगे कोई नहीं होजी, सेरो तू ही तो कहावे ॥ ४ ॥ नामी समायो नाम मे होजी, अब क्या है पकड बतावे । दृष्टि अगोचर दीखे नहीं होजी, फिर भी सब मे समावे ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु पवन है होजी, पवन नहीं प[illegible] । मानसिंह टूटे बन्ध सें होजी, पवन पवन मिल जावे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग बिलावल । ताल तिताला या कैंरवा ॥

समझ सहेली मन आपणे होजी, खुद समझ्याँ सुख होई ॥ टेर ॥

सुणियाँ सुणियाँ सें क्या हुवे होजी, मुक्ति मोल नहीं कोई । मोल दियाँ मुक्ति मिले होजी, तो ले लेवे सब कोई ॥ १ ॥ बाताँ ब्रह्म सब हो रया होजी, पुरुषारथ ने खोई । नियत करम सो बकिया होजी, भरम की गांठ सजोई ॥ २ ॥ कर्ता अकर्ता ने जोयलो होजी, तो बन्धन नहीं कोई । भक्रिया सी छिलकें नहीं होजी,

छिलके जो खाली होई ।। २ ।। देवनाथ समरथ मिल्या होजी, भरम दिया सब खोई । मानसिह अभिमान री होजी, खाक नहीं नहीं कोई ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ, तर्ज "वंगले" की । ताल कैरवा या तिताला ।।

साधो भाई मुड़दा होवे सो आय, वंगले में जीवतड़ा नहीं पाय ।। टेर ।।

मेरा वंगला न्यारा सबसे, ज्यां विरला पहुँचे आय । कई तो पूरण पोंच गया कई, अध विच सूं गिर जाय ।। १ ।। ऊपर ब्रह्म जीव होय अन्दर, ज्याँ ने दीसे नाँय । समदृष्टि दिव्य दृष्टि होवत विनाई पाँव चढ़ जाय ।। २ ।। पक्षापक्ष जो सब ही निवारे, भेदाभेद मिटाय । सो कोई मौज करे बंगले री, फेर आवण रो नाँय ।। ६ ।। रूप रेख विन है ओ वंगलो, रूप होवे तो मिट जाय । मर जीवाँ रो देश है वंगलो, पांव पेवड़ी नाँय ।। ४ ।। देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, बंगले में दियो पोढ़ाय । मानसिह मेरा मुझसे मिलिया, बाहर जाय बलाय ।। ५ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ, तर्ज "बंगले" की । ताल कैरवा या तिताला ।।

साधो भाई अधर तखत विश्राम, जिन पर खेले सुन्दर श्याम ।। टेर ।।

अधर तखत जहाँ अधर गलीचा, प्रीतम सदर मकान । विन मुख बिन सुर वैन बजत है, सुने कोई बिन कान ।। १ ।। विन वृक्ष विन वन एक सुन्दर, खिल रही कलियाँ तमाम । विना रूप विन नाचत गोपी, देखत मगन मन माँय ।। २ ।। विना कण्ठ विन राग जो सुन्दर, गवात है विन ग्राम । विना गिरा बिन शब्द उच्चारे, बोलत शुद्ध कलाम ।। ३ ।। देवनाथ गुरु भेद बतायो, मेटी अविद्या निकाम । मानसिह जब मेरा मुझ माँही, को ठाकुर को गुलाम ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग हमीर, तर्ज एली । ताल कैरवा ।।

सो ही है साध सरमाँ ए एली, करता कुछ न कराय ।। टेर ।।

मेरा ईश्क दुनियां से अलग है, अलग होय तो पाय; एली । मेरा ईश्क रहे दूर न भागे, लाग रहे इण माँय । ।। १ ।। खेलें और अखेल रहे वो, दरद दाग नहीं ताय; एली । रहे खलक में और जुदा है, सो मस्तान कहाय ।। २ ।। जन्म ने मरण सबी यह मन के, मन ही देवे मिटाय; एली । मन को पकड़ कर देवे निज मन, कौन है जिनको फिर पाय ।। ३ ।। सब भूतन में भूत है मो में, भूत ही हमी कहाय; एली । पहिले गीता छन्दोग्य फिर, देखो दोनूं तो पत आय ।। ४ ।। देवनाथ

को साथ कियो जद, सही दिया समझाय, गली। मानसिंह मेरा में मिल गया, बाहिर जाय बलाय ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग हमीर, तर्ज गली। ताल कैरवा या तिताला ॥

लखे कोई मन है रे माधो, मुड़दा बने मन मांय ॥ टेर ॥

अन्दर बाहर कछु न सूझे, एक सो नजर मोय आय, माधो। जाने सो ही जान लेवे रे, जीवत जाग समाय ॥ १ ॥ दश एकादश सब ही पढ़ लिये, अलग कोई न बताय, माधो। चतुरानन अष्टादश खोजो, एक बात समझाय ॥ २ ॥ कुछ नहीं है और सब कुछ है, यह जाणयाँ से मिट जाय, साधो। खोजण गये सो उसमें मिल गये, कौन जवाब सुनाय ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, मुझमें तुझ गल जाय माधो। मानसिंह अन्दर नहीं बाहर, यूं चुपचाप लखाय ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग, तर्ज "बाणी" की। ताल कैरवा ॥

माधो भाई है है कहूँ कि नाँही रे। है और नाँय बणे नहीं दोनूं,

क्या कहूँ कह्यो न जाई रे ॥ टेर ॥

है में नहीं नहीं में है वो, है नहीं मांय छिपाई रे। है और नाँय उडे जब दोनूं ज्यूं का त्यूं ठहराई रे ॥ १ ॥ है को भूल नहीं को भूले, अपणा आप मिलाई रे। है और नांय मिटे जब दोनूं, अब ना देत दिखाई रे ॥ २ ॥ अजपा जाप मिटे जो दोनूं, कोई जपे कोई नांई रे, चुप मुख स्थिर होय बैठ गये जब, ज्यूं गूंगे गुड़ खाई रे ॥ ३ ॥ नाम और नामी थाक गये दोनूं, नामी में नाम बिलाई रे। देवनाथ गुरु कीनी दया जब, मानसिंह दरसाई रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग, तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

माधो भाई अपर कहे सो झूठा रे। पर के दूर अपर कहु

दूजा, पीवे जहर रस घूटा रे ॥ टेर ॥

दधि और तरग जुदो कहे मूरख, दधि बिन तरग न आई रे। दधि न होन तो तरग कहाँ है, तरग बिन दधि न सुहाई रे ॥ १ ॥ तरग नहीं समुद्र कुण कहेमी, ओछा ताल बनावे रे। उठे लहर और पेट समावे, समुद्र नाम जब पावे रे ॥ २ ॥ अगनी बिना झाल फिर कैसी, झाल बिन अग्नि न होई रे। झाल धवा अग्नी सूं-होवन, इनमें भिन्न न कोई रे ॥ ३ ॥ माया ब्रह्म ब्रह्म में माया, जीव में जगत समाई रे। ओत प्रोत यूं दीखत मानसिंह, ताते न मन घबराई रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग, तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई लघु ते लघु कर जोया रे। महा बारीक मीन को
मारग, यों कर आप समोया रे ॥ टेर ॥

वाच्य अवाच्य कथन और कथनी, श्रोता श्रवण सब खोया रे। तुरिया अतीत परे पर होय के, झीणा झीण कर पोया रे ॥ १ ॥ माया उपाधि जीव ब्रह्म सब, एको दृश्य न होया रे। अनुबन्ध सम्बन्ध लगे नहीं मुझ में, नहीं कोई प्रबन्ध बिगोया रे ॥ २ ॥ तर्क वितर्क वाद अनुवादा, मुझसे एक न टोया रे। वृत्ति प्रवृत्ति निवृत्ति सब मुझ में, नहीं एक नहीं दोया रे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु मिल्या समुद्रवत, मान तरंगवत होया रे। तरँग समुद्र विच जाय समाई, रूप वर्ण नहीं कीया रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग आसा । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई क्या चेतन चेतावो । हम चेतन अपने चित माँही,
सूते नाँहि जगावो ॥ टेर ॥

जो हम सूते तो जागत नाँही, किस विध मोहि जगावो। तुमरी कहिये कौन चकारी, काल देख घबरावो ॥ १ ॥ चेत्या जिके तो एक माँहि चेत्या, अब नाहक मग़ज पंचावो। मरणो जिके चोट एक मर गया, मुफत में तीर चलावो ॥ २ ॥ युद्ध अवर सूं करणो होय तो, शस्त्र अनेक सजावो। अपने लिये कटार एक काफी, दूजो कौन बुलावो ॥ ३ ॥ आप जिये तक शूर न कहावे, अपनो शीश हटावो। खुद तो जीवत मुड़दा अवर करे, यह कछु मन नहीं भावो ॥ ४ ॥ वेदान्त और सिद्धान्त कहो तुम, कई उपनिषद गावो। निजनिन्द बिन जिय ने आनन्द नहीं, बक बक जगत बहकावो ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु मूल सभी के, सब में आप समावो। माग अर्थ तेरो ही तू है, लखे तो चुप हो जावो ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

माया कहो या ब्रह्म कहो, ये ब्रह्म और माया एक है भाई ।
माया ही ब्रह्म और ब्रह्म है माया, माया में छाया जो रहत समाई ।
माया है झूठ तो ब्रह्म कहा साच है, ये दोऊं पोल ही पोल धकाई ।
माया है झूठ और ब्रह्म जो साच है, तो किन देख के पत्री पठाई ॥

॥ सवैया ॥

यहाँ ते तो ज्ञानी और मूर्ख सभी, लद लद के गये हम भार लदाई ।
राजा महाराजा ने योगी सबी वह, यहाँ ते गये जाकी खबर न आई ।

पुराण और महातम कहे सब ही, इन मोक्ष ही मोक्ष की रौल मचाई।
यह मोक्ष कहा कोई हमें न दिखावन है, अपनी सब पेट भराई ।।

।। सवैया ।।

अन्धे को हस्ती दिखाय सभी, उण देख्यो सोही जो बतावत भाई।
कोई तो कान को सूप कहे, और कोहुक पाँव को लाठ बताई।
कोहक सूंड को देखी है, सो कहवत कूप की लाव लगाई।
देखी गयन्द की पीठ जिन्हें, पिटारे समान बनाय बताई ।।

।। सवैया ।।

ऐसी तुम्हारी है मोक्ष ये यारो, या मे मजा कुछ आवत नाँई।
जग तो सगरो यह अन्ध भयो, हमको गुरुदेव ने चक्षु दिखाई।
गुरुदेव हि नाथ कृपा करके, घर की सब पोल को दीन्ह मिटाई।
नृपमान कहे नहो आन है मोक्ष, हमारी तो मोक्ष हमी है रे भाई ।।

।। गान ।।

राग जौनपुरी टोडी । ताल तिताला ।।
सब जग मोक्ष मोक्ष ठग लीना ।। टेर ।।

तीनो लोक फिरे हम जोवन, काहू पता नहीं दीना। मोक्ष गाँव फिर दूर है कितनो, आगे ते आगे कर लीना ।। १ ।। कोहू कहे है मोक्ष स्वर्ग मे, वाँही गमन हम कीना। कोहू कहे है मोक्ष वैकुण्ठ मे, फिरत हैरान कर दीना ।। २ ।। कोहू कहे मोक्ष चौथे धाम मे, मन आई बक दीना। मोक्ष न है हनी न कभी यह, भरम जाल रच दीना ।। ३।। देवनाथ गुरु हाथ पकड के, स्वत मोक्ष कर दीना। मान कहे जो मोक्ष हमी है, हमसे अधिक नही लीना ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग गौरी । ताल तिताला या कैरवा ।।
मै मेरे रग भीना, बेहद होय मै मेरे रग भीना ।। टेर ।।

मेरा रग मोहि ने लागा, और रग नहो चीना। एक रङ्ग मे दूजो नही लागे, कागद काला कीना ।। १ ।। कान को काल बिकराल भयो अब, काल भयो आधीना। काल को पकड गाल माँहि दीनो, प्रेम पियाला भर पीना ।। २ ।। मेरी तार लगी जब मुझ से, बाजी बेहद बीना। तत्त्व मे तत्त्व समाय गये जद, कथनी मे कथन रही ना ।। ३ ।। देवनाथ गुरु मिले जो शूरमा, शीश काट धर दीना। मानसिह यूँ जीत अभय पद, जग अपनो कर लीना ।। ४ ।।

॥ गान ॥

राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई क्या नाशी अविनाशी । कौन को नाश अविनाशी कौन है,
यह है अविद्या फांसी ॥ टेर ॥

जन्मे कौन कौन फिर मरता, क्या आवे क्या जासी । नित्य प्रतीत अनित्य नहीं जहाँ, मैं क्यों रहूँ उदासी ॥ १ ॥ ना कोई हुवा नहीं कोई होवे, ना कोई होवन पासी। होन मिटन भरम यह मनके, नित प्रति रहत निवासी ॥ २ ॥ तेरा तू सबी है तुझ में, अलग कहो किम जासी। माया तू और ब्रह्म तू ही है, तेरा ही तू है विलासी ॥३॥ खंडन मंडन नाँय बणे कुछ, स्वतः रहत परकासी । मानसिंह गुरु देवनाथ कहे, मोक्ष ही मोक्ष निवासी ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई सत मिथ्या क्या गावे रे। सत और मिथ्या
परे लखो तो, कुछ निश्चय हो जावे ॥ टेर ॥

कहा है सत्त कहा है मिथ्या, को दूजा सो होवे रे । तू तो इनसे परे पार है, क्या भूलो क्या जोवे रे ॥ १ ॥ ना कोई सत्त मिथ्या कोई नाँही, ना होया न होवे रे । ज्यों है त्यों ही है तू हरदम, क्या पाया क्या खोवे रे ॥ २ ॥ को है जगत कौन तू न्यारो, कौन सो जगत् रचावे रे । तू ही जगत रचना सो तू ही, भिन्न नहीं सो पावे रे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु सत्त स्वरूपी, सो निज निश्चय दीना रे । मानसिंह यह सत और मिथ्या, भरम दूर कर लीना रे ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अपनी भूल आपे बंध्यो, और आप ही सके छुड़ाय ।
मानसिंह यों आप से, आप ही बँध्यो जाय ॥

॥ सवैया ॥

अपनी भूल ते आप बँध्यो और आप ही कहत है मोहे बँधायो ।
आप ते आप ही छूट सके पर आप करे कछु नाँय उपायो ।
आप ही स्थूल यह देह बन्यो और आप ही तो यह जीव कहायो ।
मान कहे फिर ब्रह्म है आप ही ना कोई गयो नहीं कोई आयो ॥

॥ सवैया ॥

एक ही भूल अनन्त है भूल जहाँ एक मिटे तो अनन्त मिटावे।
एक न भूल मिटे अपनी तव अवरन को कहा मुक्ति दिखावे।
अनन्त पडी सो पडी ही रहे पर एक पडी जाको क्यो न मिटावे।
तेरे तू ही को तो भूल गयो भला देखो ये भूल क्या थोडी कहावे।
वेद ने ग्रन्थ अनन्त पढो भल ,पको भूल न आप से जावे।
नृप मान वशिष्ठ और व्यास कह्यो जद आप मिटे यह भूल मिटावे॥

॥ गान ॥

राग देश । ताल कैरवा ॥

चालो ए सैयाँ आपे गिरधर ने ढूंढा हे, श्याम मिले
तो घर लावाँ हे लोय ॥ टेर ॥

घर नही बार ज्याँ ने क्यूं कर जोवाँ हे, जब से गयो नही आवे हे लोय। आवे नही तो कागद न देवे हे, निठुर भयो निरदावे हे लोय ॥ १ ॥ एक सखी कहे यूं कर मिलसी हे, वेद ढूंढत थकियावे हे लोय। ढूंढ नही जाणे तू तो भई बावरी है, सत् गुरु से युक्ती पावे हे लोय ॥ २ ॥ एक सखी कहे आगी कहाँ जावे हे, अपणो ही पड़दो उठावे हेलोय। घर माँहि गिरधर बाहर नही है हे, मन मांयलो समझावे हे लोय ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु कृष्ण हमारे है, जो सुन सहज समावे हे लोय। मानसिंह अब मिला गिरधर से हे, ना कोई आवे ना जावे हे लोय ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ रेखता ॥

राग देश । ताल रुपक ॥

चाल सखी उण देश मे, जहाँ पीव मिलसी आय रे। पीव मिलसी
दुख टलसी, जीव शीव मिटाय रे ॥ टेर ॥

राह चालो कुवध टालो, काल खाय न आय रे। पाच और पचीस पालो, भरम् भूल भगाय रे। ॥ १ ॥ पिछम पुरवा उगे सुरवा, मिटी दुरवा जाय रे। झलक झिलमिल झलकै, नुरवा, शूरमा परख लगाय रे ॥ २ ॥ थे अनाथ किये सनाथ, देवनाथ आय रे। मानसिह जग जीत जम सूं, चौथे पद परे पाय रे ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग खमाच । ताल कैरवा ॥

याको कोई न जाने रे। वो तो रहे सकल के माँय नहीं
कोई पहिचाने रे ॥ टेर ॥

वेद पढ़े पंडित यूं भूले उलटी ठान रे। अपनी भूल तो मेटे नाँही उलट फूंसाने रे। याको. ॥ १ ॥ साची बात तो कोई न केवे पड़दे छिपाने रे। साची बात जो पकड़ बतावे तो धोखे कुण आने रे। याको. ॥ २ ॥ च्यारों वरण जुदा जुदा कर न्यारी ताने रे। वेद शास्त्र तेरा तू बोले कोई न माने रे॥ याको. ॥३ ॥ देवनाथ गुरु मिलिया समरथ जद पहिचाने रे। मानसिंह इण भूल घणा दिन पड़िया पाने रे। याको. ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

इस पेची ने पेच चलाया है कैसा, पेची के पेच बन्ध्यो जग सारो।
बाँध लियो सगरे जग को, फिर पेची कौन विध रह गया न्यारो।
इनको विचार विचार के हारे, लाखों ही वेद ने ग्रंथ विचारो।
यह तो मित्र मिले जब ही कोई, पेची आन मिले पीव प्यारो।
नाथ मिले अब ही हमें पेची, जान लियो हम पेच को सारो।
मान कहे न बंधूं अबके, क्योंकि आय गयो अब पेच हमारो॥

॥ गान ॥

राग माड–आसावरी । ताल कैरवा ॥

खोजूं तो खोज्यो नहीं जावे रे; छिप बैठो कैसो; खोजूं
तो खोज्यो नहीं जावे रे॥ टेर॥

इण सूं जबर और क्या कहिये, भेलो रहे ने छिप जावे रे; छिप ॥१ ॥ गोकुल ढूंढ वृन्दवन ढूंढी, गुप्त ते गुप्त बतावे रे॥ २ ॥ है प्रत्यक्ष निजर नहीं आवे, निजराँ सूं गुप्त रहावे रे॥ ३ ॥ पूजत पत्थर बावरो हो गयो, लूंट लुटेरा मचावे रे॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु मानसिंह के, गुरु माहि शिष्य समावे रे॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग माड–आसावरी । ताल कैरवा ॥

उठते ही बेन सुनाई रे; गिरधारी म्हाँने; उठते
ही बेन सुनाई रे । ॥टेर ॥

सुबह ने शाम गिणे नहीं कुछ भी, जब जी चाहे बजाई रे; गिरधारी. ॥ १ ॥ इण बंशी में सखी सब रस भरिया, बाजत सुध बिसराई रे॥ २ ॥ बेन बजावे

और दीमन नाँही, आ चालाकी चलाई रे ।। ३ ।। रात ही बाजे और दिन ही बाजे, चुप रेवे कब हू नाँई रे ।। ४ ।। देवनाथ गुरु भेद बतायो, मान न भूले कदाई रे ।। ५ ।।

।। गान ।।

राग पहाड़ी । ताल कैरवा ।।

पिया प्यालो अगम रस पाय दियो रे । पाय दियो पाय
दियो पाय दियो रे, पिया प्यालो ।। टेर ।।
सुरत कुमारी प्रीतम प्यारी, अपने पिया ने जगाय दियो रे ।।१।।
पिव प्यारी दोऊँ एक मिले जब, अजब आनन्द छवाय दियो रे ।।२।।
चारूँ वेद और सगरे उपनिषद्, ये सब सार सुनाय दियो रे ।।३।।
मानसिंह मद छकियो हूँ मैं, मायले रो भरम मिटाय दियो रे ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग भैरवी । ताल तिताला ।।

साधो मैं तो किण संग करूँ लडाई । जो कोई मिले सो कायर मिले सब,
नाम सण्याँ भग जाई ।। टेर ।।

भागन जीव कदेई नही मारूँ, देख दया मन माही । ऊपर तो हाथ दिखाऊँ अपनो, मरण रो डर मोये नाही ।। १ ।। मरयाँ ने मारूँ तो मजा क्या आवे, वे तो यो ही मर जाई । जीवता होय सो करले लडाई, तो नही चूकूं मैं कदाई ।।२।। हार जीत तो है दोनो मे, बाजी जात लगाई । मोय मारि कोई सुरदा होयेगा, मरूँ मैं जीवताँ ने नाँई ।। ३ ।। देवनाथ मुरदा व्यापारी, आई दुकान चलाई । मान शीश उतार धरयो अब, फेर मरणे किम पाई ।।४।।

।। कवित्त ।।

बैठे जो शराबी पास करत है शराबी जाको, पास मे अफीमियो के अफीमची बनावे है । भंग और तमाकू—बाज ताके पास बैठे तो, अवश्य ही पावे या में कसर नही लावे है । गनिका के गुलाम जाको रात दिन साथ करे, आप ही गुलाम हो सदेह ना कहावे है ऐसे दुर्व्यसनियों के संग मे न चूके यार, तो हम ब्रह्म व्यसनी कैसे कर चुकावे है । पास ही न आवे तो पावे कैसे प्याला मेरा, दूर ते भगे उनको कैसे कर बुलावें है । कहे राव मानसिंह बकवादी ब्रह्म बने, असली प्याला पीये तो चुप हो जावे है ।।

॥ गान ॥

राग देश । ताल दीपचन्दी ॥

माँडी है मान दुकान, शराबी ऐसी; माँडी है मान दुकान ॥ टेर ॥
मान दुकान शराब पीये कोऊ, घर आवे पहिला मान । मान तज्याँ सूँ मान मिलेला, विगड़ेला जग सूँ तान ॥ १ ॥ मान दुकान में मान मरेला, पावेला पीव महान । मान मान बिच महान डुबायो, खो बैठा ईमान ॥ २ ॥ मान शराबी महान पियेरा, मान बिना नहीं जान । मान्याँ बिना तो आप कैसे मिलसी, मान मान अब मान ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग सिन्धु, तर्ज "लोयरण" । ताल कैरवा ॥

मैं हूँ अलबेला म्हाँने कोई मत छेड़ो हे, छेड़े जिकाँने मैं मारूँ रे लोय ॥ टेर ॥
म्हाँने छेड़्या जिके नहीं सुख पाया हैं, बोलत शीश उतारूँ रे लोय । मारूँ फिर जीवरण नहीं पावे हे, ऐसी मैं मौत विचारूँ रे लोय ॥ १ ॥ प्राण लेऊँ मैं फिर रोवण नहीं देऊँ हे, यूँ कर प्राण निकालूँ रे लोय । मेरा मार्‌या पाछा जीवे तो हे, खड्‌ग से डारूँ रे लोय ॥ २ ॥ भेख नहीं देऊँ मैं तो भगवाँ न रंगाऊँ हे, रंगियोड़ा हुवे तो उतारूँ रे लोय । गृहस्थ सन्यस्त झगड़े नहीं झगड़ूँ हे, अपने ही रूप निहारूँ रे लोय ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु मोहे मस्त कीना हे, अब न किसी से हारूँ रे लोय । मानसिंह कहे सिंह बन्या हे, मैं तो पकड़ भेड़ ने मारूँ रे लोय ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग सिन्धु, तर्ज "लोयरण" । ताल कैरवा ॥

असल शराबी मुझे मत छेड़ो हे, पीऊँ शराब रंग रलिया रे लोय ॥ टेय ॥
अर्ध ऊर्ध बिच भठ्ठी खिणाई हे, ज्ञान रतन गुण गलिया रे लोय । मन मदवे जुगत कर जोयो हे, मन निज मन होय रलिया रे लोय ॥ १ ॥ सुरत कलारी प्याला पावत है, मस्त भये दुःख टलिया रे लोय ॥ घर की कलारी भट्ठी घर में हे, इत उत काहे को फिरियां रे लोय ॥ २॥ मारूँ मरूँ डरूँ नहीं किण से हे, द्वैत का भय सब हरिया रे लोय । शूर लड़ाकू खड्‌ग उठाया हे, नहीं कुछ टाला टूली करिया रे लोय ॥ ३ ॥ तत् और त्वम् मेट दिये दोनूं हे, असि पद हम खुद बणिया रे लोय । देवनाथ गुरु मानसिंह कहे, वे आप आप में मिलिया रे लोय ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग सिंधवी, तर्ज 'एली' । ताल कैरवा ॥

पियाजी री खबर नही म्हारी एली, भार धर्‌यो शिर महान ॥ टेर ॥
खड़ी खड़ी क्या देखे आली, अपना पिय पिछान । अपना पिया आप नही जाणे, कैसे बणे रे गुणवान ॥ १ ॥ झूठो भार उठावे गैली, तुझ सी कौन अजान । कूड़ा-कचरा डार कुए बिच, हीरॉ री कर ओलखान ॥ २ ॥ वेद और ग्रंथ कहे जो सबी यं, बेहरे हो रहे कान । भई बावरी सुणे नहीं तू, बिगड़ जायगी तान ॥ ३ ॥ जो तुझ मे खोजे रिव अपना, मिट जाय खैचा तान । भूल भरम को खोय बावरी, करले निज पहचान ॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, खुल गई दिल बिच खान । मान कपट खुला उर अन्दर, परख्यो पीव महान ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह सब जग फिर्‌यो, फिर फिर भयो हैरान ।
पलट ने पाछो जोवियो, तो दूजो मिल्यो न जान ॥

॥ गान ॥

राग मालकोश । ताल तिताला ॥

सुनत सुनत हुवे बहरे कान, मेरे सुनत सुनत हुवे बहरे कान । चारों वेद
और पुराण अठारह, कहत सभी यो एक तान ॥ मेरे सुनत सुनत ॥टेर ॥
बहुत सुन्यो कोई कह्यो न दूजो, कान हो गये दरड समान । सुनतें छने भये सब बहरे जान जान सब हुए अजान ॥ १ ॥ पहली सुनी फिर करली साधना, साधन कर फिर उपज्यो ज्ञान । ज्ञान माहि भानु एक प्रगट्यो, भाग गयो सब तिमिर अज्ञान ॥ २ ॥ देवनाथ गुरु दया करी जद, आप ही आपनी कही पहिचान । मानसिंह मोहे अब न सुहावे, चुप कर लेवो यारो अपनी तान ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह इस जगत् की, लांबी राह घणी ।
दौडत दौडत थाक गया, पर राह तो यूं ही बणी ।
आगे सूं आगे कहे, जिण सूं ही आगे बताय ।
पंडित सो हुशियार यह, आगो छोडे नांय ॥
चलते चलते चल रहे, पहुँचे मंजिल आय ।
पीछे कह यह पलट के, तेरा तू ही है भाय ।
जो पहले कह देत यह, तो क्यूं इतने भटकात ।
नेति नेति कह गये, और कही नही बात ॥

॥ गान ॥

॥ गजल ॥

जिसे ढूंढते थे वह हम ही निकले; चले ढूंढणे तो हमारे हम निकले। जिसे कहते थे हम अलग वहरे शाह हैं; उठाया नक़ाब खुद खुदा हम ही निकले। कहते हो कि अल्लाह दूजा है कोई; है साफ आईना दिल अल्लाह हम ही निकले। कोई कहते थे कि तीजा और चौथा; उड़ा भ्रम देखा अनलहक़ हम निकले। कहते थे हिंदू-मुस्लिम और ईशा; निश्चय करके देखा सवका दम हम ही निकले। कह राव मान अभिमान मिटा तो; जितने क़लमाँ में जो देखा असली क़लमा हम ही निकले ॥

॥ गान ॥

गजल । ताल रूपक ॥

हमारी हमी से ये होगी फ़िदाई। हमारी विमारी और
हम ही दवाई ॥ टेर ॥

हमारे हम आशिक़ और माशूक भी हम हैं। हमारे हमी जो हुए थे जुदाई ॥ १ ॥
हमारे हमी को जो गुफ्तगू से जोया। हमारी हमी को मिली जुस्तजाई ॥ २ ॥
हमी है जो जाहिल और फाजिल भी हम है। हमी जुस्तजूए ये रोशन दिखाई ॥३॥
सभी जाँह हम है शरूरे है मेरा। सवी नूर में जो अवल नूर पाई ॥ ४ ॥
कहे मान यारो कोई मानो न मानो। हमारे तकिया और हम ही खुदाई ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

गजल । ताल रूपक ॥

उसने कहा मैं क्या करूँ, मैंने कहा तू जुल्म कर। उसने कहा कि कव तलक, मैंने कहा कि उम्र भर ॥ १ ॥ उसने कहा तू कौन है, मैंने कहा मैं फ़कीर हूँ। उसने कहा तेरा घर कहाँ, मैंने कहा कि दरबदर ॥ २ ॥ उसने कहा कुछ दरद है, मैंने कहा कि है तो हो। उसने कहा कि दवा वता, मैंने कहा कि जल्दी मर ॥ ३ ॥ उसने कहा क्या जान दूं, मैंने कहा खुशी तेरी। उसने कहा कि हुक्म दो, मैंने कहा कि जल्दी कर ॥ ४ ॥ मरूधर पति यों मान कहते, सभी से ललकार कर। इस पद का कोई अर्थ करना, पहिले सर को दूर कर ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

गजल । ताल रूपक ॥

उसने कहा तू कौन है, मैंने कहा शैदा तेरा ॥ टेर ॥

उसने कहा ग बेहया, फिर बज्म में क्यों आ गया । मैंने कहा मैं क्या करूँ, अब आ बना शाया तेरा ॥ १ ॥ उसने कहा बे चुप रह, मैंने कहा कि कत्ल कर । उसने कहा क्या दर्द है, मैंने कहा दरदी तेरा ॥ २ ॥ उसने कहा क्या मद्म है, मैंने कहा मद्मे में हूँ । उसने कहा प्याला पियो, मैंने कहा मुल्जिम तेरा ॥ ३ ॥ मरुधर पति यों मान कहले, ज्यादा कहूँ मुमकिन नहीं । तुमी भूले मैं न भूलूँ, बना हूँ मुल्जिर तेरा ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी, रेखता । ताल गजल ॥

मेरा मैं नित्य ही हूँ तो, मुझे फिर क्या मिलावोगे ।

सदा प्राप्त की प्राप्ति तुम, हमें फिर क्या दिखावोगे ॥ टेर ॥

हमेशा शुद्ध हूँ मैं तो, अविद्या क्या करे मेरा । अविद्या ह बनी मुझ से, क्या पकड़ा क्या छुड़ावोगे ॥ १ ॥ स्वयं मेरा ही मैं हूँ तो, कहो फिर कौन पावोगे । तरंग दरिया दरिया तरंग जुदा फिर क्या बनावोगे ॥ २ ॥ कहो माया है यह किसको, कहाँ से चल के आई है । मेरी इच्छा ही है माया, कहो किस तरह मिटावोगे ॥ ३ ॥ कहाँ उपनिषदों ने भी, यही वेदों ने गाया है । सबी मुझ में मैं हूँ सब में, तो दूजा क्या बनावोगे ॥ ४ ॥ मैं ही हूँ जीव ईशमाया, अनादि था फिर भी हूँगा । कहे नृप मान अमर हूँ मैं, जन्म किसका लगावोगे ॥ ५ ॥

शिक्षा और चेतावनी

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी "इंडे" की । ताल कैरवा ॥

तज दो जीव जीव अभिमान रूप निज पावना रे ।

पूछे पवन पुत्र से राम; यह तो माने भरम तमाम, भरम मिटावना रे ॥ टेर ॥

कौन हो पवन पुत्रजी आप, मुझमें सभी कहाँ प्रभाव, मिट जावे और न के भाव, ऐसे बढ़े मेरे चित चाव, सही समझावना रे ॥ १ ॥ मैं हूँ देह दृष्टि तब दास, अन्त में तेरो ही तेज प्रकाश, तोड़ दीवी भेद भरम की फांस; भयो आनंद राम के मन में हुलास, धन्य धन्य गावना रे ॥ २ ॥ सुनी यह पवन पुत्र की बात, जो है सभी सभासद साथ, ये तो करत बार्ता बात, शोक हटियावना रे ॥ ३ ॥

रयो ये सब ही उमर गुलाम; देखो कर रयो नमक हराम; बन रयो आप स्वयं ही राम; जरा न शरमावना रे ।४।। देखकर सबके मन अहकार; कहे यूं धर्मवीर अवतार; मित्रो करो रे जरा विचार; मोही में समावना रे ।। ५ ।। क्यो निज योग वशिष्ठ महान्; मानी नहीं सभा गुणवान; कैसे कह दीवी हनुमान; रोस सब लावना रे ।।६ ।। तब तो बोले आप भगवान; अब तुम सुनो वीर हनुमान; तेरो प्रगट करो ब्रह्मज्ञान; वचन कैसे गावना रे ।। ७ ।। पवन सुत दियो हृदय को चीर; देखत खड़े खड़े सब बीर; आयो नहीं रक्त को नीर; ब्रह्मांड दिखावना रे ।। ८ ।। देख्यो रोम रोम में राम; अब तो भये सबे विश्राम; कल्पना गई सब दूर तमाम; भरम मिटावना रे ।। ९ ।। देखो आतम बल बलवान; जिनमें कैसी करी हनुमान; जिनके सहायक थे भगवान; न मन घबरावना रे ।। १० ।। कहे यूं तीन लोक पति भूप; पवन सुत है तू मेरो रूप ; कहे क्या शोभा अजब अनूप; संगत फल पावना रे ।। ११ ।। कियो गुरुदेव नाथ को साथ; मिट गई जीव जीव की घात; मान अब आप में समात; आय नहीं जावना रे ।। १२ ।।

।। गान ।।

तर्ज मारवाड़ी "डंके की । ताल कैरवा ।।

तजो तजो अभिमान दूर, सतसंग चित्त लावो रे; प्रेम
से श्याम मनावो ।। टेर ।।

बिना प्रेम हरि रीझे नाँय; देखो मुफ्त में जन्म गमाय । रतन हाथ से गयाँ फेर पीछे पछतावो रे; प्रेम से श्याम मनावो ।। १ ।। अन्तर उपजे प्रेम की धार; तुम से दूर नहीं कृष्ण मरार । आप आप अपनो अपने में आप मिलालो रे । । २ ।। तोय श्याम अन्तर नहीं कोय; गीता वाक्य देखो निज जोय । सब शक्ति है एको रूप रूप ऐसो तुम ध्यावो रे ।। ३ ।। देवनाथ गरू परम सुजान, मेट दियो सगरो अभिमान । मान गीता प्रमाण सुण्यो जब आनन्द पावो रे ।। ४ ।।

।। गान ।।

तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ।।

कहूँ कहूँ क्या करे फेर करणी कब पासी रे,
उमर उल्फत में जासी ।। टेर ।।

बाल पनें में होवे न ज्ञान, तरुण पणें चढ़ जाय अभिमान । वृद्ध खाट में पड़यो रहत सिखक्यो नहीं जासी रे, उमर उलफत में जासी ।। १ ।। जग में तो जीना दिन चार नाना पंथी नें पंथ अपार । अपने रूप ने भूल मूरख पीछे पछतासी रे ।।२।।

कोई स्वर्ग कोई कहे पताल कोइ आसमाँ चौथे बतलाय। इण में भूल्यो भरम दाम गाठीरा जासी रे ॥ ३ ॥ करणो होय सो चट कर लेय, बाब अजी हिरदे धर ले। गयो स्वास जो पलट फेर पीछो नही आसी रे ॥ ४ ॥ मान कहे अब ही भयो ज्ञान, अपने रूप को लियो पहिचान। सभी जगत् ब्रह्म रूप नही आयो नही जासी रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाडी "पन्ने" की। ताल दीपचन्दी ॥

हंस वचन

समझ सुरता सुन्दरी, तू तप केणी माने नाँय ॥ टेर ॥

हंस कहे सहेलडी ए सुरता चालोनी अगमपुर माय। अगमपुरी में हंसा बसे उठे मोतियों रो चुग चुगाय। समझ सुरता ॥ १ ॥

सुरता वचन

पिया सुण सोहना, म्हारी बात धरो चित्त माय ॥ टेर ॥

सुरत कहे सुन साजना तू तो अगमपुरी मत जाय। अगमपुरी आगे गया जिके अजें हूँ आया नांय। पिया सुण सोहना ॥ २ ॥

हंस वचन

पोच्याँ पछे क्यूँ आवणो ए सुरता आयो तो पोच्या जाँय। आवण जावण ने मेटियो ए सुरता ओई रे अगम पुर पाय ॥ ३ ॥

सुरता वचन

अब जावो तो पहिला क्यूँ छोड़ियो रे पिया ओ म्हाने कारण बनाय। छोड दियो तो अब क्या जावणो रे पिया अब क्यो जोडे नगर सती जाय ॥ ४ ॥

हंस वचन

तै ही तो पकडने लावियो ए सुरता मैं तो आवत यहाँ नाय। होय इच्छा उर में फुरी ए सुरता पकडने लियो रे बुलाय ॥ ५ ॥

सुरता वचन

खोटी जाणो तो पिया पास लियो क्यूँ ले अब मन पछताय। अब पछतायाँ क्या होवे रे पिया रहूँला आप रे मांय ॥ ६ ॥

हंस वचन

तुम हम दोनो साथी आदि के ए सुरता आज काल के नाँय। मैं ब्रह्म हुआ जब तुम हुई ए सुरता इच्छा प्रगटी मो माँय ॥ ७ ॥

सुरता वचन

देश अगम न्यारो किसो रे हंसा कहाँ है देश जहाँ जाय। तुम हम हम तुम एक है अब दूजो है कोण सो मिलाय ॥ ८ ॥

हंस वचन

साची कहे तू सहेलड़ी या में नेक फरक कछु नाँय। निज स्वरूप ने जोय लो ए सुरता ओ ही निज नगर कहाय ॥ ९ ॥

कवि वचन

साचो पद निज पावियो अब दोऊँ मिल चुप होय जाय। भरम हुँ तो जिते भभकतारे अब कोई मुख बोले नाँय ॥ १० ॥

हंस वचन

देवनाथ गुरु से मिल्या उठे मान सुरत समझाय। गुरु शिष्य दोनों एक है, अब दूजो दीखे नाँय ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

तर्ज-मारवाड़ी "पन्ने" की। ताल दीपचन्दी ॥

सूती सुख नींद में, आछो जन्म गमायो हे ॥ टेर ॥

फिट फिट हे तने बावरी प्रीतम नहीं पायो हे। रतन पदारथ मानखो मूरख मुफ्त लुटायो हे ॥ १ ॥ जनम अनेकों तू फिरी प्रीतम नहीं पायो है। इणमें पिया ने नहीं पहचाणियो ये तो हार गमायो है ॥ २ ॥ अमृत रस ने छोड़ियो थें तो विष रस खायो है। अज हु बावरी तू समझले एड़ो मौको आयो हे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु समरथ मिल्या म्हाँ ने सही समझायो हे। मान पहुँच निज देश में ऐसो नगर बसायो हे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी "पन्ने" की। ताल दीपचन्दी ॥

देख्यो रे आतम राम ने म्हारे दूजो न आवे दाय।
देख्यो निज श्याम ने म्हारे दूजो न आवे दाय ॥ टेर ॥

सुपने में सखी आय मिल्यो म्हारी दीवी नींद उचटाय। आँख खुली तो दाख नहा रम गयो म्हारे नेणाँ रे माँय ॥ १ ॥ पलक उघाड़ूँ तो दीखे नहीं सखी मीचूँ तो अंखियाँ रे माँय। क्या मैं करूँ इण सूँ हार गई म्हारो वस कछु चाले नाँय ॥ २ ॥ मन्दिर मन्दिर हेरिया सखी लियारे शिवलाय हेराय। और ठौर ओतो दीखे नहीं सखी दीखे म्हारे हिरदे रे माँय ॥ ३ ॥ जो मिलसी सखी घर में मिले ए ओ तो

बाहिर मिल्सी नाय । बाहिर भटक्यां नहीं मिलेरे सखी गैब धका यम खाय ॥४॥ देवनाथ गु० यों कही म्हारे परदे ने दियो हे उठाय । मानसिंह की ममता मरी अब प्रीतम हिरदे लगाय ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी "कलारी" की । ताल कैरवा ॥

प्याला भर दे सुघड कलार हे कलारी । कोई
चौजी भट्टी रो दारू पायदो हे राज ॥टेर ॥

म्हारो पद मुँगो घणो अनमान हो मस्ताना । कोई शीश उतारे ओ मद पीव सी हो राज ॥ १ ॥ भला फिकर कियो सिर रो थे हे कलार हे कलारी । मैं तो तन मन और प्राण भी थाने सौंप दिया हो राज ॥ २ ॥ धीरा बोलो चतुर सुघड मस्तान हो मस्ताना । कोई जोर सूं बोल्या तो कोई सुण लेव सी हो राज ॥ ३ ॥ ओ नही है चुपके छाने रो काम हे कलारी । कोई छाने पावे तो ऐसो मद ना पियाँ हो राज ॥४॥ ओ तो दोरो पीणो चौथी भट्ठी मत आय हो मस्ताना । ए तो केई पीता ही दूग सूँ मर गया हो राज ॥ ५ ॥ म्हाँने जीनो पलक नही है विचार हे कलारी । म्हे तो मरगो तेवडने इण घर आविया हो राज ॥ ६ ॥ अति दोरो पीणो अमली मद हुल जाय हो मस्ताना । ओ तो पीया उपजेला थाने कुम-कुमी हो राज ॥ ७ ॥ अरे पाँच पचीस चूर करों म्हे साफ हे कलारी । म्हे तो मन मस्ताने ने करसाँ बावरो हो राज ॥ ८ ॥ थे बैठो बैठो आय ने घर रे माय हो मस्ताना । ओ तो पड़दे बैठो ने ओ मद पीय लो हो राज ॥ ९ ॥ म्हे तो पीसाँ पीसाँ मदर बाजार हे कलारी । एती पडदे पीये सो मदवा चोरटा हो राज ॥ १० ॥ पड़दे पीणो पोकटियाँ रो काम हे कलारी । ओ तो सीस देवां ने छाने क्या पीवां हो राज ॥११॥ म्हां ने पीया मिलिया देवनाथ भगवान हे कलारी । म्हे तो जद रे जगाई सूनी आग ने हो राज ॥ १२ ॥ थेपीयो पीयो दिल भर दारू आय हो मस्ताना । ओ तो साकट शराब तो सुगने सती पीयो हो राज ॥ १३ ॥ गावे गावे मानसिंह कर जोड़ हो मस्ताना कोई एडो मद पीवो सो नर शूरमा हो राज ॥ १४ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी "रगड़झगियाँ ले" की । ताल कैरवा ॥

समझ सहेली घर आय, मिलनो प्रीतम से ॥ टेर ॥

सखी बहुत रही भटकिया गांव, मिलनो प्रीतम से । सखी छोड परे रो दूर, मिलनो प्रीतम से ॥ १ ॥ सखी घणा दिन हौया घर ना मिल्यो, मिलनो प्रीतम से ।

अवे सतगुरु मिल्या दयाल, मिलनो प्रीतम से ।। २ ।। सखी अब तो भरम तम मेट, मिलनो प्रीतम से । उठे होय पिया जी सूँ भेंट, मिलनो प्रीतम से ।। ३ ।। सखी मार पड़ी ए बहुत दिनाँ मिलनो प्रीतम से । अब फेर मार मत खाय, मिलनो प्रीतम से ।। ४ ।। सखी नीच योनि बहुत ही मिली, मिलनो प्रीतम से । अब मनुष्य जन्म अवतार, मिलनो प्रीतम से ।। ५ ।। सखी छोड़ो कुल अभिमान, मिलनो प्रीतम से । जद मिलसी आतम राम, मिलनो प्रीतम से ।। ६ ।। सखी नाथ जलन्धर सहाय करे, मिलनो प्रीतम से, म्हाँने देसी जरूर मिलाय, मिलनो प्रीतम से ।। ७ ।। सखी देवनाथ रहे साथ, मिलनो प्रीतम से । अब झेल्यो मान रो हाथ मिलनो प्रीतम से ।। ८ ।।

।। गान ।।

तर्ज मारवाड़ी "जल्ले" की । ताल कैरवा ।।

उठो म्हारी सैयाँ प्रीतम प्रेम लगावो हे, उठे दुःख मिट जाय;
उठो म्हारी सैयाँ प्रीतम प्रेम लगावो हो राज ।। टेर ।।

बहु दिन बीता भरम भूल रे माँय हे, उठे रेया दुःख पाय; बहु दिन बीता भरम भूल रे माँय हो राज ।।१।। ढूंढ्या ढूंढ्या पंथा पंथ अनेक हैं, उठे रेया उलझाय; ढूंढ्या ढूंढ्या . ।। २ ।। भाग भला जब दरस्या है निज श्याम हे, भागा भरम तमाम; भाग भला जब . ।। ३ ।। टूट्यो टूट्यो द्वैत रूप अभिमान हे, उपज्यो निज ज्ञान, टूट्यो टूट्यो द्वेत . ।। ४ ।। नहीं मोरे मन में विप्र क्षत्री अभिमान है, तोड़ी कुल काण; नहीं मोरे मन में . ।। ५ ।। नहीं अब मेरे वैश्य शूद्र वर्ण चार हे, हरग्या द्वैत् विकार; नहीं अब मेरे . ।। ६ ।। ना कोई मेरे राजा नाँय वजीर हे, मिट गई यह पीर; ना कोई मेरे . ।। ७ ।। सत्गुरु मिलिया देवनाथ मस्तान हे, पिया प्याला मान, सतगुरु मिलिया ।। ८ ।।

।। गान ।।

तर्ज मारवाड़ी "जल्ले" की । ताल कैरवा ।।

चालो सन्तों निज आतम घर देश रे, म्हारा हरि जन लाल;
चालो सन्तों निज आतम घर देश हो लाल ।। टेर ।।

पियो म्हारा सन्तो अजर सुधा रस पान रे, मेटो अभिमान; पियो म्हारा. ।। १ ।। पीवत प्याला अजब नशा चढ जाय रे, फिर उतरे नाँय; पीवत. ।। २ ।। ब्रह्म नशे विच होय रहा चकाचूर रे, भागो भ्रम दूर; ब्रह्म नशे. ।।३।। अब थाक गया तहाँ ज्ञान और विज्ञान रे, लियो रूप पिछान; अब थाक. ।। ४ ।। देवना गुरु मिल्या मोय गुण खानी रे, गुरु विच रहे मान; देवनाथ . ।। ५ ।।

॥गान॥

राग सारंग—मल्हार, तर्ज "निहालदे" की। ताल कैरवा॥

अब तो जागो रे हम मेवासियो हो राज॥ टेर॥

सूता तो जागा रे हमा नींद मर, शिर पर खेले बैरी काल। समझ समझ मन बावरा रे खोये मुफ्त मन लाल। खोये मुफ्त मन लाल, अब तो जागो रे हम मेवासिया हो राज॥ १॥ नींद नींद में खोय दिवी रे, मनुष जन्म री लाज। मनुष जन्म एलो गयो रे, कियो न मनुष पण काज। कियो न मनुष पण काज, अब तो जागो रे॥ २॥ खाणो पीणो और साय रेणो रे, खर कूकर में भी होय। विषय काम जग में बसे रे, थां में अधिक क्या कोय। थामें अधिक क्या कोय, अब तो॥ ३॥ काम करो ऐसो काई रे, जग जस भूले नांय। मरियां ही खुशबू रेवे रे, वचन पड्या खटकाय। वचन पड्या खटकाय, अब तो॥ ४॥ सजनां सूं मिलता रेवो रे, बैठो नही खटकाय। बिन कारण रेहणो देव ज्यूं रे, निर्मल नीर कहाय। निर्मल नीर कहाय, अब तो॥ ५॥ सिंह तुरत भभके नही रे, छेड्या छोडे नांय। बातें गाटे भभकना रे, वे असलीनर नांय। वे असली नर नांय, अब तो॥ ६॥ मान कहे कोई बीर हे रे, सांई रसीला राज। खेल करे और न्यारा रेवे रे, ज्यांरा सरिया काज। ज्यांरा सरिया काज, अब तो॥ ७॥

॥ गान॥

तर्ज मारवाडी "सावन के गीतो" की। ताल कैरवा॥

रतन को ऐसे मत हारो। मनुष्य जन्म अवतार मिले ओ
नहीं बारम्बारो॥ टेर॥

खाणो पीणो भोग रहणो सरे यह पशुवो मे होय, मना रे यह पशुवो मे होय। मनुष्य जन्म की कौन अधिकता करलो सब ही जोय। रतन को ऐसे मत हारो॥१॥ मनुष्य जन्म की यही अधिकता कर लीजो पहिचान, मना रे कर लीजो पहिचान। और जनम मे बने नही ये मौजी आतम ज्ञान। रतन को ऐसे मत हारो॥ २॥ विषय विकार वस्तु यह जग में सबी जन्म मे होय, मना से सबी जन्म मे होय। मनुष्य जन्म की यही तत्व है लहे जो आतम जोय। रतन को ऐसे मत हारो. ॥३॥ देवनाथ के साथ सूंमरे मिट गयो भरम अन्धार, मना रे मिट गयो भरम अन्धार। मानसिंह यूं आप आप मे हुवा जो बेडा पार। रतन को ऐसे मत हारो. ॥४॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी "रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे उत्तर थाँ ने देऊँ मनवा ॥ टेर ॥

हाँ रे मनवा तू तो भूल गयो है। रतन छोड़ कर काच गह्यो है; काँई रे. ॥१॥ पतिव्रता नार सुध बुद्धि ने छोड़ी । कुवध कुपात्र के पाने गयो है ॥ २ ॥ ज्ञान अमृत तैं कदेय न पीयो । विषय शराव विच मोय रह्यो है ॥ ३ ॥ भली रे करी थाँने आ कांई उपजी । सिह छताँ क्यूं भेड़ थयो है ॥४ ॥ इण जड़ महल मत माँय भूल्यो । निज आनन्द सब भूल गयो है ॥ ५॥ मानसिह गुरु देवनाथ कहे । क्यों भ्रम अंधेरे में भूल रह्यो है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

तर्ज मारवाड़ी, "कोरे काजलिये" की । ताल कैरवा ॥

मन पोल पन्थ मत जाय, पीछे पछतासी ॥ टेर ॥

पोल पन्थ में दुःख घणो । अलूझ्यो तो सुलझे नाँय, पीछे पछतासी ॥१॥ सत् पुरुषाँ रे सँग रहो । जो देवेला मार्ग बताय; पीछे पछतासी ॥ २ ॥ एक एक की खैंच बुरी । तू इण में ही रुल जाय; पीछे पछतासी ॥ ३ ॥ जनक वशिष्ठ और विश्वा-मित्र से । उन ऋषियन गुण गाय; पीछे पछतासी ॥ ४ ॥ कृष्ण और अर्जुन से ज्ञानी । जिन गीता अमृत पाय; पीछे पछतासी ॥५॥ देवनाथ सिमरथ मिल्या । मान आय नहीं जाय; पीछे पछतासी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग झिझोटी । ताल पञ्जावी तिताला ॥

उठ जाग सखी रस चाख जरा, पिया प्रेम पियाला पावत है ॥ टेर ॥

भरम नींद में सोय पड़ी कुछ, चिन्ता चित हू न लावत है। काल वली शिर आय तेरे, वो तो जंगी ढोल बजावत है ॥ १ ॥ और नहीं कोई वक्त मिले यहाँ, क्यों तू देर लगावत है। प्रेम पियाला पियो चट से तू, क्यों नहीं प्यास बुझावत है ॥ २ ॥ गँगा जमुना गोकुल मथुरा फिर, मूढ़ धक्का क्यों खावत है। वृन्दावन और बरसाणे, नन्दगाँव गली क्यों फिरावत है ॥ ३ ॥ इण में स्वप्ने नहीं श्याम मिले, यह गुण्डन गोल मचावत है। रे रे इन ठग फंदन में, क्यों नाहक लाज गुमावत है ॥ ४ ॥ है ज्ञान विज्ञान यह प्याले दोऊ, क्यों न श्वासो श्वास चढ़ावत है। विवेक नशो घट छाय रहो, वैराग पिया मिल जावत है ॥ ५ ॥ राग द्वेष से रहित हुई, फिर नारी न पुरुष कहावत है। जहाँ मूध-नी देश वशी मथुरा, तहाँ कृष्ण

सिवा न कोई पावन है ।। ३ ।। मरुधर पति मान स्वत तू है, फिर काहे गुलाम कहावत है । सिर मे पिव होय गयो सगरो, अब नारी ने पुरुष उडावत है ।।७।।

।। गान ।।

राग मँगल ।। ताल दीपचन्दी ।।

प्यारी ए म्हां रे घणा दिन सोय, नींद से जागिए । प्यारी ए
निरख पिया जी को देश, मारग निज लागिए ।। टेर ।।

प्यारी ए मन में अविद्या री गान, अलग परित्यागिए । प्यारी ए छोड दियो है निज पीव, विषय रस पागिए ।। १ ।। प्यारी ए जाण्यो नही थारो पीव, फिरत भागी भागी ए । प्यारी ए सिर पर छतो रे सवाग, फिरत क्यो दवागी ए ।। २ ।। प्यारी ए सर्व सवागन ज्यूं होय, औरा रे सग लागी ए । प्यारी ए ओलखे नही निज भरतार, विषय रस छाकी ए ।। ३ ।। प्यारी ए देवनाथ समझाय, एक नही मानी ए । प्यारी ए मान व्यभिचारण नार, उमर खाक छानी ए ।। ४ ।।

।। दोहा ।।

मानसिह इण जगत में, मन सूं हुआ हैरान ।
पल्लो छूट पापों कटह्यो, जद उपज्यो ब्रह्म ज्ञान ।।
कनक कामिनी जगत में, दु ख नही व्यापे मोय ।
मानसिह यह मन बुरो, देख दियो केई रोय ।।
मान हस थोडा मिले, मिले घणासा डोड ।
यां हसां रे रूप में, डोड बढायो झौड ।।
बक कहे सुन मानसिह, डोड हस नही होय ।
हस रूप बुगला हुए, पलट कहो कुछ जोय ।।
ध्यानी तो बुगला जिसा, पण करणी मे है काग ।
मान कहे कवि बक सुन, सोच थक्यो मैं वाक ।।

।। कवित्त ।।

मान वचन

ओछा और लाबा आडा तिलक करत कई, कण्ठी रुद्राक्ष तुलसी चन्दन को सरावे है । हाथ हू में माला मोटी राम राम रणूं कार, जगत को देखाय शब्द जोर से सुनावे है । नस नस नाच रही शीश नही ठहरे पलक, होठ जो हिलात जैसे ऊंठ मुह हिलावे है । जैसे होंठ हिले ताते मन तो अनन्त गुण, होंठ तो बिचारे थक जाय तो रुकावे है । मन बेईमान ओ तो मरिया पीछे भूत करत, ऋषि

महर्षियन की शान जो गमावे हैं। देवनाथ हाथ जोड़ आप हू से कहूं नित, काहू ते डरे नहीं मान मन ते घवरावे है ।।

।। कवित्त ।।

गुरु वचन

रे रे मान नांहि डर धीर धर धीर धर, ऐसे क्यों घवरावे अन्त क्षत्राणी को जायो है। मन हू न रुके तो तें शत्रु कैसे रुके लाल, तुच्छ चपुरी मन ताको देख घवरायो है। ठहर ठहर भाग मत ठहर रे जरा तू मान, रे रे तैं डर के मात दूध को लजायो है। लहे शमशीर तीर हाथ देऊं तेरे अब, ताकत कहा जो मन चुलकन पायो है। करके निशान बाण मार मान ऐसो तान, खाक उड़ जाय ताकी ख़ाक हू न पायो है। सिंहनी को जायो होय भेड़ से डरे तू मान, मेरो कान फूँको मन्त्र यों ही तैं गमायो है ।।

।। कुण्डलिया ।।

मानसिंह संसार में, मन रो एक उपाय ।
तू मजबूती पकड़ ले, तो मन फिर कहीं न जाय ।
मन फिर कहीं न जाय, जाय तो जान दे भाई ।
इण सूं सरे न काम, गयो ज्यूं पाछो आई ।
तू लारे भाग्यो फिरे, जिण सूं छोड़े नांय ।
मानसिंह इण जगत में, मनरो एक उपाय ।।

।। गान ।।

राग खम्भाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ।।

साधो भाई मन की न कछु जबराई । वृथा ही दोष देत या मनको,
पुरुषारथ कुछ नाईं ।। टेर ।।

पांव ने पंख कछु नहीं याके, कहो किम दौड़ के जाई । बैठो संकल्प करे उर ही उर, आप ही फिरत भगाई ।। १ ।। जैसे भिक्षुक राज चाहत है, ताको कौन दिलाई । कर युक्ति कछु करत काज तो, भिक्षुक राज कमाई ।। २ ।। मन तो चाहत जहर खान को, बिन खाये प्राण न जाई । आप न करे तो करे कहा मन, यामें शक्ति कछु नाईं ।। ३ ।। देवनाथ गुरुदेव कृपा कर, साची बात समझाई । मानसिंह कहा करे मन बपुरो, जो तू न कर्म कमाई ।।४।।

॥ गान ॥

राग खम्भाच तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ॥

मैं कब तक भूल बताऊँ, साधो कब तक भूल बताऊँ ॥ टेर ॥

मन मन कह सब अलसे बैठे, क्यों कर देश दिखाऊँ। अपनो दोष स्वीकार करे नहीं, कहि विध श्याम मिलाऊँ ॥ १॥ मन के मते आप होय चाले, तब होय इसके चावो। जो इसके मते नहीं चाले, तो क्यों कर दुःख पावो ॥ २ ॥ जो तुम मन के मग नहीं चालो तो, क्यों कर कूप गिरावो । सार असार विचार जोय लो, परमानन्द सुख पावो ॥ ३ ॥ मन को प्रेरक आप ही है और, उसको दोष लगावो । मानसिंह हेरो तू जाने, तो सकल भरम मिट जावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग काफी-कान्हड़ा । ताल तिताला ॥

बिन पुरुषारथ जन अटके ॥ टेर ॥

निज शक्ति को राखत नाँही, मन मन कर कर भटके । जो पुरुषारथ निज को राखत, चालत है बेखटके ॥ १ ॥ निज आतम में जाय समावत, जिनको मन नहीं पटके । देवनाथ गुरु हाथ पकड के आननीद से झटके ॥ २ ॥ मान कहे मन करे क्या मेरो, पीऊँ ब्रह्म रस गटके । अपनो आप पिछाण लियो अब, मारे नहीं मन नटके ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग आसा, तर्ज "वाणी" की । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई बिन जाण्यां दुःख पावो । पास में गाव मारग नहीं लाधे,
फिर फिर गये जहां आवो ॥ टेर ॥

मन मन करत अनन्त जुग भटको, कदे न ऊँचा आवो । नहीं मन माने नहीं घर पावो, ह्यों ज्यों ही रह जावो ॥ १ ॥ भूला भूला कहवे सकल जग, समझया जिके तो मग आवो । मूरख भूल्या पण्डित क्यों भूलो, अपणो तो भूल भगावो ॥ २ ॥ पिण्ड ब्रह्माण्ड जाकी खबर करो नहीं, थोथा पंडित कहावो । पोथी पुराण पढ़्या ने पोल रही, फिर फिर जगत बहकावो ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु मिले ब्रह्म निष्ठा, ब्रह्मानन्द पद पावो । मान कहे मानो तो मरजी, क्यो इतो जुल्म कमावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग मालकौश । ताल तिताला ॥

अस भूल तजो मन मेरा । भूल भूल विच वहु दिन भरम्यो,
फिर्‌यो चौरासी फेरा ॥ टेर ॥

अपनी भूल आप से मेटो, कर पुरुपारथ गैला । हिम्मत हार होय मत मूरख, पीछे विपत पड़ेला ॥ १ ॥ दीखत जगत भूल है सगरो, सब स्वरूप है तेरा । तुझ ते छिन्न भिन्न नहीं कोई, मिले समुद्र जल गहरा ॥ २ ॥ एकभूल में अनन्त भूल है, गिणताँ गिणत थकेला । एक मिटे तो अनेक मिटे सब, निज स्वरूप निरखेला ॥३॥ देवनाथ गुरु समरथ कहिये, समरथ तू ही वनेला । कर आलस मत सोय मूढ तू, चाल्याँ पंथ कटेला ॥ ४ ॥ देवनाथ कहे करे पुरुपारथ, जब निज भाग गहेला । मानसिह तेरो तू चाले, तो निज पद सुख ले ला ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग सारंग । ताल कैरवा ॥

मन मेरा छोड़ जुल्म म्हारा भाई । जालिम जुल्म करे बहुतेरा,
लाज शर्म कछु नाँई ॥ टेर ॥

वेद ने ग्रन्थ साख देवे सगला, छोड़े क्यों न मकराई । दौड़्यो जाय विषय भठ्ठी में, मूरख माने नाँई ॥ १ ॥ सीधी तरह मानो मेरे मनवा, छोड़ परी हलकाई । अव हम तुम से वदल गये तो, स्वप्ने ही मानेंगे नाँई ॥ २ ॥ देवनाथ जुल्मी उन देश के, जहाँ पहुँचे कोई नाँई । मानसिह है दास उन्हीं का, अब तुम से डरपूं काँई ॥ ३॥

॥ गान ॥

राग_माँड—आसावरी । ताल कैरवा ॥

मत होय माया में राजी रे मूरख मन, मत होय
माया में राजी रे ॥ टेर ॥

माया तो मान एक छाया थारी, दोय दिन मत बन पाजी रे; मूरख मन. ॥ १ ॥
माया री खेल फैल ज्यों उड़सी, आखिर तू ही रह जासी रे; मूरखमन. ॥ २॥
माया है जिनकी जिनमें मिल जावे, तू तो शिर धुन धुन पछतासी रे ॥ ३ ॥
वहुत दिन भटक्यो ने वहुत भटकसी, इण रो अन्त नहीं आसी रे ॥ ४ ॥
पीछे त्यागसी तो पहिले ही त्याग दे, राम होवेला जद राजी रे ॥ ५ ॥
मानसिह मन मान मत हीना, इण में खराव होया जी रे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे मित्रो सुनो, मेटो सब अभिमान ।
इन अभिमान के बीच में, बिगड जायगी तान ॥
कर कर के अभिमान तैं, करदी मोटी हान ।
अपने रूप को भूल के, पूजन लागो आन ॥

॥ सवैया ॥

मान थके झगरे झगरे यह मान मिटया बिन कोई न मिटावे ।
मान ही मान के बीच फसे इन मान ही मान मे डूबन जावे ।
महान लख्यां बिन मान मिटे नही सगुन निगुन कर मान बकावे ।
मान कहे जब मान मिट्यो वो सगुन और निगुन तो एक कहावे ।
नृप मान को मान गयो सगरो यो मान के बीच महान समावे ।
मान की तान महान लगी जो महान समाय तो आन न पावे ॥

॥ गान ॥

राग हमीर । ताल रूपक ॥

मन अब त्याग रे अभिमान । या अभिमान के बीच में,
अब होत मोटी हान ॥ टेर ॥

मान भर भर जन्म धर धर, हुवो ना हैरान रे । देह धन को मान मन में, चाहत है कल्याण ॥ १ ॥ देवल देवल देव पूजा, बहुत दीनो दान रे । तैं तो मुक्ति मोल लीनी, पर दे सके नही कौन ॥ २ ॥ मोल साटे मोक्ष मिलती, छोडता फिर कौन रे । मान मुक्ति आप हू से, और से मत जान ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

तर्ज "बाणी" की । ताल कैरवा ॥

माधो भाई देखो अकल गमाई । कुकर्म करण में तो करत बरोबरी,
शुभ करमां सूं हट जाई ॥टेर॥

सत् पुरुषां जो राह दिखाई, चित्त मे धरे कोई नाई । बांकी बरोबरी कैसे करें हम, कैसी यह उलटी गमाई ॥ १ ॥ श्रद्धा करे नही सत् वचनो पर, ऐसी हिम्मत हराई । वो तो समरथ थे होड क्या, उनकी, यूं कर जहाज डुबाई ॥ २ ॥ गुरु करे ज्यूं कभी न करणो, ऊपर छाप लगाई । कहे ज्यूं करणो राखे बधन मे, देखो जीव फसाई ॥३॥ प्रथम तो साच कहे न सुनने हू, जो भूल ते आय जाई । वो तो समरथ थे छाप या ऊपर, जीव यूं दबते जाई ॥ ४ ॥ हुवे तो साध सद् मारग तांई, उलटो मग पकडाई

करमों के बंध छुड़ावन आये, उलटा अणूता बंधाई ॥ ५ ॥ आप तो बंध्या और वांधे सबन को, भारत भूमि डुबाई । स्वारथ छुरी सूं हलाल करे जग, समझो निपट कसाई ॥ ६ ॥ मान है सेवक उण साधाँ रो, सर्वात्म मन भाई ॥ ७ ॥

॥ गान ॥
राग झिझोटी । ताल पंजाबी तिताला ॥

कह कह के हारे हम एक हू न माने रे । जानी नही जावे सब
अपनी मत ताने रे ॥ टेर ॥

औरन की तो कहिये कहा, पंडित भी मूरख भये यहां; पढ़ते छते ही वे अविद्या नित ठाने रे ॥ १ ॥ ब्रह्म ब्रह्म बोले वाक, कहे जग को कर कर हाक; तेरे को न एक लाग खाली खाक छाने रे ॥ २ ॥ औरां ने सगरी समझावे, अपने अंग एक ही नहीं आवे; करता विवाद मारो मार मचाने रे ॥ ३ ॥ कहे मान बन के सिंह, भेड़ की जो चाले चाल; आय शरम सिंह चरम गर्द्ध को ओढ़ाने रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥
राग झिझोटी । ताल पञ्जाबी तिताला ॥

सूते थे अचेत नींद, अब के जगायो रे ॥ टेर ॥
जन्म अनेक सोये, कोई न जगायो मोये; जाके पड़्यो पाने ते ही भरम कैफ पायो रे ॥ १ ॥ पूर्व पुण्य प्रगटे आय, सद्गुरु दी निद्रा उड़ाय; नींद हूं से जाग्यो जद मेरो रूप पायो रे ॥ २ ॥ विषय कैफ खूब पीयो, जहाँ मैं गयो तहाँ ही दीयो; जन्म अनेक पायो सुख हू न आयो रे ॥ ३ ॥ पत्थर हू में मार्यो बाण, देवनाथ कर निशाण; मान हू को गयो मान महान् बन धायो रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥
राग गिरनारी सोरठ । ताल कैरवा ॥

सूता सारंग धर जोग में रे जोगिया, क्यों कर सारंग जमाय ॥टेर ॥
सारँग लखे सारँग पियाँ रे जोगिया, रहूँ नित सारँग मांय । मीठी रँग आ सारँगी रे जोगिया, मो मन घणी सुहाय ॥ १ ॥ पाँच प्राण पाचूं कोश है जोगिया, इन्द्री दश के लार । एक मन दूज वुद्धि वसे रे जोगिया, ए तार बाईस सुणाय ॥ २ ॥ उत्तम मध्यम कनिष्ठ है रे जोगिया, है तीनूं ही ग्राम । सातूं भोम सो सप्त सुर रे जोगिया, जिण पर लियो मैं विश्राम ॥ ३ ॥ आवत जावत रो गज कियो रे जोगिया, स्वासो ही स्वास चलाय । ओहँ सोहँ री रागणी रे जोगिया, सुणियां मन स्थिर हो जाय ॥४॥ सारँगधर सारंगी वजे रे जोगिया, इण सारङ्ग लियो बुलाय ।

॥ दोहा ॥

मान कहे मित्रो सुनो, मेटो सब अभिमान ।
इन अभिमान के बीच में, बिगड जायगी तान ॥
कर कर के अभिमान तैं, करदी मोटी हान ।
अपने रूप को भूल के, पूजन लागो आन ॥

॥ सवैया ॥

मान थके सगरे झगरे यह मान मिट्या बिन कोई न मिटावे ।
मान ही मान के बीच फसे इन मान ही मान मे डूबन जावे ।
महान लख्यां बिन मान मिटे नही सगुन निगुन कर मान बकावे ।
मान कहे जब मान मिट्यो थो सगुन और निगुन तो एक कहावे ।
नृप मान को मान गयो सगरो यो मान के बीच महान समावे ।
मान की तान महान लगी जो महान समाय तो आन न पावे ॥

॥ गान ॥
राग हमीर । ताल रूपक ॥

मन अब त्याग रे अभिमान । या अभिमान के बीच में,
अब होत मोटी हान ॥ टेर ॥

मान भर भर जन्म धर धर, हुवो ना हैरान रे । देह धन को मान मन मे, चाहत है कल्याण ॥ १ ॥ देवल देवल देव पूजा, बहुत दीनो दान रे । तै तो मुक्ति मोल लीनी, पर दे सके नही कौन ॥ २ ॥ मोल साटे मोक्ष मिलती, छोडता फिर कौन रे । मान मुक्ति आप हू से, और से मत जान ॥ ३ ॥

॥ गान ॥
तर्ज "बाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई देखो अकल गमाई । कुकर्म करण में तो करत बरोबरी,
शुभ करमां सूं हट जाई ॥टेर॥

सन् पुरुषां जो राह दिखाई, चित मे धरे कोई नाँई । बांकी बरोबरी कैसे करे हम, वैसी यह उलटी समाई ॥ १ ॥ श्रद्धा करे नही सत् वचनो पर, ऐसी हिम्मत हराई । वो तो समरथ थे होड क्या, उनकी, यूं कर जहाज डुबाई ॥ २ ॥ गुरु करे ज्यूं कभी न करणो, ऊपर छाप लगाई । कहे ज्यूं करणो राखे बधन मे, देखो जीव फसाई ॥ ३ ॥ प्रथम तो मान कहे न सुपने हू, जो भूल ते आय जाई । वो तो समरथ थे छाप या ऊपर, जीव यूं दबने जाई ॥ ४ ॥ हुवे तो साध सद् मारग तांई, उलटो मग पकडाई ।

करमों के बंध छुड़ावन आये, उलटा अणूता बंधाई ।। ५ ।। आप तो बंध्या और बांधे सबन को, भारत भूमि डुवाई । स्वारथ छुरी सूं हलाल करे जग, समझो निपट कसाई ।। ६ ।। मान है सेवक उण साधाँ रो, सर्वात्म मन भाई ।। ७ ।।

।। गान ।।

राग झिझोटी । ताल पंजाबी तिताला ।।

कह कह के हारे हम एक हू न माने रे । जानी नही जावे सब
अपनी मत ताने रे ।। टेर ।।

औरन की तो कहिये कहा, पंडित भी मूरख भये यहां; पढ़ते छते ही वे अविद्या नित ठाने रे ।। १ ।। ब्रह्म ब्रह्म बोले वाक, कहे जग को कर कर हाक; तेरे को न एक लाग खाली खाक छाने रे ।। २ ।। औराँ ने सगरी समझावे, अपने अंग एक ही नहीं आवे; करता विवाद मारो मार मचाने रे ।। ३ ।। कहे मान बन के सिह, भेड़ की जो चाले चाल; आय शरम सिंह चरम गर्द्ध को ओढ़ाने रे ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग झिझोटी । ताल पञ्जाबी तिताला ।।

सूते थे अचेत नींद, अब के जगायो रे ।। टेर ।।

जन्म अनेक सोये, कोई न जगायो मोये; जाके पड़यो पाने ते ही भरम कैफ पायो रे ।। १ ।। पूर्व पुण्य प्रगटे आय, सद्गुरु दी निद्रा उड़ाय; नींद हूं से जाग्यो जद मेरो रुप पायो रे ।। २ ।। विषय कैफ खूब पीयो, जहाँ मैं गयो तहाँ ही दीयो; जन्म अनेक पायो सुद्ध हू न आयो रे ।। ३ ।। पत्थर हू में मार्यो बाण, देवनाथ कर निशाण; मान हू को गयो मान महान् बन धायो रे ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग गिरनारी सोरठ । ताल कैरवा ।।

सूता सारंग धर जोग में रे जोगिया, क्यों कर सारँग जमाय ।।टेर ।।

सारँग लखे सारँग पियाँ रे जोगिया, रहूँ नित सारँग माँय । मीठी रँग आ सारँगी रे जोगिया, मो मन घणी सुहाय ।। १ ।। पाँच प्राण पाचूं कोश है जोगिया, इन्द्री दश के लार । एक मन दूज वुद्धि वसे रे जोगिया, ए तार बाईस सुणाय ।। २ ।। उत्तम मध्यम कनिष्ठ है रे जोगिया, है तीनूं ही ग्राम । सातूं भोम सो सप्त सुर रे जोगिया, जिण पर लियो मैं विश्राम ।। ३ ।। आवत जावत रो गज कियो रे जोगिया, स्वामी ही स्वास चलाय । ओहँ सोहँ री रागणी रे जोगिया, सुणियाँ मन स्थिर हो जाय ।।४।। सारँगधर सारंगी वजे रे जोगिया, इण सारङ्ग लियो वुलाय ।.

सारंग नारणने मारियो रे जोगिया, सारँग प्राण गमाय ॥५॥ सारँग भर शाह रंग भई रे जोगिया, अब सारंग मिलिया आय। मानसिंह शाहरंग चढ्यो रे जोगिया, अब दूजो चढसी नांय ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

साध सदा पर कारज को बह आप तिरे औरन हीं तिरावे।
मत मिथ्या उपदेश सुना कर ब्रह्म को रूप जो सहज बनावे।
रह मन मस्त सदा मुडई और क्या है मजाल यह मन सुलकावे।
आपणो रूप सभी को जो देखे चर्म दृष्टि स्वप्ने नहीं आवे।
मान कहे ऐसे साधुन के हर वक्त हमेशा गुलाम रहावे।
स्वाङ्ग पाखण्ड के दण्ड धरे उनको सिर पै नहीं छाप लगावैं ॥

॥ कवित्त ॥

कारज पराये साध अपने को साधे कहा, कारज पराये साधे साधु बन जायगो।
आप हू तिरे तारे तारक ना कहलात यार, तारे कईयन को तो तारक कहलायगो।
भरम हू के ब्रह्म बने जीव को न जाने भेद, ब्रह्म ब्रह्म कह कई जीवो को डुबायगो।
कहे राव मानसिंह सच्ची यह बात कहूँ, झूठो एक एक बके यों ही डूब जायगो।

॥ गान ॥

राग सारंग । ताल केरवा ॥

आप मिले क्या पावो। गूंगे होय रहावो ॥ टेर ॥

तुमको मिले लाभ औरन क्या, और तो यो ही रहावो रे। आप ही मिलो औरन को मिलावो, आशिक सत्य कहावो ॥ १ ॥ तुमने जोया इसे हमें क्या, हमें स्वाद क्या आवो रे। आप समान करो जब हमको, तब ही सन्त कहावो ॥ २ ॥ जहाज होय और तिरे एकलो, क्यों तारक नाम धरावो रे। आप तिरे तारे औरन को, पर उपकार दरसावो ॥ ३ ॥ नाम खेवैया तार नही जाणे, भूत के नाम परावो रे। साध होय कारज नही साधे, जीवां ने देत डुबायो ॥ ४ ॥ तारण जीव सन्त अवतारा, गुरु देवनाथ समझावो रे। मानसिंह अब शरण सन्त की, चाहे तो पार लगावो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सोरट सोरट सब करे, एक रट जाने नाँय।
सो—रटनो तो कहाँ गयो, एक ही दियो मिटाय ॥

सो–रट कहनो छोड़ दे, एक ही रट धुन लाय।
मान सो–रट चूल्हे पड़ी, एक ही पार लगाय ।।
एक रटनो तो रटे नहीं, सो–रट हेला देत।
मान सो– रट ने खोजताँ, जनम सभी खो देत ।।

।। गान ।।

राग सोरठ—गिरनारी । ताल कैरवा ।।

मारग दुस्तर घणो रे जोगिया, विरला हरिजन जाय ।। टेर ।।

मुड़दे देश माँहे जावणो रे जोगिया, जीवता क्यों कर जाय। ऊपर बैठा ब्रह्म बके रे जोगिया, जीव भाव उर माँय ।। १ ।। नहीं जग सूँ त्याग ने रेवे रे जोगिया, पकड़े भी कछु नाँय। त्याग ग्रहण से रहे परे रे जोगिया, सो ही निश्चय पद पाय ।। २ ।। वेद शास्त्र उठे है नहीं रे जोगिया, किण री अमल कमाय। वो तो घर कुछ और है रे जोगिया, जावे सो उण में समाय ।। ३ ।। सूत्र मूत्र माँहे खोजलो रे जोगिया, है भी मिले नहीं माँय। पिंड नहीं खोज्यो आपणो रे जोगिया, तो कैसे ब्रह्मण्ड दरसाय ।।४ ।। चौथे पद पर मूर्धनी रे जोगिया, मुड़दा गांव बसाय। मान राव उण देशरो रे जोगिया, कोई अन्य देश री नाँय ।। ५ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ–गिरनारी । ताल कैरवा ।।

लखो निज श्याम ने रे जोगिया, जद जरसी थारो काज ।। टेर ।।

सत रङ्ग लेवो सांवलो रे जोगिया, तज दो उपरला माज। काम उपरला नहीं आवसी रे जोगिया, विगड़ जाय निज राज ।। १ ।। जोग फ़कीरी तो झीणी घणी रे जोगिया, क्या कहूँ कही न जाय। महा वारीक सूक्ष्म अति रे जोगिया, कहन कथन में नहीं आय ।। २ ।। जोग जुगति कछु ओर है रे जोगिया, वहुत परे की बात। वड़ा वड़ाई गिर पड़्या रे जोगिया, औरों री कोण चलात ।।३।। पाँच पचीसों मारलो रे जोगिया, सहज ही जुड़े समाध। मन ने पलट निज मन करो रे जोगिया, जद निज आनन्द आत ।। ४ ।। देवनाथ गुरु पूरा मिल्या रे जोगिया, दियो सब भरम मिटाय। मान फ़कीरी अमल करे रे जोगिया, नकल में ध्यान मत लाय ।। ५ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ–गिरनारी । ताल कैरवा ।।

समझ निज रूप ने रे जोगिया, कच्चो जोग मत पाल ।। टेर ।।

जोग करे जुगती नहीं रे जोगिया, रहे मन उल्टा ख्याल। मन जुगती चीन्ही नहीं रे जोगिया, निशदिन फिरे वेहाल ।। १ ।। इड़ा पिङ्गला सुखमण नहीं रे जोगिया,

नहीं कोई ख्याल विचाल। सान सुन लागे नहीं रे जोगिया, तहां किम पहुँचे काल ।।२।। दण्डासन सिद्धासन नहीं रे जोगिया, रेचक पूरक नाँय। कुम्भक की गणना नहीं रे जोगिया, सहज समाधि पाय ।। ३ ।। नित्य प्राप्त प्राप्ति कहा रे जोगिया, जागी जाग मिलाय। मान आप आपणो लग्यो रे जोगिया, अब दूजो को दरसाय ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ – गिरनारी ताल कैरवा ।।

परख निज रूप में रे जोगिया, निज आतम तत्त्व लेव ।। टेर ।।

बिना पथ बिना चालणो रे जोगिया, बिना देही बिना देव। देखो अपणे पीव ने रे जोगिया, तन दिन करणी सेव ।। १ ।। तीन च्यार पच दश नहीं रे जोगिया, नहीं दोय नहीं एक। अष्टादश सपार हैं रे जोगिया, नहीं है रूप नहीं रेख ।। २ ।। तेरो तुझ में रेवे रे जोगिया, , दूजो कोई न कहे। दूजो कहे सोई झूठ है रे जोगिया, खोज्या नाहि मिले ।। ३ ।। देव नाथ समरथ मिल्या रे जोगिया, अब नहीं संशय सहज समाधि मान कह रे जोगिया, जुगति सू जोया मिले ।।४ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ – गिरनारी। ताल कैरवा ।।

रूप मांही आपणो रे जोगिया, तज दो दूजा भेष ।। टेर ।।

स्वांग फकीरी नहीं धारणो रे जोगिया, उलट करो परवेश। मारो नी मन निज मांयलो रे जोगिया, ले सतगुरु उपदेश ।। १ ।। मन समझावो थारो मायलो रे जोगिया, ले मेटे राग अर द्वेष। राग द्वेष मिटसी नहीं रे जोगिया, तो दूर रैवेला वो देश ।। २ ।। निजानन्द के रूप में रे जोगिया, शूरा करे परवेश। मन मार्यो ज्यांरो मांयलो रे जोगिया, नहीं है राग लवलेश ।। ३ ।। देवनाथ गुरु समरथ मिल्या रे जोगिया, अब क्यों रहे रे अन्देश। मान मिल्यो निज रूप में रे जोगिया, नहीं दाना दरवेश ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ तर्ज फकीरी। ताल दीपचंदी ।।

फकीरी महा वीरां सूं होय। ताती ताव घाव सिर लागे,
कायर देवे रोय ।। टेर ।।

लागे चोट खोट जद निकसे, फिर क्यों कर रेवे सोय। जो सोवे तो जागे नाहिं, फिकर रेवे नहिं कोय ।। १ ।। लियो खड्ग धरे नहीं पाछो, करणी सो कर जोय। मरणो होय तो मरण ने चालो, मारे नो जीत्या सोय ।। २ ।।के तो मारे के मरजावे, रण में काम ही होय। मानसिंह दोनू हुयं करणी ऐसो काम सिर जोय ।। ३ ।।

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज फ़कीरी । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरी शीश दिया तो फिर क्या रोय । जिसने शीश दिया है अपना,
अब नहीं पलटे कोय ॥ टेर ॥

अलमस्तान रहे नित मन में, कवहूं न उपजे दोय, । शूरवीर को खेल फकीरी, नित-जागे नहीं सोय ॥ १ ॥ महा बारीक मीन को मग है, पाँव लगे नहीं कोय । चाले संत पंथ जो जाणे, गाफल देवे रोय ॥ २ ॥ शीश उतार धरचो चरणो में, और भेंट नहीं होय । सतगुरु भेंट शीश री लेवे, दियाँ मेट देवे दोय ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के देश दिखाया मोय । मानसिह निज माणकमिलियो, विन डोरे विन पोय ॥ ४

॥ गान ॥

राग सोरठ तर्ज फकीरी । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा है कोई अहिया शूर । धार फकीरी दिलगीर नहीं
वे, हरदम रेवे चकचूर ॥ टेर ॥

ब्रह्मज्ञान को शोर भरचो रहे, जाणे अपणो नूर । हर्ष ने शोक कभी नहीं व्यापे कवहूं न उतरे शरूर ॥ १ ॥ शूर वीर सो लेवे फकीरी जाने परणो होय मंजूर, गृहस्त संन्यस्त एक सो ही समझे, डारी अविद्या पर धूर ॥ २ ॥ देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मनिष्ठा, पायो पद भरपूर । मानसिह अव अदल फकीरी, ममता के गुण रहे मजूर ॥३॥

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज फ़कीरी । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा जीवत मृतक समान ॥टेर ॥

प्राण रहे और वोले नाँही, श्वास नहीं जिम जान । मुड़दा मस्त पड़या नहीं चुलके, ए निज सुध सेनाण ॥ १ ॥ शाह के शाह फ़कीर फकीराँ, काल के काल पिछान । ब्रह्मा विष्णु डरे वा नर सूं, इन्द्र विचारो कौन ॥ २ ॥ क्रोडो ब्रह्मा कोडो विष्णु, क्रोडो शंकर जान । ऊभा हाथ अनन्ताँ ही जोड़े, पर वे तोड़े नहीं तान ॥ ३ ॥ सव कुछ देखे निजर नहीं आवे, अपर धरे नहीं ध्यान । अखिल ब्रह्मांड रूप निज देखे, दूजो भाव न आन ॥ ४ ॥ जीव ब्रह्म मन सव खो वैठा, वे पहुँचे परियाण । वाण निर्वाण नहीं वाँरे एको, कहन मात्र सव मान ॥ ५ ॥

।। गान ।।

राग सोरठ, तर्ज फकीरी । ताल दीपचन्दी ।।

फकीरा जीवता दीसे जाणे भूत । मारण मरण डरे नहीं किण सूं,
देख्यां डरे जमदूत ।। टेर ।।

होय बेपीर तोर ने मामाँ, कमर कसे मजबूत । करणी करम गत कौन विचारी, ऐसो मारत सभी के सिर जूत ।। १ ।। माला कंठा कुछ नहीं पहरे, बाँध लेवे मत सूत । बेपरवाह परवाह रेवे किणरी, अलमस्ता अवधूत ।। २ ।। ब्रह्म भंडार भरया रेवे निशदिन, ज्याँ रे खूटे नाय अखूट । ज्याँरो डर माने जगदीश्वर, ए मुडदा जावे नहीं रूठ ।। ३ ।। देवनाथ गुरु साथ कियो जद, मिल गये भूताभूत । मानसिंह जद सिंह टोल माहे, नाथ दीसे रजपूत ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ । ताल कैरवा या तिताला ।।

मस्तानाँ रो न्यारो है पन्थ, चाले सो कोई मस्तानाँरो न्यारो है पन्थ ।। टेर ।।

न्यारो वेद और षट् शास्त्र से, लेत न सम्या या री अन्त । न्यारो ही खेल ज्याँरो मार्ग ही न्यारो, न्यारो ही बचत वेदान्त ।। १ ।। औरां री तो पन्थ चाले आसरे, ओ तो ऐसो अधर उडन्त । वहतो न दीखे और मारग चाले, प्राण बिहूणा सन्त ।। २ ।। दूजा लोग जीवता बोले, ए तो मूआं बाद कहन्त । वा मरदाँ सूं काल भय माने निकट आवे तो डकरन्त ।। ३ ।। देवनाथ गुरु मस्त जो मिलिया, मो को डकारयो बिन दन्त ।। मानसिंह मौज मुडदाँ री, जीवनाँ सूं चौगुणी उडन्त ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सोरठ, तर्ज फकीरी । ताल दीपचन्दी ।।

फकीरा कुण जाणे जोगियाँ री रीत । प्रीती करत पलट जावे
पल में, ए तो साय बने बिपरीत ।।टेर ।।

जोगी कहे जगत सूं न्यारा, एनो चाले सबे जग जीत । साजे जोग और नही आवे, निश दिन रेवे निचीत ।। १ ।। वाँ मस्ताँ सूं काल रेवे डरतो, वे तो गावे विरह रा गीत । जग तो डरे ज्याँ री गिणत कौनसी, पण राम होय भयभीत ।। २ ।। नाम लियाँ डर लागे मोय तो, देख्याँ उठे शीत । कामी कूकर ते डरें नहीं सैं, कोई मिले रणजीत ।। ३ ।। देवनाथ गुरु अजब मस्ताना, जिन शीश लियो इण रीत । मान मुडद उण दिल में ही सीनो, तोडो भरमना री भीत ।। ४ ।।

॥ सवैया ॥

हाल फकीर मिल्यो न जबी तक स्वाँग फ़कीरी को भेख सजानो।
स्वाँग फकीरी में नाँहि मिले सुख पावो जवे सुख आप में आनो।
और पाखण्ड अनेक करो निज देव अखण्ड न नेक मनानो।
मन आय जिते तित डोलो भले यूँ स्वाँग देखानो और जगत रिझानो।
देव हू नाथ दयालु मिले जिन हाल फ़कीरी को हाल वतानो।
मान को रंग लग्यो अपनो अव और को रंग न नेक चढ़ानो॥

॥ गान ॥

राग कल्याण ताल कँरवा ॥

सजो रे अब चालो साधो जूने देश ॥ टेर ॥

उण तो देश माँहि पाँव विना चलणो नहीं, चहिये उठे भेप। कर तकरार मती चालज्यो, पटकेगा पकड़ ने केश ॥१॥ नहीं जहाँ अमीर फकीर नहीं है, नहीं दाता दरवेस। अगम निगम से पार परे है, खोजो तो पास मिलेस ॥ २ ॥ वाँया जीवणा मुलक काल रा, कस रह्या जाल अनेक याँ तो जालाँ में मति आवज्यो, नुगराँ तणो आदेश ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु साथे अपणे, वाँ रो ले उपदेश। मानसिंह जाय गुरु में समावे, नहीं है भेप न लेश ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग । ताल कँरवा ॥

साधो भाई अव तो भरम उड़ावो रे। वंधिया जीव फेरे
मत वांधो, उलटी ना पकड़ावो रे ॥ टेर ॥

पक्षापक्ष दूर करो मन से, निष्पक्षी होय आवो रे। पक्षापक्ष सूँ काम विगड़सी, आप तो डूवो ने डूबावो रे ॥ १ ॥ पन्थ अनन्त गिणत नहीं आवे, कव तक गिणत ही जावो रे। पक्षापक्ष में देश सव डूवो, कोई साची न वात वतावो रे ॥ २ ॥ भरम उड़ाय रहो निस्प्रेही, सूते जीव जगावो रे। निज स्वरूप को निश्चय करके, मनको कलंक हटावो रे ॥ ३ ॥ स्वारथ हेत करो मत वाताँ, इण में नफो न पावो रे। पूछे जाव जवाव न आवे, कालो मुख करवावो रे ॥ ४ ॥ जागत छताँ नींद में सोवो, मन में नहीं शरमावो रे। नेक विचार करो तुम मन में, जाण जहर मत खावो रे ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु समरथ कहिये, पूर्व पुण्य से पावो रे। मान पोल यह चली घणा दिन, अव मत पोल चलावो रे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई बिना मौत बिन मरिये रे । मौज अकाल मौत
मत मरिये, इण दोनो सूं ई टरिये रे ॥ टेर ॥

बिना खड्ग बिन शीश उतारो, रक्त बूंद नही गिरिये रे। एक बून्द जो रक्त पड्यो तो, नाकोई जन्म जो धरिये रे॥ १॥ नही गडणो नही पडनो जल मांहे, बिन लकडी बिन जरिये रे। खाक ने कोयला नजर न आवे, यों करके गति करिये रे॥ २॥ इण विध जर तो मरे नही कब हू, फेर किसी से नही डरिये रे। रूप ने रंग अरु नाम घटावे, मोक्ष मोक्ष री करिये रे॥ ३॥ देवनाथ गुरु साथ कियो तो, सब भय दूरा हरिये रे। मानसिंह होय जायो सिंह को, भेडाँ रे भेलो क्यं चरिये रे॥४॥

॥ गान ॥

राग सारंग–मल्हार, तर्ज "वाणी" की। ताल दीपचन्दी॥

सीधा चालो रे म्हारा जोगिया, उल्टो मग मत झालो हाँ। सीधा
चालो तो मायव मिले, नही तो होवेला मुख कालो जी॥ टेर॥

काँई रे स्वाँस ने बन्द करो, किमडो ध्यान विचारो हाँ। पीवणो होवे तो चुपके पीयलो, ऊपर घूमे मन वालो जी॥ १॥ जोग पंथ को तो जोवनाँ, दिन घणा थाँने लागे हाँ। किसो रे भरोसो इण देह रो, पल माँहि परी भागे जी॥ २॥ आसण चौरासी ने सिद्धिया, नहि देवे काल थूंमीं टालो हाँ। घट फूटां भूंडी होवसी, काको लेवेला सभालो जी॥ ३॥ जोगी तो बन्या ने बिजोगिया, जावेला धून जमारो हाँ। रिद्धि सिद्धियां सूं जगत रीझे, नही रीझे मित्र हमारो जी॥ ४॥ देवनाथ साची कही, मान सुधरयो सारो हाँ। आवो तो साधो मरजी थाँरी, नही तो कुछ लेवो ना हमारो जी॥ ५॥

॥ गान ॥

राग सारंग–मल्हार, तर्ज "वाणी" की। ताल दीपचन्दी॥

आवो रे आवो मित्रो जोगियो, डर ने मत जावो हाँ। डरयाँ सूं
लाल मुफ्त जावे, धीरे चालो ना घबरावो जी॥ टेर॥

खाधा पडो गिर जावोला, धीरे पाँव जमावो। आयोडो वक्त खोइजो मती, चपके चोट चखावो जी॥ १॥ और हाँ तो सिद्धायाँ ने छोड दो, असली ओलखावो हाँ। सकल सिद्धाँ रे माँही रम रह्यो, उण स्वामी ने ध्यावोजी॥ २॥ आसण सगला ही झख मारसी, मिल जावे जद बालो हाँ। काल देख डर भागसी, मिल

जावे मिलने वालो जी ।। ३ ।। देवनाथ समरथ मिल्या; साचो भेद बतायो हाँ । मान मस्त जिण दिन भयो; शुद्ध स्वरूप समायो जी ।। ४ ।।

।। गान ।।
राग माँड । ताल दादरा ।।

म्हारा मित्र जोगीड़ा, पन्थ पुराणो धीमो धीमो चाल ।। टेर ।।
भगवाँ पहर मत रीझज्यो रे, होसी खोटा हाल । भेप आदेश उपदेश दृढ़ पकड़ो, निरख लीज्यो निज लाल रे; म्हरा. ।। १ ।। जंत्र ने मंत्र ने तंत्र सिद्धयाँ, इण में लूटा दो ला माल । पन्थ पुराणे सूँ देह पड़ोला, काको खोसेला खाल रे; म्हारा. ।।२।। और तो पन्थ काले वण्या रे, कर लीजो थे ख्याल । जगत रीझाई में मति विलमजो, देखो दौड़्यो आवे काल रे; म्हारा ।। ३ ।। माल मुफ्त में माणो मति रे, जाव है देणो लाल । माल तो लेसी जिण री नहीं परवा, पण दोरी खोसेला खाल रे; म्हारा. ।। ४ ।। एक तो कनक दूजी कामिनी रे, यह दो मोटा जाल । बापजी केय ने पकड़सी रे, करसी बुरी हवाल रे; म्हारा . ।। ५ ।। मान कहे मानो न मानो, मैं तो साची कहूँ ललकार । दम भर दम सूँ सुमेरजो रे, तो हो जावोला निहाल रे; म्हारा. ।। ६ ।।

।। गान ।।
राग माँड । ताल दादरा ।।

जोग पन्थ है झीणो, पैणो होय पीणो, लख लेणो सार असार ।। टेर ।।
पोल री गलियाँ बहुत है रे, जोग पन्थ रे माँय । सीधा होय नें चालज्यो रे, फँसिय तो निकलोला नाँय रे; जोग. ।। १ ।। जंत्र ने मंत्र ने तन्त्र सिद्धाई, ए तो झपटेला आय । कहे महाराज न आवे ध्यावे, पकड़ ने देसी गिराय रे; जोग. ।।२।। होय जोगी कोई जुलम मती कीजो, दुख अनन्त होय जाय । ओ तो डूबे तो भलाँई डूबो, पर जन्म अनन्त निकलो नाँय रे; जोग. ।। ३ ।। मान कहे मैं तो जोगी न हुआ, रंगिया न भगवाँ भेष । देवनाथ उपदेश दियो म्हाँने, निश्चय कर जोयो वो देश रे ; जोग. ।। ४ ।।

।। गान ।।
।।गज़ल । ताल दादरा ।।

जिगर से नहीं शौक है, शौकीन क्या हुए । जिन यार को पहचाना नहीं, प्रवीण क्या हुवे ।। १ ।। मुफ़त भेख धर इश्क का, बरबाद दुनिया को किया । जिन असली भिक्षा न लीवी तो, भिक्षुक क्या हुवे ।। २ ।। मरुधर पति नृप मान कहे, मुरशिद को पहिचाना नहीं । किया न तकिया मुर्दनी, फकीर क्या हुवे ।। ३ ।।

॥ गान ॥

राग बिलावल । ताल दीपचन्दी ॥

निज जुगती ने भूलग्या हो जी, ए तो जुगती अवर लगाय भाई रे लोय ॥ टेर ॥

ब्रह्म मूल निश्चय कियो हो जी, मूल महल यही पाय भाई रे लोय। गम गणपत नें हेरियो हो जी, अब दूजो कहिये नाय भाई रे लाय ॥ १ ॥ सुरत निरत दोनों मिली हो जी, ए ऋद्धि सिद्धि नारी कहाय भाई रे लोय। मन बुद्धि चित अहंकार नें हो जी; दिया है वध लगाय भाई रे लोय ॥२ ॥ नाभी कहिये विवेक री हो इजी, जासूं छाण छाण पवन जाय भाई रे लोय। तृष्णा नागिनी यों मरे हो जी, बाण विचार रो खाय भाई रे लोय ॥ ३ ॥ आठों करता सूं अलग भया हो जी, दोय खोय किया चूर भाई रे लोय। गख्या दोनों ने पोलिया हो जी, यूं देख्यो द्वादश नूर भाई रे लोय ॥ ४ ॥ देवनाथ जोगी मिल्या हो जी, म्हांने सावोडे भग ले जाय भाई रे लोय। मान जोग मिल्यो भोग में हो जी, म्हारे बाहर जाय बलाय भाई रे लोय ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल कैंरवा ॥

मेरी कही न कहीजे मित्रो, मेरी कही न कहीजे रे ॥ टेर ॥

कही कही मे बह जावोगे, सोच समझ उर लीजे रे। जैसी कही रही है हम तो, मेरी बाट बहीजे रे ॥ १ ॥ च्यारो धार बरोबर चाले, न्यून विशेष न लईजे रे। भक्ति ज्ञान विवेक वैराग यों, एक स्वरूप समझीजे रे ॥ २ ॥ जैसी भक्ति ज्ञान तैसो ही, तैसो वैराग लहीजे रे। होय विचार वैराग ते ऐसो, तब यह सभी निभीजे रे ॥३॥ कोरा ब्रह्म जो बगुने बैठा, मन को पत न आईजे रे। मन तो जीव जीव में डोले, कहणो ब्रह्म रहीजे रे ॥ ४ ॥ मन हो ब्रह्म वचन ही ब्रह्म हो, बुद्धि ब्रह्म भय कीजे रे। कर्म अकर्म धर्म और अधर्म, हानि न लाभ लखीजे रे ॥ ५ ॥ लाभ होय तो हर्ष नांही, हानि मे दुःख न पईजे रे। हर्ष शोक मे रहे रहित कोई, तीजो आनन्द सो लीजे रे ॥ ६ ॥ देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मरसी, हम ते ही रग में भीजे रे। मान कहे हम चने बज्जर के, लाख जतन नही सीजे रे ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

काल ही काल कहे सगरे पर काल ही मे एक काल सो आवे।
तेरो तो काल न पूरो ये होवन काल ही काल मे काल जो खावे।

काल ही काल को छोड़दे मूरख काल ही काल में काल धकावे।
मान कहे ये तो काल मिटे नहीं काल ही काल के गाल में जावे ।।

।। सवैया ।।

काल करो तो और करो कुछ आज करो उनकी सुध लीजे।
खावत पीवत सोवत बैठत एता भूले तो काल ही कीजे।
एते तो काल रहे तो होयंगे काल ही काल में वाल जो छीजे।
वाल टूटे जाकी नाँहि खवर कुछ काल ही काल में कौन पतीजे ।।

।। सवैया ।।

काल की बात तू छोड़ परी और आज करे उन पे चित दीजे।
काल करो तो फेर करो तुम काल करो तब को अटकीजे।
काल को ख्याल तो करताँ ही करता काल के गाल में जाय वसीजे।
काल की वात को छोड़दे मान तू आज करे सो अवी कर लीजे ।।

।।गान ।।

तर्ज "मनवा नाँय विचारी रे" की। ताल कैरवा ।।

काल थारी होवे न पूरी रे। काल काल में गटको करसी,
उड़सी धूरी रे ।। टेर ।।

काल ही काल करे तू बैठो, माया मजूरी रे। बारी आयाँ सब घर बाजे, नित उठ तूरीं रे ।। १ ।। बारी आयाँ तनें नहीं छोड़े, क्यों करे मगरूरी रे। नर तन तेरे आयो हाथ, मत डार अकूरी रे ।। २ ।। मन के ऊपर ब्रह्मांनन्द कहिये, चढ़ मनसूरी रे। काल को काल वणे तू जद ही, चाले दूरी रे ।। ३ ।। देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, करदी पूरी रे। मानसिंह उर ज्ञान भयो जद, उड़ गई दुहरी रे ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग सारंग, तर्ज "वाणी" की। ताल दीपचन्दी ।।

हाँरे वीरा सूतो जाग हाक आवे जमरी हो जी। थाँरो
वक्त अमोलख जावे रे हाँ- ।। टेर ।।

हाँरे वीरा असली वीर कदेई नहीं चूके हो जी। ए तो सन्मुख सेल संभावे रे हाँ; हाँरे वीरा मारे मरे डरे कद जम सूँ हो जी। ए तो जमरा ही जम वन जावे रे हां ।।१ ।। हांरे वीरा भोंदू जीव विकारा भटके हो जी। ज्याँ ने मतलविया भटकावे रे हां; हांरे वीरा अमृत केवे ने जहर वाँ ने पावे हो जी। ए तो बिना ही मौत

मर जावे रे हाँ ।। २ ।। हाँ रे बीरा देवल देव पुजाय पुजाया हो जी । जाने निज तत्त्व नहीं बतावे रे हाँ, हाँ रे बीरा पाबू हड़बू राम देव भैरूँ हो जी । जाने घर घर दर भटकावे रे हाँ ।। ३ ।। हाँ रे बीरा कई विष्णु शंकर मत छेड़्यो हो जी । जामें जकड़ ने बन्ध लगावे रे हाँ, हाँ रे बीरा असली सार कोई नही जाने हो जी । जिके जाए याँ सो फेर नही आवे रे हाँ । ४४ ।। हाँ रे बीरा केता देवी पन्थ मग चाले हो जी । ज्यों पोल में पोल चलावे रे हाँ, हाँ रे बीरा नकटा पत्थर आप ही फेंके हो जी । एनो मुड़दाँ रा नाम लगावे रे हाँ ।। ५ ।। हाँ रे बीरा धर्म सनातन सब यो केवे हो जी । ए तो उल्टा मार्ग अलावे रे हाँ, हाँ रे बीरा नाम सनातन सभी है हो जी । ए तो नाम रो काम लजावे रे हाँ ।। ६ ।। हाँ रे बीरा देवनाथ सम गुरु कोई पावे हो जी । मनन मनन वे पारे हाँ, हाँ रे बीरा मानसिंह सनातन अपनो हो जी । जद दूजो केवे मो मिट चावे रे हाँ ।। ७ ।।

।। दोहा ।।

कोई देव स्वर्ग ही कहे, गंधर्व किन्नर बताय ।
ज्यांरा लक्षण सुधरया, हो जीवत देव कहाय ।।
वे देवत किण देखिये, मिल्या किणी सूँ नाँय ।
शुद्ध मगन के देव मो, लाखों जीव बचाय ।।
मानसिंह संसार में, देव और दानव दोय ।
कर विचार ने देख लो, जब ही मालूम होय ।।
दया शील उर में नही, नही आतम को ज्ञान ।
मानसिंह वे देख लो, प्रत्यक्ष दैत्य समान ।।
सुरा पान मुखते भखे, करे जो मांस अहार ।
पर नारी सकता फिरे, वे नर दैत्य विचार ।।

।। गान ।।

राग विहाग । ताल कैरवा ।।

देवन गुण सुण लीजे, समझ कर देवन गुण सुण लीजे ।
ए गुण धारयां देव मानुष होय, उत्तम धुन चित दीजे ।। टेर ।।

पर उपकार करे निशिवासर, नाना दुःख सहीजे । बोले साँच झूठ नही भाखे, पक्षापक्ष सब दीजे ।। १ ।। पोना पन्थ पाँव नही मेले, निज मजबूत रहीजे । मरणो मुकर डरे नही मन में, दुपुरुषारथ नही छीजे ।। २ ।। भक्ष अभक्ष करे नही कब हूँ कूड़ा मन न पीलीजे । शील सन्तोष सुगन्ध रहे नित, याते दूर न रहीजे ।। ३ ।। अपनो रूप सकल में जाणे, रंचक भेद न आवे । दुःख सुख दोनो सम कर राखे, इन में नही

अलुझावे ।। ४ ।। पर धन धूल तजे पर निन्दा, वक्त पड़याँ नहीं जावे । शूरा शीश बरोबर देवे, जो रण भीतर आवे ।। ५ ।। पर तिरिया पुत्री सम जाणे, विषय प्रीत नहीं कीना । शीतल अँग नयन रहे शीतल, जिन आतम रस पोना ।। ६ ।। वह निज देव कसर नहीं या में, वेद और ग्रन्थ सुनाया । ये गुण धारयाँ मनुष्य देव है, देव गया न कोई आया ।। ७।। देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, अन्तर नेक न राखी । गोरख कबीर गुरु देवनाथ कही, मान ताहि विध भाखी ।। ८ ।।

।। दोहा ।।

मानसिंह सुर गुण कहे, अब असुरन गुण सुण लेय ।
सुर हू असुर भूमि बसे, ना कोई दूर गये ।।

।। गान ।।

राग विहाग । ताल कैरवा ।।

साधो भाई है निशिचर जग माँई रे । मोह तम निशा बीच में सोये,
जागत नाँय जगाई रे ।। टेर ।।

कारण विना जीवाँ दुख देवें, नेक दया नहीं आई रे । हानि लाभ समझत कुछ नाँही, रहे स्वारथ मन माँई रे ।। १ ।। मारत जीव जेज नहीं लावे, मन में शंका नाँही रे । बहता करे विगाड़ पलक में, दुष्ट पणो उर माँही रे ।। २ ।। बोलें कूड़ करम रा नीचा, मद और माँस आहारी रे । विषय विकार फँस्यो उर माँही, बने रहे व्यभिचारी रे ।। ३ ।। एक तो कनक कामिनी दूजी, याँ में ही भरमाया रे । दोयाँ काज करें कई हत्या, आतम-घाती कहाया रे ।। ४ ।। पवन जोर ज्यों फिरे पताका, स्थिर नहीं नेक रहाया रे । कहता वचन पलक में पलटे, नेक न मन शरमाया रे ।। ५ ।। चलता माग तके पर नारी, कूड़ा कलंक लगावे रे । करे मखोल खड़ा पनघट पर, नकटाँ ने लाज न आवे रे ।। ६ ।। चोरी जुआ करत है हिंसा, कोऊ पत नहीं माने रे । बहता जूत पलक में खावे, पीढ़ी सात वखाने रे ।। ७ ।। वे नर असुर पशू सम कहिये, विरथा जन्म धराया रे । कसर एक शिर सींग न दीया, दूजे घास न खाया रे ।। ८ ।। पहले कहे देवगुण सबको, राक्षस गुण समझाया रे । समझ विचार धरो गुण कोई, दोनों प्रगट दिखाया रे ।। ९ ।। देवनाथ गुरु करी कृपा जद, सुर गुण हमको भाया रे । मानसिंह अब त्याग राक्षस गुण, इनमें बहुत दुःख पाया रे ।। १० ।।

।। सवैया ।।

धीरज की ले ढाल धरे कर में जो क्षमा को खड्ग उठावे ।
धनुष करे जो प्रतिज्ञा को धारण और नीति के बाण हमेशा चलावे ।

काम और क्रोध मदादिक हैं अन्दर बाहर के सभी मिटावे।
सत शील को नांय तजे कबहू नृप मान वो असली क्षत्री कहावे ॥

॥ गान ॥

राग विहाग, तर्ज "वाणी" की। ताल कैंरवा ॥

वीरो थे तो निज मारग पर आवो रे। साची कहूँ रीस
थांने आवे, कुलक्षण दूर हटाओ रे ॥ टेर ॥

राम लक्ष्मण और भरत शत्रुघ्न, एको दन्त मिलाओ रे। वैर भाव को छोड देवो तुम, तुरत विजय पद पाओ रे ॥ १ ॥ नीति राजरी लेवो रावण सी, अड्यां पीछे म जावो रे। रामचन्द्र सो धर्म धारणा, हार कदेई नही आओ रे ॥ २ ॥ राजा बनो तो युधिष्ठिर जैसे, धर्म में रत होय जावो रे। भीष्म द्रोण से रहो मजबूता, मरणो पीठ न दिखाओ रे ॥ ३ ॥ दानी बनो तो कर्ण के जैसा, चित उदार होय जाओ रे। पाण्डव जैसो मेल आपस में, फतेहपुरी पद पाओ रे ॥ ४ ॥ पर उपकारी रहो विश्व से, कब तक हाल सुनाऊँ रे। कुटम्ब कथा सुनते जन्मेजय, छाँट छाँट दरसाऊँ रे ॥ ५ ॥ उत्तरा नार विवाही, अभिमन्यु से सुत उपजावो रे। सीता सो सत्य सिखाओ जिनको, सुयश थे जुगोंई जुग पाओ रे ॥ ६ ॥ कहूँ मैं कथा तो अन्त नही आवे, थोडे में बहुत लख जावो रे। मानसिंह कहे सिंह होवो थाके, भेडां ज्यूं क्यों घबराओ रे ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

राग सारंग। ताल कैंरवा ॥

वीरो अब मन जीतो घर पावो ॥ टेर ॥

रामचन्द्र मन जीत कहीजे, जग को इष्ट कहावो। मुनि वशिष्ठ मन जीत के चाल्या, ज्यौरा वचन सुण्यांई सुख पावो ॥ १ ॥ जीव गरीब को मत मारो थे, क्यों अत्याचार कमावो। ओ मन तरक उठावे बैठावे, इण रो खोज मिटावो ॥ २ ॥ घास खाय ऊभा तृण तोडे, वांने कांई सतावो। ओ मन जुल्म करे थांरे मांहि, मारो तो वीर कहावो ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु कृपा करी जद, वीर होय पग धावो। मानसिंह कहे अल्लगढ जीत्यो, जठे शत्रु लूटण नही पावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग बिलावल । ताल कैरवा या तिताला ॥

सूतो सिंह बकार लो हो जी; क्षत्री असल कहावो । जीव गरीबाँ सूँ क्या अड़ो हो जी, शेरों से शेर मिल जावो ॥ टेर ॥

सिंह जबर जुलमी घणो हो जी; जिणरो खोज लगावो । खायोकुटुम्ब थाँने खावसी हो जी; धीर रहो मत घबराओ ॥ १ ॥ गोली चोट सूँ नहीं मरे होजी; लाखों निसाण चलावो। एक चोट उण री लगे हो जी: चपके चित्त होय जावो ॥ २ ॥ सतगुरु कोई सबला मिले हो जी; तो थाँने शेर बनावो । जीतणों दुस्तर बहुत घणो हो जी; बड़ा बड़ा ही डर जावो ॥ ३ ॥ देवनाथ म्हाँने कह्यो हो जी; अबके बार यों ही जावो । मान चोट चपके घरी हो जी; खाली कैसे गमावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग विहाग । ताल कैरवा ॥

वीराँ थाँने आ आछी वण आई रे । छोड़ के दूध पीयत मद गन्दा, शरम नहीं मन माँई रे ॥ टेर ॥

हिरणाक्ष ने शराव पियो जद, पृथ्वी सगरी गमाई रे । हिरण्यकश्यप सो बली विचक्षण, हाथों देह चिराई रे ॥ १ ॥ रावण कुम्भकरण सा योद्धा, पृथ्वी जीत जग माँई रे। पियो शराव वँश सब खोयो, राम सूँ करके लड़ाई रे ॥ २ ॥ श्रेष्ट यदुवंश कृष्ण अवतारी, जग माँही जस छाई रे। पियो शराब वंश सब खोयो, कट मरया आपस माँई रेरे ॥ ३ ॥ गैला देव ज्याँरा गैला पुजारा, गैला गुरु मिल जाई रे। गैली वात गुप्त कर दीनी, स्वारथ आग लगाई रे ॥ ४ ॥ इण ही शराव क्षत्री वंश खोयो, फेर ही खोवत जाई रे। नाम श्राप देवे वर क्योंकर, मूरख सोचे नांई रे ॥ ५ ॥ मानसिंह कहे मानो मेरे मित्रो, जो तुम चाहत भलाई रे । दूध घृत पियो शराव त्याग देवो, दूणी चढेला वीरताई रे ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

मद ही मद की कहानी कहे इण कहानी में क्षत्रिय वंश डुबायो ।
नकटाई पड़ी जाको कोई न केवत महिमा कर कर सबही सुनायो ।
सराह सराह विगाड़ दिये हते देव निशिचर में नाम लगायो ।
मान कहे रेरे जुल्म यह वीरों वीर मिटे और भूत कहायो ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह या जगत् में, दैत्य मिटे मत जान ।
खड़े दैत्य मौजूद है, कर निश्चय गम ज्ञान ॥

॥ दोहा ॥

देखो मति इनकी हरी, विषय के खाय सराय ।
शोभा शोभा बीच में, दीनो जगत डुबाय ॥

॥ कवित्त ॥

गाँव गाँव देखो जहाँ मिलत है निखट्टू ऐसे, जहर को सराय खाय लाज हू न आवें है। पाँच दश भेला होय करत मनुहार खाय, झूठी ही मनुहार हाको हाक ये मचावे है। हुक्के की गुडक बीच देखो गुटकत बैठे, आप तो बिगडे सो बिगडे युवकन को बिगडावे है। कहे राव मानसिंह कैसे है अफीमची ये, काल डर माने याँने काल हू न खावे है॥

॥ दोहा ॥

कहानी कहे अफीम की, शोभा करे अपार ।
इन शोभा के बीच में, कई फस गये सरदार ॥

॥ कवित्त ॥

भङ्ग और तमाखू गाँजा काम है आलसिन को, मनुष्यपनो राखे तो ते निकट हू न लावें हैं। कालो ये अफीम ते तो दीखत है काल जैसो, जिनके फूटे भाग याक याको मुख मे पधरावे हैं। कर करके शोभा कूडो क्षत्रिन बिगाड दिये, झूठे मतलबिये झूठी बाते ये बनावें है। कहे राव मानसिंह बडे हैं मतलबियें ये तो, कूडी बातें कर अपनो पथ जो बढावे है।

॥ सोरठा ॥

कहे अफीम को देव, खावें जिनको वर दहे ।
देखो इनको सेव, क्या आनन्द इणमें मिले ॥

॥ दोहा ॥

ये मुख ते बातां करे, शोभा खूब बढाय ।
भोला सो जाणे नही, बातां में फँस जाय ।
इनमे एक प्रत्यक्ष फल, सो मैं देऊँ बताय ।
जीतां नैं मुडदा करे, मनुष्य जिके नही खाय ।
अणदीठी कछु नां कही, दीठी कही बताय ।
जो रजपूती राखणी तो, इनको खाइये नाँय ।

मान कहे वीरो सुनो, लेवो हृदय बीच धार ।
घृत दूध खूब ही पियो, तज दो जहर विकार ।
बढ़े वीरता चौगुणी, रहे धर्म को ध्यान ।
दुश्मन सूं हारो नहीं, कहे राव यूं मान ।।

।। गान ।।

राग हमीर । ताल दादरा ।।

ऐसा देव पाया मैंने, ऐसा देव पाया ।। टेर ।।

मुख से नहीं जाप करूँ, बिना ही जाप गाया । अपनो आप आप जपत, दूजो कोई न पाया ।। १ ।। तीनूं लोक नाद वजत, सुनत चतुर सवाया । आप हू को भूल बैठे, जाको ना सुनाया ।। २ ।। कौन मेरे पिये भंग, कौन ले घुटाया । जेते नशे विश्व जेते, मैं ही तो उपाया ।। ३ ।। मो ते सबकी उत्पत्ति है, मोहि में है समाया । कौन घोटे कौन पीवे, दुःख सो दरसाया ।। ४ ।। खर हू नहीं खात जाको, मनुष्य प्रेम लाया । बार बार है धिकार, मूर्ख जन्म गमाया ।। ५ ।। वेद याको निषेध करत, संत ही सुनाया । विषय के जो पामर जीव, शोभा मुख गाया ।। ६ ।। शिव स्वरूप मेरो रूप, कहत नहीं लजाया । मान कहे रे लानत तुम्हें, अनर्थ अर्थ लगाया ।। ७ ।।



भक्ति

॥ दोहा ॥

मान कहे मित्रों सुनो, मती करो अभिमान ।
भक्ति भक्ति सब ही कहो, भक्ति है कठिन महान ॥
करी जिकों ने पूछलो, कि कियां किनो फल लीन ।
करी जिके ही मर गया, शीश काट धर दीन ॥

॥ गान ॥

तर्ज बाणी की (लेवणा होवे सो लीजे म्हारा भाइयो की तर्ज पर) ।

ताल दीपचन्दी ॥

भक्ति भक्ति करत सब भूला है, ओ तो भक्ति रो
भग रयो न्यारो रे साधो । भक्ति भक्ति ॥टेर॥

भक्ति बिना भगवन कैसे पावे है, ए तो जाणत नांय गँवारा रे साधो । जाणे जिके तो पलक मांहे ओलखे है, वां संक्षण भर रहे न किनारा रे साधो ॥ १॥ कैताक षट् और आठ नव उलझ्या है, नही सूझ्या पिव प्यारा रे साधो । ओलख्यां बिना अलख कद मिलसी है, ए तो पथरां सूं सिर मारा रे साधो ॥ २ ॥ कैताक छप्पन भोग करे त्यारी है, केताक कर्म विचारा रे साधो । सबको भरे सो आप कैसे खावे है, समझे नही मूर्ख गँवारा रे साधो ॥ ३ ॥ आप ही आप जाप क्या दूजा है, अब कुण जपने हारा रे साधो । सगली कलमां मांय हरि आवे है, भूला भरम विचारा रे साधो ॥ ४ ॥ ऊँच ही नीच नीच सो ही ऊँचा है, ज्योंरे मिट गया द्वैत विकारा रे साधो । चढिया जिके तो जरूर ही पडसी है, कहत जगत यूं सारा रे साधो ॥ ५॥ देवनाथ गुरु स्थिर मिलाया है, अब चढिया नांय गिराया रे साधो । मानसिंह खडा जहाँ ही पाया है, उठे नाँय गया नही आया रे साधो ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

भक्ति मग है झीणो साधो, झीणा हवो जद आवोला ॥ टेर ॥

त्याग को त्याग भाग लख लेवे, खोज लक्षणा निज तत्व सेवे, नही कुछ लेवे नही कुछ देवे, सहजे ही सहज समावोला ॥ १ ॥ नही निन्दे वन्दे नही कोई, अपणा आप आप गत जोई, ना खोया और ना कोई खोई, आप मे आप लख जावोला ॥ २ ॥

सब में राम राम में सबही, राम मय जग है यह सब ही; वेद पुराण सभी की कथनी, जहाँ जावो नहीं पावोला ।। ३ ।। देवनाथ गुरु साथ जो कीना, झीणे तें झीणा कर दीना; मानसिंह जद निज पद चीना, माँयले रा भरम मिटावोला ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग प्रभाती । ताल कैंरवा ।।

भक्ति भक्ति बको सत सगरा, भक्ति क्या इणने पावोला ।। टेर ।।

आधी उठे ने नावण जावे, नित उठ दरसण करने धावे; मन समझे विन हाथ न आवे, भटक भटक मर जावोला ।। १ ।। पंचामृत तुलसी कई खावे, चाहे गंगा जल पान करावे; निज श्रद्धा उर में नहीं लावे, भरम के भूत कहावोला ।।२।। पूजो चित्र मूर्ती पूजो, चाहे देव तुम ध्यावो दूजो; अपणो देव आप नहीं सुझ्यो, यों ही जूता खावोला ।। ३ ।। देवनाथ गुरु देव गुसाँई, निज मन्दिर में देख्या साँई; मान कहे निज पत मोहे आई, बहकूँ न क्या बहकावोला. ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग खम्भाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ।।

देखो मित्रो भक्ति आ भरम तुम्हारी । पूज पूज कई पंडित मूवा,
लाखो ही डूबे संसारी रे; देखो मित्र ।। टेर ।।

ईश्वर एक किया कई टुकड़ा, जुल्म कियो थे भारी । पण्डिताँ पोल अनंत गुण कीनी, जग कर दियो व्यभिचारी रे; देखो मित्रो. ।। १ ।। सब में राम राम मय सब जग, वेद कहे यूँ चारी । स्वारथ हेत अर्थ किया अनरथ, करत निषेध वेदाँरी रे. ।। २ ।। चतुर्वेदी बण्यो पूरो पंडित, सूत्र ने सूत्र सँभारी । पंडित भयो पोल ने काढ़ण, दश गाडा और डारी रे. ।। ३ ।। साँची कहे तो मातमी मारे, परगट कहे संसारी । परगट पोल कबीर उघाड़ी, बदल गई काशी सारी रे. ।। ४ ।।देवनाथ गुरु कबीर मिले मोय, जाणी यह पोल तुम्हारी । मानसिंह अब पजे न स्वप्ने, दूर ते हाथ जोड़ाँरी रे ।। ५ ।।

।। सवैया ।।

नवधा भक्ति को सवाल करे पर एको ही भक्ति कोऊ न उठावे ।
गिनती गिन कर सगरे पकरे एकहू नाँय जो पार हो जावे ।
जो कोई करे उपरले चित से उनके हरि कहो फिर कैसे सिधावे ।
चित तो डोले चहूँ दिश को सदा कैसे हरि भक्ति सुरझावे ।
आठ को ठाठ तो छोड़ सभी और एक ही के विच चित्त रंगावे ।
मान कहे सब आठ धरे रहे एक ही तोकूँ राम मिलावे ।।

॥ कुण्डलिया ॥

भक्ति हो एक प्रकार की, शायद कोई कर लेह ।
मान सिंह नव किम करे, पोल अणहुती येह ।
पोल अणहुती येह, एक में एक है भारी ।
नव ही एक सी नांथ, बनावे न्यारी न्यारी ।
कहो अब हम किनका करें, त्याग जो कौन करे ।
भक्ति हो एक प्रकार की, शायद कोई करले ॥

॥ कुण्डलिया ॥

नाना मत खेंचत रहे याको अन्त न आय ।
कब तक मैं वर्णन करूँ, गिणत गिणत थक जाय ।
गिणत गिणत थक जाय, पार नही इनको पावे ।
पीछे पुराण अठारह, नवां ने न्यारी गावे ।
चार वेद और ही कहे, खैंच खैंच लगाय ।
नाना मत खैंचत रहे, याको अन्त न आय ॥
षट् शास्त्र और ही कहे, लाम्बी झाँबर झोर ।
मानसिंह क्या क्या करे, फाट गयो मन मोर ।
फाट गयो मन मोर, अमल तो कोई न बनावे ।
देवनाथ गुरु देव, कती जद अब पत आवे ।
तू तेरो तुझ माहि है, तुझमे ही लागी डोर ।
मानसिंह क्या क्या करे, फाट गयो मन मोर ॥

॥ सवैया ॥

प्रेमी बने कर माला लिवी और राम ही राम को श्वास उठावे ।
एक ही श्वास न खाली गयो रग रग और रोम ही रोम नचावे ।
यह मन नाचत माने नही चुपके से मच्छी पकड गटकावे ।
वे ही है हंस खरा जग में जिके मोती बिना नही कंकर खावे ।
वो हम ही हाथ जो आना है दुर्लभ भाग बिहूना सो क्योंकर पावे ।
बुगलों के हाथ पडे सगरे यह तो बुगले मार ही मार के खावे ।
देव ही नाथ सो हंस मिले मोय बिगडी इनको देत बनावे ।
मान बिगाडी मैं बहुत दिनाँ अब तो इण बुगलाँ सूँडर आवे ॥

॥ कवित्त ॥

कोई तो कहत हम कृष्ण के उपासी बने, बंसीधर मूरत होय शीश जब नायँगे ।
कोई कहे द्वाराधीश और हू न मानें ईश, ऐसी मूरत ध्याय तो वहाँ बंसी हू न पायँगे ।
राजरूप मूर्त यहाँ बंसी हू को काम कहा, एक एक की यह निन्दा करत सब सुनायँगे ।
कोई कहे रामचन्द्र धनुष बाण धारे हाथ, बिना धनुष बाण हम दर्शन हू न पायँगे ।
कैसी है भूल देखो हरि के टूक टूक करत, भूल ही भूल में योंही मारे जायँगे ।
कहे राव मानसिंह आत दया मोको अब, एते जीव तो ये बिना पानी डूब जायँगे ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल तिताला या कैरवा ॥

आ पूजा नहीं होवे रे, सन्तों म्हाँ सूँ आ पूजा नहीं होवे रे ॥ टेर ॥
साच बोलण को आये जग में, झूठ बीज कुण बोवे । झूठी बात हाथ नहीं घालूँ, वृथा इमान कुण खोवे ॥ १ ॥ जाग्रत रहे नित्य जगदीश्वर, वो तो कभी न सोवे । नित्य जाग्रत को कैसे जगाऊँ, यही मन हाँसी होवे ॥ २ ॥ घर में चीज पड़ी जब अपने, बाहर किण विध जोवे । कर को कंगण घणा दिन खोयो, अब जोय लियो मेरो मो मैं ॥ ३ ॥ यह पाषाण पाषाण ही रहेगो, लाख कूट शिर रोहे । नहीं वो भाव देव वो नाँही, उलट पुलट उलटो है ॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु दया करी जद, मारग लियो सीधो है । मानसिंह जड़ चेतन में यह, सर्वत्र रूप मेरो है ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

रामेश्वर जगदीश गये हम बद्रीनाथ केदार जो धाये ।
गंग यमुन जल बीच में नहाय के जाय हिमालय में हाड गलाये ।
जहाँ टीकम रणछोड़ बसे वहाँ महाप्रसाद उनही का जो खाये ।
अम्बे हि जाय परस हिंगलाज को तदपि नहीं उर शांति जो आये ।
फेर ही फेर के खूब फिराये फिर भी हरि लो दूर बताये ।
देव हू नाथ कृपा करके हरि पास में है यह शब्द सुनाये ।
मान कहे भ्रम भाग गयो निज गाँव में आय के सहज समाये ।
दूर ही दूर से हार गये हैरान भये कछु कह न सकाये ॥

॥ दोहा ॥

सज नवीन शृंगार नित, दौड़े मंदिर जाय ।
राम रिझाई यह नहीं, सगरी जगत रिझाय ॥
जर जेवर सुन्दर सजे , कर शृंगार तमाम ।
यूँ तो जग ही रीझसी, नहीं रीझेला राम ॥

॥ दोहा ॥

दरसण मूरत के करे, और ही ध्यान लगाय ।
नारी निरखे पुरुष को, पुरुष नारि निरखाय ।
श्री हरि का सब घर कहे, हे मन्दिर के मॉय ।
चोर योंही चूके नहीं, हमों मोहे यह आय ॥

॥ कवित्त ॥

देत हम समय ही समय को शृंगार नित, हरि तो कहु के कछु बैन न सुनावे है । अच्छो साब् रो हम कहत अपने ही जी मे, पर इनकी तरफ से कछु जाव हू न आवे है । मधु और मेवा पकवान मिठाई नित, नानाविधि से हम भोग जो लगावे है । खट्टो या मिठो याको स्वाद हू न कहत कछु, स्वाद कहाँ ते कहे बपुरो यह स्वान्हू न खावे है । जैसे जो पुजारी तैसे देव मिले याको देखो, अन्धे की लकडी दखो अन्धे पकडावे है । दोनो गिरे कूप बीच सूजत नहीं एक हू को, जाको नहीं सूझे वह राह क्या बतावे है ॥

॥ दोहा ॥

गुमान वचन

सर्वव्यापी जगदीश तो, सबके बीच समाय ।
ठौर ठौर मन्दिर अधिक, मूर्ति क्यो ये थपाय ॥

॥ चौपाई ॥

ठौर ठौर क्यो पूजन धावे । क्यो ये न्यारी देव मनावें ।
कहो फिर काज होय यह कैसे, मो मन यह सदेह है रै मे ॥
कारण कौन सो भीड मचाई । ईश्वर रहे सकल के मॉई ॥"

॥ दोहा ॥

मरधीश हम से कहो, सबही अर्थ विचार ।
कौन काज इतने किये, धर्म प्रथा के द्वार ॥

॥ दोहा ॥

भान वचन

रे गुमान नही यह गलत, सीधी रही दिखाय ।
धर्म प्रथा के द्वार पर, धर्म हि वाक्य सुनाय ॥

॥ चौपाई ॥

धर्म मन्दिर कीना ये भाई । बुद्धिमान जन बुद्धि उपाई ॥
स्वार्थियो अनरथ कर दीना । भरे कुम्भ मे कीचड कीना ॥

हित अनहित ना कीन विचारा। सीधी हुती उलट कर डारा ॥
च्यारों वर्ण और न्याती गोती। सबही आन मिलत सम होती ॥
सद् उपदेश धर्म की वानी। मूरख पंडित अति विज्ञानी ॥
धर्मशास्त्र की चर्चा होई। नारी पुरुष मिलत सब कोई ॥

॥ दोहा ॥

यही काज मन्दिर किये, अब यह होय अन्याय।
खर की पूंछ मूरख गही, अब ये छोड़े नाँय ॥
साँप छछून्दर की गती, उरझ गये इण माँय।
छोड़ें तो स्वारथ हटे, खायाँ मारे जाँय ॥

॥ चौपाई ॥

प्रतिमा तणी सुनो अब गाथा। तुम से सही कहूँ मैं बाता ॥
दिन में बीसों भोग लगावे। माल मुफ्त जो मसखरा खावें ॥
बेटी बहू गिणे नहीं कोई। मन चाहे की इज्जत खोई ॥

॥ दोहा ॥

यह प्रतिमा लक्षण नहीं, यामें लक्ष्य है और।
असल पुजारी ना रहे, रहे स्वार्थी चोर ॥

॥ चौपाई ॥

है प्रतिमा इन कारण भाई। पुरुष पुराणे याद न जाई ॥
मूरत देखे याद रहावे। ब्रह्म तेज बल नाँय घटावे ॥
धनुष बाण यही कारण लीना। घटे न बल होवे नहीं क्षीणा ॥

॥ दोहा ॥

प्रतिमा देख पुरातनी, धरे नवल पुरुषार्थ।
यही कारण सूरत करी, कही तुम्हें समझात ॥
प्रतिमा की पूजा कियाँ, ब्रह्म तेज नहीं जाय।
समझें अपने रूप को, दे सब भरम मिटाय ॥
कहे यूं मान गुमान सुन, पियो अमी रस छान।
चालो समझ विचार कर, छोड़ो पोल दुकान ॥

शवरी–महिमा

॥ छप्पय ॥

चले राम वन माँहि पिता के वचन उठाये ।
लोप कियो नही नेक वचन शुद्ध मान के धाये ।
चित्रकूट बनवासी बने बन सभी फिर आये ।
दण्डक बनादि ढढ ढूंढते अब चले आये ।

॥ दोहा ॥

महा तपोवन आनि, जुड़्यो ठाठ ऋषि धाम ।
आये दीनदयाल तहाँ, धर्म धुरन्धर धाम ॥

॥ छप्पय ॥

कहन लगे रघुनाथ शवरी गृह मोय बताओ ।
कहाँ शवरी को निवास बात हमको समझाओ ।
ऋषि जरे मन माँहि चले नही वश कछु भाई ।
आश्रम रहे शृंगार हमें कोउ पूछै नाँई ॥

॥ दोहा ॥

जाति पाँति से हैं परे, जिनते प्रेम लगाय ।
पढ़े हम वेद पुराण को, यहा आदर कछु नांय ॥

॥ छप्पय ॥

जात देख रघुनाथ ऋषि मन मे रिसियाये ।
वृद्ध हतो ऋषि एक जोर कर बैन सुनाये ।
भई रक्त की गग कष्ट हम बहुत उठाये ।
किये यहा बहु हवन दु ख यह नांय मिटाये ॥

॥ दोहा ॥

चरण धरो प्रभु आप के, गग शुद्ध हो जाय ।
विप्र ऋषी सुख पावे ही, गुण जो आपको गाय ॥

॥ छप्पय ॥

कृपा करी रघुनाथ गग पर आप सिधाये ।
धोवत कह्यो थो चरण प्रभु जहाँ आप ही न्हाये ।
गग तो पलटी नाँहि महाय प्रभु ही पछताये ।
लिपट्यो रक्त ते अग जीव कईयक लिपटाये ॥

॥ दोहा ॥

गंग रक्त की रक्त रही, भई शुद्ध कछु नाँय ।
राम कहे ऋषियों सुनो, कीजिये कौन उपाय ॥

॥ छप्पय ॥

भयो कौन सो काज हमें तुम सभी सुनाओ ।
फिर कछु करूँ उपाय हाल यह सभी बताओ ।
ऋषि कहें महाराज और कछु निगे न आये ।
एक दिवस की बात हम ऐसी सुन पाये ॥

॥ दोहा ॥

मतंग ऋषि के पास में, रहत शबरी एक नाम ।
महा मलीन अति जात वह, सबकी नीच गुलाम ॥

॥ छप्पय ॥

सेवा करणो काज और स्वारथ मन नाँई ।
करत प्रभू गुन गान प्रेम ताके उर माँई ।
सेवा करणे काज ऋषी आश्रम पर आई ।
लकड़ी भारी लाय ऋषी मठ आन गिराई ॥

॥ दोहा ॥

प्रातःकाल जब होत ही, उठचो हतो ऋषि एक ।
भेट भई उनसे जबी, उठचो जो क्रोध विशेष ॥

॥ छप्पय ॥

उठचो ऋषी को क्रोध क्रोध उर नाँहि समायो ।
मारी खेंच एक लठि शीश से रुधिर बहायो ।
ता दिन ते भई रक्त और कुछ नाँहि उपायो ।
अब तुम जानो महाराज हाल कोई निगे न आयो ॥

॥ दोहा ॥

हा हा रे अफ़सोस तुम, कीनो जुल्म अपार ।
विप्र वंश कुल जन्म ले, कीनो अत्याचार ॥

॥ छप्पय ॥

कितनो कियो अन्याय जभी तो तुम दुःख पाओ ।
कहाँ है शबरी निवास दरश तुम मोहि दिखाओ ।

शबरी जैसी सन्त जगत में केतिक पावो ।
ऐसी से करो द्रोह कष्ट तुम जबी उठावो ।।

।। दोहा ।।

सुनी राम की बात जब, रहे ऋषी शर्माय ।
कह न सके मुख से कछु, कहे तो मारे जाँय ।।

।। छप्पय ।।

चलो हमारे साथ साथ चल उसे भी लावें ।
जो यह कदाच शुद्ध होय लाय अब उसे नवावें ।
साथ चले रघुनाथ चलत शबरी गृह आवें ।
शबरी देखी भीड देखत मन अति घबरावे ।
आये मारण मोय सबी ये मतो उपावे ।
भगी जबी तत्काल वृद्ध थी भग्यो न जावे ।।

।। दोहा ।।

दौडे और गिर जात है, गिरे और उठ धाय ।
कर गह यूं रघुनाथ कहे, दौड नाँहि मम माय ।।

।। छप्पय ।।

सुनी नाथ की बात जबे मन धीरज आयो ।
हँसकर के रघुनाथ आय के बैन सुनायो ।
जाहि भजे दिन रात मात सोही मैं आयो ।
मत मन मे घबराय आय गयो तेरो सहायो ।
यों कह कर रघुनाथ नेक उन्हे धीर बन्धायो ।
मत डर तू मम मात नाथ तेरो मोहि भायो ।।

।। दोहा ।।

शबरी यह श्रवणां सुण्यो, आप ही है रघुनाथ ।
प्रेम पुलकित हृदय भयो, कम्पन लागो गात ।।

।। छप्पय ।।

नयन बहे जलधार बोल मुख ते नही आवे ।
करण चहे परणाम बचन मुख बन्ध रहावे ।
सब ऋषियन के साथ नाथ यो शीश नवांवे ।
ले शबरी पद रज नाथ यो शीश चढावे ।

ऋषि गये शर्माय बोल मुख ते नहीं आवे।
सहाय करे रघुनाथ वाको फिर कौन सतावे।।

।। छप्पय ।।

साथ लिये रघुनाथ हाथ गह शबरी हि लाये।
हतो गंग को कुण्ड लाय हरि उसे न्हवाये।
कहे वचन रघुनाथ मधुर धुन वैन सुनाये।
मात धरो तुम चरण धोय सब ही सुख पाये।।

।। दोहा ।।

मन में अति घबरात थी, पाँव डुबोवत नाँय।
कर जल ले रघुनाथ जी, दीन्ह अंगुष्ठ डुबाय।।

।। छप्पय ।।

भई शुद्ध जो गङ्ग सबी वो रक्त मिटायो।
भयो कनक सो नीर देख मन सब सुख पायो।।
सबको अचरज होय चित्र सम सभी रहाये।
कहे न सके कुछ वैन मौन मुख बन्ध कराये।।

।। दोहा ।।

चरण धोय रघुनाथ ने, पञ्चामृत कर लीन्ह।
जुड़े थे ऋषी समाज ते, सबको हरि ले दीन्ह।।

।। छप्पय ।।

छाया सुंदर आय चरण धोय सबे पिलायो।
मती करो अभिमान मान हरि को न सुहायो
रहो ज्यूं निर्मल नीर देह को भाव मिटावो।
दरसे आतम रूप जबे मित्रो सुख पावो।।

।। दोहा ।।

मान कहे मित्रो सुनो, भजन कियाँ भव पार।
ऊँच नीच कोई है नहीं, सबके हरि आधार।।

।। गान ।।

राग सोरठ या देश। ताल तिताला या करवा।।
हाथ गह्यो रघुनाथ, ज्याँरो ऐसो हाथ गह्यो रघुनाथ।।टेर।।
ण धरण तो दूर रह्यो रे, ताहि अंगुष्ठ डुवात। कर में जल ले राम पद धोये,

गङ्ग की गङ्ग हो जात ॥ १ ॥ चरण धोय लियो चरणामृत, ऋषियन को जो पिलात । मन में ग्लानि पीयत डरे सब, मुख से कह्यो न कछु जात ॥ २ ॥ ले चरणामृत रामचन्द्र कहे, जोड़े दोनों हाथ । हाथ जोड़ हरि दीन्ह परिक्रमा, मिली जाणे कौशल्या मात ॥ ३ ॥ ऋषि सब मन ही मन शरमाये, कहत न बाहर बात । राम कहे शबरी जैसी प्यारी, प्यारे न मात न तात ॥ ४ ॥ मानसिंह ऐसे भक्त वत्सल हरि, क्यों न माहे पत आत । देवनाथ गुरु राम स्वरूपी, तारत है सब जात ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ । ताल तिताला या कैरवा ॥

लछमन शबरी को मठ मन भाय ॥ टेर ॥

पान पत फल छाई कुटिया, पवन आवत जिण माँय ॥ १ ॥ पानही ओढण पान बिछावण, ऐसा कुरा साज सजाय ॥ २ ॥ पानरा दूना बेर भरलाई, प्रेम रस भरियो माँय ॥ ३ ॥ ऋषि सन्यासी मठ खब सँवारया, मेरे मन नहीं भाय ॥ ४ ॥ वेद सुपनिषद् पढ़े ऐ बैरा, शबरी रे सब सही पाय ॥ ५ ॥ ऊँच और नीच जात नहीं मेरे, जिन उर, प्रेम तहाँ जाय ॥ ६ ॥ बोर सुहावे मेरे मन भावे, खाडा ज्यांरो अजब सवाद ॥ ७ ॥ देवनाथ कहे राम सम दरसी, मात चरण लिपटात ॥८॥

॥छप्पय ॥

आये राम मिजमान शबरी के भाग बधाये ।
नवधा भक्ति गुप्त प्रगट कर सबै सुनाये ।
धर्म रूप अवतार राम भूमण्डल आये ।
रोपी धर्म की ध्वजा आप मर्याद रूपाये ॥

॥ दोहा ॥

और न उनके घर हतो, सच सब कियो बोर ।
लेकर ये आगे धरया, जिनकी खाण्डी कोर ॥

॥छप्पय ॥

टाल टाल के देत लखन जो बोर यह लीजे ।
बहुत है मीठे बोर राम इनको चाखीजे ।
लक्ष्मण उपज्यो शक झूठन इनको किम लीजे ।
फेंक दिये हम लखन मन इनको न पतीजे ॥

॥ दोहा ॥

अन्तर्यामी जाणली, हंस बोले श्रीराम ।
रे रे लक्ष्मण जुल्म कियो, सबी बिगाड़्यो काम ॥

॥छप्पय ॥

तू है मेरो भ्रात तात मैं कहा सुनाऊँ ।
जो और करे अपमान तो उनको और दिखाऊँ ।
एक भक्त के काज लाज मैं मेरी गमाऊँ ।
उनकी न जावण पाय उपाय अनेक उपाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

मेरी लज्जा जाय भल, साधु लाज नहीं जाय ।
साधु लाज के कारणे, सर्वस्व देऊँ गमाय ॥

॥ कवित्त ॥

साधु ही साधु कहत वेद और पुराण सबी, साधुन को महत्व कोई बिरलाँ ही पायो है । साधुन को महत्व लख्यो अमृत अमोल चख्यो, पोल गोलागोल जाको सब ही जो उड़ायो है । आतम की निश्चय कीन्ह एक रूप सब में चीन्ह, मन को जो हतो भरम सगरो मिटायो है । कहे रव मानसिंह ऐसा कोई साधु होय, ऐसे साधुन को हम दास ही कहायो है ।

॥छप्पय ॥

श्रीमुख कहे गोपाल सन्त अति मोहे सुहावे ।
ऊँच नीच नहीं मोर जो कोई साधु बन आवे ।
क्या ऊँचा क्या नीच जगत के भाव कहावे ।
मेरे तो मन एक साधु समता मन लावे ॥

॥ सोरठा ॥

उर ममता को त्याग, साध सत्य मन में धरे ।
मानसिंह मिटे द्वेष, तन के करम सब झड़ पड़े ॥

॥ छप्पय ॥

ऐसी कही रघुनाथ तात मन में घबरायो ।
मुखकर हाहाकार नयन में नीर बहायो ।
जो दूजो कर लेत चौरासी में जात गिरायो ।
पर तू है मेरो भ्रात जाहि ते तोय बचाओ ॥

गङ्गा की गङ्गा हो जात ॥ १ ॥ चरण धोय लियो चरणामृत, ऋषियन को जो पिलात । मन में ग्लानि पीयत डरे सब, मुख से कह्यो न कछु जात ॥ २ ॥ ले चरणामृत रामचन्द्र कहे, जोड़े दोनों हाथ । हाथ जोड़ हरि दीन्ह परिक्रमा, मिली जाणे कौशल्या मात ॥ ३ ॥ ऋषि सब मन ही मन शरमाये, कहत न बाहर बात । राम कहे शबरी जैसी प्यारी, प्यारे न मात न तात ॥ ४॥ मानसिंह ऐसे भक्त वत्सल हरि, क्यों न मोहे पत आन । देवनाथ गुरु राम स्वरूपी, तारत है सब जान ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ । ताल तिताला या कैरवा ॥

लछमन शबरी को मठ मन भाय ॥ टेर ॥

पान पत्र फल छाई कुटिया, पवन आवन जिण माँय ॥ १ ॥ पानही ओढ़ण पान बिछावण, तैसो कुण साज सजाय ॥ २ ॥ पानरा दूना बेर भरलाई, प्रेम रस भरियो माँय ॥ ३ ॥ ऋषि सन्यासी मठ खूब सँवारया, मेरे मन नहीं भाय ॥ ४ ॥ वेद उपनिषद् पढे ऐ वैठा, शबरी रे सम नही पाय ॥ ५ ॥ ऊँच और नीच जात नहीं मेरे, जिन उर प्रेम तहां जाय ॥ ६ ॥ बोर सुहावें मेरे मन भावे, खाता ज्यांरो अजब सवाद ॥ ७ ॥ देवनाथ कहे राम सम दरसी, मान चरण लिपटात ॥८॥

॥छप्पय ॥

आये राम मिजमान शबरी के भाग बधाये ।
नवधा भक्ति गुप्त प्रगट कर सबे सुनाये ।
धर्म रुप अवतार राम भूमण्डल आये ।
रोपी धर्म की ध्वजा आप मर्याद स्थाये ॥

॥ दोहा ॥

और न उनके घर हतो, सच सच कियो बोर ।
लेकर ये आगे धरया, जिनकी खाण्डी कोर ॥

॥छप्पय ॥

टाल टाल के देत लखन जो बोर यह लीजे ।
बहुत है मीठे बोर राम इनको चाखीजे ।
लक्ष्मण उपज्यो शक झूठन इनकी किम लीजे ।
फेंक दिये दूम लखन मन उनको न पतीजे ॥

॥ दोहा ॥

अन्तर्यामी जाणली, हंस बोले श्रीराम ।
रे रे लक्ष्मण जुल्म कियो, सबी बिगाड़्यो काम ॥

॥छप्पय ॥

तू है मेरो भ्रात तात मैं कहा सुनाऊँ ।
जो और करे अपमान तो उनको और दिखाऊँ ।
एक भक्त के काज लाज मैं मेरी गमाऊँ ।
उनकी न जावण पाय उपाय अनेक उपाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

मेरी लज्जा जाय भल, साधु लाज नहीं जाय ।
साधु लाज के कारणे, सर्वस्व देऊँ गमाय ॥

॥ कवित्त ॥

साधु ही साधु कहत वेद और पुराण सबी, साधुन को महत्व कोई बिरलां ही पायो है। साधुन को महत्व लख्यो अमृत अमोल चख्यो, पोल गोलागोल जाको सव ही जो उड़ायो है। आतम की निश्चय कीन्ह एक रूप सब में चीन्ह, मन को जो हतो भरम सगरो मिटायो है। कहे रव मानसिह ऐसा कोई साधु होय, ऐसे साधुन को हम दास ही कहायो है।

॥छप्पय ॥

श्रीमुख कहे गोपाल सन्त अति मोहे सुहावे ।
ऊँच नीच नहीं मोर जो कोई साधु बन आवे ।
क्या ऊँचा क्या नीच जगत के भाव कहावे ।
मेरे तो मन एक साधु समता मन लावे ॥

॥ सोरठा ॥

उर ममता को त्याग, साध सत्य मन में धरे ।
मानसिह मिटे द्वेष, तन के करम सब झड़ पड़े ॥

॥ छप्पय ॥

ऐसी कही रघुनाथ तात मन में घबरायो ।
मुखकर हाहाकार नयन में नीर बहायो ।
जो दूजो कर लेत चौरासी में जात गिरायो ।
पर तू है मेरो भ्रात जाहि ते तोय बचायो ॥

॥ दोहा ॥

बात सुनो रघुनाथ की, तो खाये माँग के बोर।
रामचंद्र ले वही दिये जिनकी खाण्डी कोर॥

॥ छप्पय ॥

और तो लिये उठाय बोर एक पीछे रहायो।
भई सजीवन सोय अन्त में काम जो आयो।
कहे राम रघुनाथ दण्ड यह दीन्हो ताही।
तुमको दण्ड ने देऊँ जगत कोई माने नाँही।
होय नीति में विरुद्ध बचाय लियो जान के भाई।
तातें दण्ड देऊँ तोय मन्त को मान रहाई॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह इण जगत में, नीति राम सी होय।
अजहू राम अवतार है, कसर न समझो कोय॥

॥ छप्पय ॥

कथा अनेक सुनाय मोक्ष शबरी को पठाई।
दियो मोक्ष को धाम ग्रन्थ में साफ सुनाई।
फिर ऐसा कोई होय हरि उनके घर आवे।
हरि है दीनदयाल आवत कछु देर न लावें॥

॥ दोहा ॥

मान कहे मित्रो सुनो, ऐसो भक्त को मान।
करजो भक्ति डरजो मती, हाजर खड़ो महान॥

॥ सवैया ॥

और फिरे सब जंगल में ऋषियन के मग बहु बेर जो खाये।
आज सवाद यह बेर है जैसे ऐसे सवाद कभी नहीं पाये।
क्या कहूँ लक्ष्मण तोकू ये स्वाद मैं मम मुख महिमा कही न जाये।
दाम मधु की जो देऊँ मैं उपमा तो इनतें वे कम ही रहाये।
ऐसे मीठे बेर यह लाई है मान कहे रघुनाथ सराये।
सराह सराह के खाय रहे प्रभु आपने दास को मान बढ़ाये॥

निषाद महिमा

॥ गान ॥

राग दुर्गा या सोरठ । ताल तिताला या कैरवा ॥

भरत भैया मोहि निषाद सुहावे । और दाय नहीं आवे, भरत . ॥ टेर ॥

कहाँ पर मात तात जो कहिये, तुम कहो कहाँ से आवे । जो यह निषाद होत नहीं बन में, कन्द मूल कुण लावे । ॥ १ ॥ गुहा निषाद पार मोहि कीनो, किम गुण भूल्यो जावे । तुमको विसरूँ इन्हें नहीं विसरूँ, हिरदे में अटकावे ॥ २ ॥ शस्त्र सवारी नहीं कुछ इनके, तुम से युद्ध ठहरावे । देखो हिम्मत कैसी है गुहा की, मरण ते नही घबरावे ॥ ३ ॥ जो अपनी तुम कहानी न केवो, तो ये युद्ध रचावे । मरण पर्यन्त आने नहीं देवे, तुम से हट्यो न जावे ॥ ४ ॥ मो तो मिलन मन में रह जाती, और तुम बीच ही मर जावे । देखो वीरता इन निषद की, तुम से नाँय डटावे ॥५॥ नही कुछ दियो हम इन निषाद को, ये कैसी प्रीति निभावे । तुम ते अधिक गुहा मेरे कहिये, स्वप्ने न दूर परावे ॥ ६ ॥ कहत कहत हरि गुहा के गुण, लेकर कण्ठ लगावे । प्रेम विवश हरि भूल गये सुध, नैनन जल बरासावे ॥ ७ ॥ भरत सहित नगर नर नारी, चकित से रह जावे । मुहूर्त एक रहे हरि व्याकुल, प्रेम कथा क्या गावे ॥ ८ ॥ ऊँच नीच नहीं भाव हरि के, ना कोई जात ठहरावे । वाल्मीक ग्रन्थ में देखो, केते ही नीच अपनावे ॥ ९ ॥ देवनाथ रघुनाथ रूप धर, दीन उबारण आवे । मानसिंह कहे मुझ से नीच को, तारत जेज न लावे ॥ १० ॥

॥ गान ॥

राग दुर्गा या सोरठ । ताल तिताला या कैरवा ॥

॥ निषाद वचन ॥

दीन को तुम बिन कौन उबारे । नीच नीच कर सब ही
दुरावे, कुण एक दृष्टि निहारे ॥ टेर ॥

विप्र कहे हम सब से ऊँचे, कोहु न तुल्य हमारे । क्षत्री कहत बलिष्ठ हम ही है, हम रहे दीन विचारे ॥ १ ॥ वैश्य बने माया अभिमानी, हमको सब ही मारे । हे प्रभु आप बिना को ऐसो, करदे नाव किनारे ॥ २ ॥ आपको हाथ हमें डर किनको, सब ही परे झक मारे । दीनानाथ हाथ तुम गहियो, अब हम किनके सारे ॥ ३ ॥ मैंठो जान शयण में लीनी, कर दीनो भव पारे । कृपासिंधु हम दीन तुम्हारे, करके दया सम्हारे ॥ ४ ॥ देवनाथ रघुनाथ रूप प्रभु, दुःसह द्वन्द दुःख टारे । मान गरीब आपको कहिये, काढ़ो भव जल बारे ॥ ५ ॥

वल्लभाचार्य और धन्ना जाट

॥ चौपाई ॥

वल्लभाचार्य भक्त मन मांई। भोजन करता नित हरि को बुलाई ॥
नित प्रति भोजन करत गोपाला। मन बीच विचार विशाला ॥
एक दिवस ऐसो चल आयो। भक्त दोय एक साथ बुलायो ॥
जात किसान धना जहि नामा। भक्ति करत हरि की निष्कामा ॥
जाडो रोट मिल्यो कछु नांई। ले हरि को उण भोग लगाई ॥
कौन घटे और किनको बढ़ावे। पुत्र बाप के सबही कहावें ॥

॥ दोहा ॥

हरि ने कीन्ह विचार जब, कीजिये कौन उपाय।
किनके घर अब जाईये, और किनके घर नही जाय ॥

॥ चौपाई ॥

उत वल्लभ ने थाल सजायो। घण्टा शब्द कर हरि ही बुलायो।
लेकर रोट चले तत्काला। पहुंचे जाय परोसण थाला ॥
ले वल्लभ ने पड़दो उठायो। रोट सोट सो आगे पायो ॥
देख रोट वल्लभ अकुलायो। चकमो रोट कहां से आयो ॥

॥ दोहा ॥

पीछे पड़दो डार के, वल्लभ करी पुकार।
उसी समय हरि आविया, दीन बन्धु करतार ॥

॥ चौपाई ॥

हे हरि तुम क्या अनरथ कीना। किनको रोट कहां धर दीना ॥
कहो आप किन घर ते लाये। कौन जाति प्रभु हम हि बनाये ॥
हम तो सुन्दर थाल सजाये। फक उडे जैसे फलके लाये ॥
तब हम कर बोले यदुराई। यें वल्लभ तुम पूछो नांई ॥
मैं भक्तन ने भयो हैराना। दोनों तरफ मो को ले ताना ॥
उत तो धना इत तुम ही बुलायो। कहा करूं बस कछु न चलायो ॥

॥ दोहा ॥

ले धायो मैं रोट को, बैठ न खावण पाय।
खायो सो तो खा लियो, शेष थाल के मांय ॥

॥ चौपाई ॥

तव वल्लभ मन में अकुलाये। हा हा करके वचन सुनाये।
तुम हरएक गृह चल जावो। हर हाथन को भोजन पावो॥
र र जुल्म आप यह कीना। हम को नाथ भ्रष्ट कर दीना॥
हम तो विप्र उच्च कुल माँई। हुये भ्रष्ट तुम झूठन खाई॥
भूल करी मैं झूठन खाई। अब तब झूठन खाऊँ नाई॥

॥ दोहा ॥

ऐसी वात हरि ने सुनी, हँस वोले गोपाल।
रे वल्लभ अब ही लख्यो, अब ही पड़्यो तोय ख्याल॥

॥ चौपाई ॥

मेरी तो रीति है आदि सदाई। ऊँच नीच मेरे कछु नाँई॥
कद शवरी अचार जो कीना। जिनके वेर झूठे फल लीना॥
वालमीक कद होते आचारी। जिनके हाथ जीमे कई वारी॥
कहो निपाद उत्तम किन कीना। उन हम शामिल भोजन लीना॥
वन्दर रीछ नीति से वारा। सो सुग्रीव हतो मित्र हमारा॥
निशिचर जाति विभीषण केरी। जिनके हाथ जीम्यो कई वेरी॥
मैं ही जीम्यो और लखन जिमायो। जो हलधर अवतार धर आयो॥
अब पछतायाँ क्या होवे भाई। भ्रष्ट भयो ते सुधरत नाँई॥

॥ दोहा ॥

भूल गये वलभेश तुम, अव सोचे क्या होय।
विगड़्यो सो तो विगड़ गयो, अव सुधरे नहीं कोय॥

॥ चपाई ॥

नारद दासी पुत्र कहायो। उन हम भोजन भेलो पायो।
विदुर नारी नहीं चौका दीना। केल पत्र फल भोजन कीना॥
गई सो गई और अव क्या भाई। अजहूँ बुलावे तो उत्तर देऊँ नाँई॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कोई। मोहि बुलावे जाके शिर नहीं होई॥
जीवत मरे नाँहि डर आवे। मुड़दा मस्त कोई मुझे बुलावे॥
रे वल्लभ तू मुड़दा नाँही। देह अभिमान रयो तेरे माँही॥

॥ दोहा ॥

वल्लभ होय उदास अति, वोले वचन सुनाय।
पायो सो तो पालियो, अव मैं पाऊँ नाँय॥

॥ चौपाई ॥

मैं कब कयो कि मोय बुलावो । क्या मै भूख मरत तेरे आवो ॥
मोको भूख प्रेम है सोई । बनी सो बनी अब बने न कोई ॥
मम झूठन जो तू नही खावे । हम तब कुल मे कबुहन आवें ॥
मूरत को भल भोग लगाओ । मेरे दरस अब तुम नही पाओ ॥
ऐसे कहि हरि अन्तरध्याना । फिर बल्लभ मन मे पछताना ॥
रे अफसोस जुल्म कर दीना । हमने भूल कर यह क्या कीना ॥

॥ दोहा ॥

जो होनी सो हो गई, दोष मेरो कछु नाँय ।
यह मैंने जाण्यो नही, हरि लीनी मति हराय ॥

विदुर महिमा

॥ छप्पय ॥

विदुर नही घर माँय हरि तिनके घर आये ।
आप हरि कहि बात हमें अति भूख सताये ।
न्हाती थी घर माँय वस्त्र तन एक रहाये ।
नाम सुन्यो जब कृष्ण भूल सुध बुध बिसराये ॥

॥ दोहा ॥

तन की सुध बुध भूल के, खोल दीन्ह जिन द्वार ।
घर केले सुन्दर हते, जो ते चाली दो च्यार ॥

॥ छप्पय ॥

पत्र पत्र तो देत केल फल नीचे गिराये ।
पावत हरि प्रसाद प्रेम से खूब मराये ।
फिर बगीचे बहुत न ऐसे हमें खिलाये ।
घरे और तो बहुत हमें उनके नही भाये ॥

॥ दोहा ॥

दाख बिदाम छुहारादिक, मेवा खाये अहोत ।
जैसो स्वाद इन केल में, ऐसो कही न होत ॥

॥ छप्पय ॥

वस्त्र हीन विहीन खबर जिनकी नही पाई ।
ढके उघाड़े मुह सुध जिनकी कछु नाँई ।

इतने विदुरजी आय चित्र से खड़े रहाई ।
भये बावरे दोनों लखे एक हु को नाँई ॥

॥ दोहा ॥

कहे विदुर मन मार के, मुख से वचन सुनाय ।
नख न दिखलाती जिन्हें, सगरो वदन दिखाय ॥

॥ छप्पय ॥

सुनी पति की बात चकित मन में चौंकि आई ।
टूटी प्रेम की डोर व्यवहार में आन फँसाई ।
छायो लाज को साज तुरत उठ घर को धाई ।
हंस कर कहे गोपाल विदुर तैं गजब कराई ॥

॥ दोहा ॥

केल लीन्ह अब विदुरजी, हरि को देत खिलाय ।
हरि पावत मुख बोलिया, वो आनन्द अब नाँय ॥

॥ छप्पय ॥

विदुर करे चतुराई नहिं अब भावे म्हांने ।
ऐसे तो खाये बहुत पड़े भावज के पाने ।
क्या थी हमको भूख भूखे कब हम हू रहाने ।
हम सब जग को देत मिले क्या अन्न नहीं म्हांने ।

॥ दोहा ॥

भूख हती हमको नहीं, प्रेम परीक्षा काज ।
केल पत्र खाने लगे, कहे मान महाराज ॥

॥ गान ॥

राग सारंग, तर्ज 'वाणी' की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई संतन के गुण न्यारा । शुद्ध स्वरूप रूप निज ओलखे, नहीं मीठा नहीं खारा; मेरे संतो; संतन के गुण न्यारा ॥ टेर ॥

चाहे रहो वन में चाहे वस्ती में, नहीं दरसे दोय धारा । नारी पुरुष दृष्टि नहीं देखे, एको ही रूप विचारा; मेरे सन्तो, सन्तन के. ॥ १ ॥ चाहे कोई शिर पर चंदन लेपो, चाहे कोई डारो छारा । चाहे कोई वेद विधि सूंकरो विनती, चाहे काढो दस गारां; मेरे सन्तो. ॥ २ ॥ साधू जिके मरे नहीं मांगे, मांगे सो भिखियारा ।

जो आवे तो झोड उडावे, हर्ष न शोच लिगारा, मेरे सन्तो ॥ ३ ॥ माया विशिष्ट ब्रह्म निज ओलखे, भागे भरम अन्धारा । तत्त्वमसि में 'असि' पद टाले, सही स्वरूप निहारा, मेरे सन्तो ॥ ४ ॥ कनक कामिनि स्वप्ने न चावे, क्रोध न करे लिगारा । ऊपर हाथ नीचे नहीं मांडे, मांडे तो भांड गंवारा, मेरे सन्तो ॥ ५ ॥ एसे साधु मिले समदरशी तो, समझं प्राण आधारा । कहे मानसिंह लपट लोभी, स्वप्ने न मिलो करतारा, मेरे सन्तो ॥ ६ ॥

पोल-पाखण्ड

॥ कुण्डलिया ॥

मानसिंह इण जगत में, चल रही पोला पोल ।
मेरे एक की को सुने, यहाँ बाजे जगी ढोल ।
बाजे जगी ढोल, कानां सूं बहरा कीना ।
सुने न सुनने देत, भया कैसा मति हीना ।
एक एक सूं मिल रया, मच रही पोला गोल ।
मानसिंह इण जगत में, चल रही पोला पोल ॥

॥ कुण्डलिया ॥

पोल पोल कब तक कहूं, कयां सूं बरण नहीं आय ।
है सो अब पडी रहण दो, अपणे पजणो नाय ।
अपणे पजणो नांय, आवे ज्यां ने फेर बुलावो ।
जितने निकसे जीव, उतो ही लाभ उठावो ।
जितनो करो कमाइयां, उतनी मजूरी पाय ।
मानसिंह इण पोल में, अपणे तो पजणो नांय ॥

॥ गान ॥

ठुमरी, राग कालिंगडा । ताल कैरवा या तिताला ॥

पोल नगरी रे भरम नगरी, मत जावो मत जावो पोल नगरी ॥ टेर ॥
स्वर्ग ने नरक कहन की वातें, जाय किणी ने दिवी खबरी । मत जावो. ॥ १ ॥
अन्ध विश्वास दास विच उलझे, जावन है आँटोरी डगरी ॥ २ ॥ क्या है मोक्ष

मोक्ष फिर किनकी; कौन जाय भेजी है पतरी ।। ३ ।। च्यारों वेद पुराण कहे यूं, तेरी तो मोक्ष तुझमें ही परी ।। ४ ।। कई कहे भूत प्रेत और पित्तर; भरम डरे जग यह बपुरी ।। ५ ।। मान कहे मैं तो छोड़ी सगरी; अब नहीं मानूं सब जाओ अगरी ।। ६ ।।

।। गान ।।

राग सारंग । ताल कैरवा ।।

साधो भाई ब्रह्म केवे सोई झूठा । मूवा कहे और फिरत जीवता, पकड़ जगत सूं खूंटा ।। टेर ।।

आलसिया नर ब्रह्म बन बैठा, उलटाई कहत अनूठा । नियत कर्म क्रिया से छूटा, यूं कहे फिरिया अपूठा ।। १ ।। कहन सुनन तो कल्पित कहिये, कहो किम ब्रह्म होय चीना । हूं तू सब ही वाचक कहिये, कहे संत परवीना ।। २ ।। क्या कोई देवे कोण कोई खावे काल कौन भख जावे । इतना कयो दाल सूं छूटा, गांठ दाम नहीं जावे ।। ३ ।। मुख वाचाल लाल नहीं पावे, सुनी सुनी बक जावे । कहे मानसिंह सुणो भाई साधो, मोय परतीत न आवे ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग टोड़ी–जौनपुरी । ताल झूमराया दीपचन्दी ।।

अजर अमर रस पायो, अबके अजर अमर रस पायो ।। टेर ।।

वर्णाश्रम सभी में भटक्यो, और हाथ नहीं आयो । जहां पै गया तहां बान्ध के चरायो, छूटो अबके फिरायो ।। १ ।। बान्ध्यो तो बन्ध्यो जात तोड़ाय में, पर पक्ष की भींत चिणायो । मोक्ष अन्ध विश्वास को तालो, जकड़ के खूब जड़ायो ।। २ ।। पड़े रहे बगड़ के अन्दर, नहीं कहीं गयो न आयो । निजानन्द को जाण्यो नहीं मैं तो, मार घणा दिन खायो ।। ३ ।। और तो मिले अन्ध विश्वासी ; हाहा कर चिल्लायो । देवनाथ गुरु सुनी हाक यह, दया को समुद्र उल्टायो ।। ४ ।। शूरा बनके तोड़ी भींत यह, चपके से आय उठायो । मानसिंह गुण कदेयन भूलूं, भेड़ को सिंह बनायो ।। ५ ।।

।। गान ।।

रेखता । ताल कवाली ।

जबर है द्वैतवादी ये, नहीं निज पद दिखाते हैं ।। टेर ।।

मरे मगहर में हो गद्धा, मुक्ति काशी में पाती है । पोल के ढोल ये बाजे, हमें पत कैसे आती है ।। १ ।। बिगाड़ा मगहर ने क्या कुछ, मरे वहां खर क्यों होते हैं ।

भला काशी ने क्या कीया, मरे वहाँ मोक्ष पाते हैं ।। २ ।। तजी कबीर ने जाकर, देह को अपनी मगहर में । नरक उनको है फिर कैसा, हमें क्यों नही बताते हैं ।।३।। बने काशीद उस घर के, तुम्हारे पत्र आते हैं । कौनसा पत्र वो आया, हमें क्यो ना बचाते हैं ।। ४ ।। गया में पिंड देने से, पित्र पीछे न आते है । घुसे वो कौन से घर में, हमें क्यो ना दिखाते हैं ।। ५ ।। जबर है पोल आलीशाँ, पता इसका न पाते है । पूछे नही जबाब कोई जब तक, माल ये मुफ्त खाते है ।। ६ ।। अगर जगदीश मैं होता, तो करता मेरी दिल आई । हुवा जगदीश जो अधा, पोल जिसमें चलाते हैं ।। ७ ।। कहे नृप मान परे जावो, न चाहिये मुक्ति तुमरी यह । हमारी मोक्ष तो हम से, वृथा ये क्यो बहकाते हैं ।। ८ ।।

।। गान ।।

राग सोहनी । ताल तिताला ।।

भूल भूल माँही मारा, इतें दिन भूल भूल माँही मारा ।
अब नही आन परूँ ठग बन्धन, अपने ही आप विचारा ।। टेर ।।

स्वार्थ हेत साच नही बोले, सबने परदा डारा । सत गुरु देव कृपा करी हम पै, तुरत नकाब उतारा । इतें दिन भूल ।। १ ।। कोई कहत तुम जावो बन में, कोई कहे जप माला । कोई कहे कर यज्ञ हवन को, न्यारा ही न्यारा पुकारा ।। २ ।। कोई कहे कर बज लगोटा, कोई कहे नेति द्वारा । कोई कहे पच मुद्रा कर साधन पीवहु अमृत धारा ।। ३ ।। कोई रेचक पूरक और कुम्भक कहवत न्यारा ही न्यारा । विश्व विराट भज्यो मेरे कुम्भक, को लहे दु ख की धारा ।। ४ ।। विकर्म कर्म किया न कोई मैं करता हूँ ससारा । सब कछु करूँ और रहत अकर्ता, ज्यों जल से कमल रहे न्यारा ।। ५ ।। देवनाथ गुरु समरथ मेरे, जिन भव बहुत निकारा । मान गृहस्थ के बीच सन्यस्त है, द्वितीय भरम निवारा ।। ६ ।।

।। सवैया ।।

कोऊ कहे हम क्षत्री बने और कोऊ कहे हम विप्र है भाई ।
कोऊ कहे हम वैश्य वर्ण है हम सम और नही जग माँई ।।
ब्राह्मणक्षत्री वैश्य शूद्र बन करलो तुम अपनी मन भाई ।
देहाध्यास भरयो चूड़ापण त्यारो वर्ण चूडा ही कहाई ।।

।। सवैया ।।

एक कहे सन्यासी बने हम एक जो साधु को भेष सजायो ।
एक कहे हम सिंह से है और एक को देखो गाय बनायो ।

कोऊ कहे हम जती बने हैं कोउक बुद्ध के मत को उठायो।
कोउ बने हे दसा और वीसा इन न्यारो ही न्यारी जिकर चलायो।
कोउक दादू कबीर के पंथ में पक्षापक्ष सूं जगत डुबायो।
कोउक खाखी खाख लगाय के खाख ही खाख में खाख मिलायो॥

॥ सवैया ॥

केतेक नाथ बने जग में जिन कान को फाड़ के मुद्रा चढ़ायो।
है जिनको तो भूल गये सब अपनी ही खैंचाताणी लगायो।
मान कहे रे पछताऊँ अबे मैं पोल ही पोल में खूब फसायो।
देव हूँ नाथ ने हाथ पकड़ चुपके से हतो सो मोहि दिखायो॥

॥ सवैया ॥

अन्ध ही अन्ध भये सगरे इन अन्धन ने क्या रोल मचाई।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र क्या देखो कैसी इन झौड़ मचाई।
गृहस्थ संन्यस्त और वान हि प्रस्थयों कोई ब्रह्मचर्य की शोर मचाई।
है जिनको तो ये भूल गये मति आई सबे किलकोर मचाई।
केते हि सिद्ध और साध बने कई पन्थपन्थ झकोर मचाई।
जे ही ज पन्थ को सन्त कहीये तो भूल गये ढम ढोर मचाई।
मान कहे अब रह तू तो चुप रे मन तैंने क्यों शोर मचाई।
है तो पड़ो सब ऊँडे कुवे विच आपनी राह करो रे सफाई॥

॥ गान ॥
राग बसन्ती । ताल कैरवा ॥

साधो भाई यह मोये हाँसी आवे। एक सूँ एक दबादब
वैठा, एक ही एक सरावे॥ टेर॥

क्षत्री कहे विप्र गुरु मेरा, रक्षक विप्र सुनावे। कहे यूँ वैश्य दोनूं सिरताजा, दे धीरज धन खावे॥ १॥ केवे यूं शूद्र कामसेवा को, सेवा खूब बजावे। अन्तर लाग सभी के कहिये, एक को एक न सुहावे॥ २॥ जाणे विप्र मारे क्षत्रिन को, वो वैश्य पै दाव चलावे। जाणे वैश्य कि इन तीनों को, हम ही हजम कर जावें॥ ३॥ शूद्रन मन में लाग ऐसी लागी, अपने में इनको मिलावे। ऊपर मीठा खोट अन्तर में, वक्त सूं दाव चलावे॥ ४॥ क्षत्री कहे हम सब से ही ऊंचे, हम ही जगत बचावे। केवे विप्र हम मुख अग्नि के, हम ही तो काम चलावे॥ ५॥ कहे यूँ वैश्य जो हम नहीं होते, लक्ष्मी स्थिर ना रहावे। भरण पोषण करे कुण हम विन, सबसे बड़े

हम कहावे ॥ ६ ॥ कहे शूद्र सब काम हमारे, हम से बच कहाँ जावे। पाँव बिना के हाते मब पगले, यह तो झूठ ही काम चुदावे ॥ ७ ॥ देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, मेरो तो भरम मिटावे। कहे मानसिंह है सो हैं हम, कुण बण के दुःख पावे ॥ ८ ॥

॥ कवित्त ॥

जुल्मिन को जुल्म बुरो नहारन के नाथ डारी, डार करके नाथ याको मरकट ज्यों नचायो है। होम और तीर्थ आदि पूजा और पाठ कही, फन्द यह विषन्द जाते ऊँचो हू न आयो है। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र चारो की भार ऊपर, देखो यह सिंह कैसो कब्ज जकड़ायो है। याते तो भेड औ स्वतन्त्र जो होत ऐसी, जंगल में जाल खाल अपनो मन चायो है। पशुओं में बदनर यह बध्यो जीव कब्ज कैसो, बाँध्यो याको कोई न छुड़ायो है। देवनाथ हाथ गह नोद बध खींच लियो, बाहिर जब आयो तो देख घबरायो है। चाहत यह तो फेर भी फँसावने को डार फाँसी, पर पहिले जो दुःख पाया वो आज याद आयो है। कहे यूं मान मैं नरेश हूँ स्वत सहज, हाय कर राजा कौन गुलाम पद पायो है॥

॥ सवैया ॥

जुल्म हो जुल्म किया जबरा जिन स्वारथ की यह आग लगाई।
ऊपर से फल को घृत होम के दिन दिन यह दूनी चेताई।
आल, मे आल मिलाय दिवी अब कहो यह आग बुझे किम भाई।
फल को घृत दूर हटाय दहे तो शायद यह आग बुझे तो बुझाई।
पर बहुत दिनो से रूढ़ी पड़ी सो अब यह क्यो कर दूर पराई।
न जाने स्वर्ग है दूर कितो उनको कुछ पत्ती हमें नही आई।
कहे मान इस अन्ध के कूप बीच हम तो न परे नही पड़ना चाई।
जिनको चहिये कुछ स्वर्ग की इच्छा वो ही परो हमको कुल नांई ॥

॥ दोहा ॥

यहूँ साधन जिनके नही, भले ही स्वाँग सजाय।
जैसे स्वाँग बहुरूपिया, घर घर जग ठग खाय ॥

॥ कवित्त ॥

केते हु के मन देखो नीच और ऊँच अड़यो, केते हु के मन नारी पुरुष अरुझायो है। केते हु के मन माँही मूर्ख और विद्वान् फस्यो, केते हु के जाती और विजाती उठ धायो है। मजहब हू में न्यारे मजहब देखे है अनेक मित्रो, देखो कैसी पोल इन हिंद मे चलायो है। वेद ग्रंथ कहे एक 'तत्त्वमसि' रूप तेरो, कहत न्यारो न्यारो

जगत खूब ये फँसायो है। कहे राव मान मैं कब तक उड़ाऊँ पोल, एक गाडा काढ़ूँ तो हजार गाडा पायो है। मेरी निश्चय मेरे बीच करी तो आनन्द भयो, द्वैतवादी दुःख जाको कीनो यह सफायो है॥

॥ कुंडलिया ॥

पढ़ पढ़ पोथी पोल की, थोथी रह गई बात।
मानसिंह कब तक कहूँ, कहवत मन शरमात।
कहवत मन शरमात, जाल ओ मोटो भाई।
गिनत गिनत थक जात, चले कछु ना चतुराई।
एक जाल अलगो करूँ, फेर हजारों आत।
पढ़ पढ़ पोथी पोल की, थथी रह गई बात॥

॥ कुंडलिया ॥

याते तो तुरक ही भला, ज्याँरो एक कुराण।
याँ पर तो गणना नही, एते वेद पुराण।
एते वेद पुराण, जिण में मत न्यारा न्यारा।
कोऊ एक मत नाँहि, फंसे यूँ जीव विचारा।
मन आई बकदी सबे, कर कर खेंचाताण।
याते तुरक ही भला, ज्याँरो एक कुराण॥

॥ गान ॥
राग सोहनी। ताल तिताला॥

देखी यह मैंने ऐसी उल्टी रीत। जीते तो ज्ञान सुन्यो नहीं कब हू, अन्त में गावे सब गीता के गीत; यारो; देखी ॥टेर॥ उमर सगरी काम किया माठा, बुद्धि भई विपरीत। अन्त काल कहा सुने वो बपुरो, कैसी चली यह उल्टी उमर सगरी काम किया माठा, बुद्धि भई विपरीत। अन्त काल कहा सुने वो बापुरो, कैसी चली यह उल्टी अनीत; यारो. ॥ १ ॥ कृष्ण योग को नीचो दिखावत, छाई बुद्धि पर भींत। जो पहिले याको सुनतो समझतो, लेवत जीतो ही जगत जीत; यारो. ॥ २ ॥ खान पान की सुधि नहीं जिनको, क्या करे अर्थ सहित। उनके मार मची शिर जम की, रह लाव लाव के सब ही गीत; यारो. ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु कही हमें नो, जैसी मैं कह दीत। कही जो कही क्या नजरे देख ली, मान कई ऐसे गई हैं बीत; यारो. ॥ ४ ॥

॥ गान ॥
राग भैरवी - रेखता । ताल कवाली ॥

जगत उल्टी हुई कैसी, काम उल्टा चलाते हैं । ।टेर ॥

कर्म चाहे कैसे ही करले, नही परवाह है कुछ इसकी । जरा सा देके गंगा जल, सहज मुक्ती बताते हैं ॥ १ ॥ मानते गंगा जल कैसा कि, यह विष्णु चरण जल है । स्वयं विष्णु ही है जल में, उसे तो सब भुलाते हैं ॥ २ ॥ उमर सगरी गई जिनकी, मद्य और मास खाने में । अन्त में दूध दही देकर, उन्हें झट शुद्ध बनाते हैं ॥ ३ ॥ उमर बीती हो किस्सो में, चाहे नौकर ही वैश्या का । मगर जब वक्त वो आता, बैठ गीता सुनाते हैं ॥ ४ ॥ लगे अब कहन को सब ही, तजो तुम मोह दुनिया मे । सुनाया कृष्ण अर्जुन को, वही तुमको सुनाते हैं ॥ ५ ॥ उन्हें कुकर्म का बदला, खड़ा सन्मुख हो जाता है । दर्द उसका नही देखें, वो अपनी बकते जाते हैं ॥ ६ ॥ सुनी नही जन्म में उसने, कि गीता चीज क्या होती है । आखिरी वक्त में देखो, यह मुक्ति को पहुचाते हैं ॥ ७ ॥ चाहे मोक्ष हो नही हो तो, इन्हें मतलब क्या था इससे । यार मतलब के हैं यह तो, बना मतलब यह आते हैं ॥ ८ ॥ चाहे वो स्वर्ग मे रहे वे, चाहे वो नरक में ही हो । पत आया कभी कोई, नही उसका दिखाते हैं ॥ ९ ॥ देव जो नाथ है मेरे, सुनाई जीवते गीता । यों ही मैं स्वर्ग में बैठा, गिहा दूजे न आते हैं ॥ १० ॥ चाहे मर जाँय भी हम तो, हमें कोई मत सुनाना तुम । मान कहे कृष्ण हैं हम खुद, हमारी गीता हम ही गाते हैं ॥ ११ ॥

॥ गान ॥
राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

देखो भरम पोल जगत, जागे को जगावे ॥ टेर ॥

तीन लोक पति देव, कैसे सोवन पावे । जगत हाक सुने नही, तो घंटा कहा बजावे ॥ १ ॥ अपनी नीद उडत नही, हरि की नीद उडावे । पाँव बीच आग लगी, पहाड की बुझावे ॥ २ ॥ अपने बीच खेल रच्यो, खोज्यो नही जावे । मदिर मदिर को भटक, उमर सब गमावे ॥ ३ ॥ देवनाथ जाग्रत मिले, मान को जगावे । मेरो कृष्ण जागे सदा, नांहि सोवन पावे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥
राग बसती ॥ ताल कैरवा ॥

क्या दुनिया भई गैली रे । सालगराम भूल गयो अपनो, सगली बिगाड़ी है शैली,
मेरे सतो, क्या दुनिया भई गैली रे ॥ टेर ॥

वृक्षों व्याह करे पथरा सूं, हांसी होय घणेरी रे । जैसी ही बनडो बनडी है तैसी, गुडियाँ रो खेल रचेली, मेरे सन्तो, क्या दुनिया ॥ १ ॥ उमर सगली पंच द्रव्य

कमायो, माया पल में हरेली रे। माल मसखरों ने मती रे लूटावो, क्यूं थे उड़ाग्रो भर थैली, मेरे सन्तो ॥ २ ॥ बोले छले सो बिसर गया सगला, उलटी राय से झेली रे। अरण बोल्या देखो देव मनावे, यों ही डूब मरेली, मेरे सन्तो ॥ ३ ॥ बोले मंत्र व्याह रा बैठा, पर मन माँहि लाव रहेली रे। अंध विश्वासी भरम माँहि झूले, उलटी राह पकड़ेली, मेरे संतो ॥ ५ ॥ व्याह रचावे दोनूं ने उठावे, फेरा आप फिरेली रे। अपरणे व्याह आप नहीं करले, तो ये क्या भली करेली, मेरे संतो ॥६॥ जैसा ही विप्र शिष्य पुनि तैसा, ऐक न कसर रहेली रे। व्याह नहीं ये तो फँद माया रा, यूं नहीं भूख भगेली, मेरे सन्तो. ॥ ७ ॥ देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, सिर पर सन्मुख झेली रे। मानसिंह कहे अबे नहीं आऊँ, शिक्षा घणा दिन ले ली, मेरे सन्तो. ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

ज्योत ही ज्योत कहें सब ही कर झाल सी यह यूं ज्योत जगावे।
होम दियो घृत अग्नि में इरण ज्योत ही ज्योत में जगत फसावे।
जीव विचारे फसे यूं कई इन ज्योत को अन्त कोई नहीं पावे।
अन्तर्ज्योति को भूल गये और बाहिर ज्योति सी खूब जगावे।
आपणी ज्योति तो आप जगे जद और ही ज्योति को भरम मिटावे।
कहे मान घणा दिन भटक रहे इन पोल की ज्योति में नहीं अब आवे।

॥ सवैया ॥

बाहर ज्योत जगाय जगाय के लाखों ही जीव जो यों ही डुबाये।
सेर ने पाव की गिनती नहीं मरण मरण भर घृत जो यों ही जलावे।
बाहर ज्योति तो बाहर रही वो अन्तर्ज्योति कहीं नहीं आवे।
अन्तर्ज्योति तो मान जगे जद मान मिटे गुरु से सुधि पावे ॥

॥ गान ॥

राग आसावरी या कालिंगडा । ताल दीपचन्दी या कैरवा ॥

साधो मैं तो पूजूं नहीं देव भिखारी से। मेरो देव सभी को देवे, तीनों ही लोक दातारी रे ॥ टेर ॥

आप ही आशा करे जगत की, पूजा चढ़न विचारी रे। मेरो तो देव दातार जबर है, हीरां रो व्यापारी रे ॥ १ ॥ बिन ताकत को देव क्यों पूजूं, अपनी न करे रखवारी रे। अपने चोर आप नही रोके, कुरण नित जड़त किवाड़ी रे ॥ २ ॥ मेरो तो देव निशंक रहे नित, है वो खेल खेलारी रे। घड़िया देव बोलाया न बोले, यह च्यारों ही वेद बकतारो रे ॥ ३ ॥ देव विचारे में कौन दोष है, ऐसा ही मिलिया पुजारी रे।

देवन को तो अगष्ट दिखावे, माल मसखरी मारी रे ।। ४ ।। देवनाथ निज निश्चय दीनो, यह है मूर्ति हमारी रे । मानसिंह कहे पज्यो मैं बहुत दिन, देखी या पोल तुम्हारी रे ।। ५ ।।

।। गान ।।

राग खम्भाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ।।

साधो भाई भागत लाज न आवे रे । अपनो देव आप में
कहिये, कोहू न निश्चय लावे रे ।। टेर ।।

घर के देव को भूल गये और, पर घर पथर पुजावे रे । पूजत पथर पथर से रह गये, ज्ञान कहाँ ते आवे रे ।। १ ।। सिर पै सिंदुर श्वान आय चाटत, ताही को नाँहि हटावे रे । अपने श्वान ताड नहीं सकते, वो क्या हमको बचावे रे ।। २ ।। धरम सनातन कहत सबी पर, क्या है खोज न लगावे रे । पक्ष सनातन ताको पकड के, निज तत निजर न आवे रे ।। ३ ।। सब तन में तन जाको कोई जाने, जो सच्चा सनातन पावे रे । पक्षापक्ष पडे सब उलटे, नहीं निश्चय दरसावे रे ।। ४ ।। देवनाथ गुरु सच्चे सनातनी, हुतो सो हमे समझावे रे । मान अनादि आवें न जावे, ऐसो सनातन गावे रे ।। ५ ।।

।। सवैया ।।

हाथ ते देव घड्यो पुनि हाथ ही हाथे बन्यो फिर आप पुजारी ।
आप ही घड़ के धरयो जो मंदिर मे कैसे भये देखो मूरख गवारी ।
आप घड़े को यह आप ही पूजत देखो इनमें कितनी लाचारी ।
घडन हार को जाणे नहीं और घडिये को पूज भये भिखियारी ।
देव ही नाथ कृपा करके जिन शोध लिवी यह मति हमारी ।
मान को मान उडाय दियो अब महान परस फिर क्यूं रहे दु खारी ।।

।। गान ।।

राग भैरवी । ताल तिताला या कैरवा ।।

पूज पूज मैं तो हारो, सकल जग पूज पूज मैं तो हारो ।। टेर ।।

कई स्वर्ण पाषाण की मूरत, घड घड भरे अपारो । भूल गये सब घडनहार को, घडिये घाट पुजारो ।। १ ।। कई चण्डी भैरव कई पूजे, कई लें ठाकुर द्वारो । सब में शुद्ध उसे सब भूले, टूक टूक कर डारो ।। २ ।। कई सिन्दूर कई लेगे अरगचा, देत रक्त की धारो । अपनो स्वरूप एक सो सब में, पर पोल पथ ने मारो ।। ३ ।। स्वादो सकल स्वाद वश होके, हिंस अहिंसन धारो । जालम जुल्म करे बहुतेरा,

अंत होत मुख कारो ।। ४ ।। अपने पूत के बदले देवत, अजिया सुत को मारो । जैसो पूत तुम्हें है प्यारो, तैसो ही उनको प्यारो ।। ५ ।। जीव मराय लेत है दक्षिणा, यह क्या राह तुमारो । विप्र कर्म को भूल गये सब, शूद्र कर्म उरधारो ।। ६ ।। देवनाथ गुरु कृपा करी जब, यह मन आन विचारों । मानसिंह विशेष न्यून नहीं, सब जग रूप हमारो ।। ७ ।।

।। गान ।।

राग सारंग । ताल कैरवा या तिताला ।।

कैसा फितूर मचाया, जगत में कैसा फितूर मचाया ।
अहिंसा कहे परम धर्म है, लाखों जीव उड़ाया ।। टेर ।।

लाम्बे धागे की डार जनेऊ, वेदों मंत्र सुनाया । सगरे कुकर्म बतायेइन्होंने, फिर फिर जग बहकाया ।। १ ।। अजिया सुत के बदले देखो, कितना सुत जिलवाया । बाप मरे और दादा मरे हैं, जिनकी न सहाय कराया ।। २ ।। पढ़ पढ़ गीता रह गये गीता, अनरथ अर्थ लगाया । गीता गाय पाय नहीं अंतम, ऊन्डे नीर डुबाया ।।३।। गोरख कबीर और शुक आदि ने, फेर फेर समझाया । स्वादी स्वाद तजे नहीं अपनो, काँगारोल मचाया ।। ४ ।। झूठे आप और कहें औरों को, देखो अनीति चलाया । झूठे साच कभी नहीं बोले, उल्टे अर्थ कर ढाया ।। ५ ।। भैरूँ पाबू और रामदेव, अवर ही अवर दिखाया । पंथ कुपंथ चले यूं सगरे निज मारग नहीं आया ।। ६ ।। कोई दसा कोई बीसा सेवे, जिग मिग जोत जगाया । मारग अकर्म निजा धर्म कहे, नकटा लाज न आया ।। ७ ।। बीजा धर्म झेले सोई धर्मी और निगुरा कहवाया । रूपां रामे री देवे ओपमा, यों लाखांई जीव डुबाया ।। ८ ।। महामलीन करम रा हीणा, रज वीरज ले पाया । पोल के ढोल कहां लग कूटूं इन सगरो जगत भुलाया ।। ९ ।। देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, सोय निज राह बताया । मानसिंह मग कभी न छोड़े, है ज्यूं कर दरसाया ।। १० ।।

।। दोहा ।।

मानसिंह संसार में, अजब निशानी पाय ।
दया जीवां पर ऊपजी, जब और ही और उपाय ।।
लोट लियो भैंसो कियो, ता पर छुरी चलाय ।
इन में ही माता मान ले, पशु वली सम पाय ।।
विप्र वैश्य दो जाति ते, हाथ न छुरी चलाय ।
तिनके कारण करत यह, ऐसी वली चढ़ाय ।।
मानसिंह मैं जान ली, सब ही पोल ही पोल ।

अपने मतलब कारणे, सभी बजावे ढोल ।।
मनुष्य बली ते पशु करी, पशु ते आटो होय ।
मानसिंह प्रत्यक्ष है, करे ये स्वादी मोय ।।
देवी बली जो माँगती, तो मनुष्य त्यागती नाँय ।
मनुष्य छोड जो पशु भखे, अब ये पशु न खाय ।।
मोको अब मालुम पडी, देवी न चाहे कोय ।
यह स्वारथ के कारणे, करे फितूर जो सोय ।।
मान कहे मानूं नही, ऐसा देव पुजार ।
मुक्त अंध विश्वास से, पड़े नरक की मार ।।

॥ दोहा ॥

इच्छा आदि ब्रह्म की, ब्रह्म में रहत समाय ।
मानसिंह सब में रहे, वो निज मेरी माय ।।
जीव भयो माता भई, ब्रह्म भयो मैं कथ ।
ब्रह्म जीव दोनो मिट्यो, फिर रयो न आदि अन्त ।।
मानसिंह इए विधि सदा, देवी पूजा कीन्ह ।
अहंकार भैंसो खडो, जो काट के झटका दीन्ह ।।
मैं ममता के रक्त को, दीनो हवन में डार ।
ब्रह्म ज्योति हरदम जगे, जार कियो मैं छार ।।
इच्छा रूप देवी हती, सो हो गई मेरो स्वरूप ।
मानसिंह मुझ में मिल्यो, फिर रयो नाम नही रूप ।।

॥ सवैया ॥

हिन्दु के देवन पूजत धापे अब तुरक के देव पै कीनी चढाई ।
उन से न भली जो हुई अपनी अब यह तो भली कर देवेगे भाई ।
हिन्दु की झूठन से धापे नही अब झूठन जाय तुरको की खाई ।
महाप्रसाद तो कडवो हतो अब शीरणी लागत मीठी सवाई ।
वेद के मन्त्रो से धाप गये अब पहुँचे है जाय दरूद के तांई ।
घर के निज देवो को झूठे किये अब तुरकन की जो करी सत्यताई ।
नृप मान कहे अबे शरम मरो कुछ इतनी न करो तुम निर्लज्जताई ।
कोई यह है न साचे और वो है न साचे अंध विश्वासियो ने पोल चलाई ।।

॥ सवैया ॥

पीर पैगम्बर पूजो किते तुम चाहे किते भैरूँ भूत मनावो ।
अजिया सुत साटे पूत लेवो तो पूत कबी सुपने नहीं पावो ।
चाहे पढ़ो तुम वेद के मंतर चाहे कुराण के कलमा भरावो ।
चाहे तो महाप्रसाद लेवो और चाहे तुम जाय के शीरणी खावो ।
एतो विश्वास करो सगरे पर बिन विश्वास नहीं कछु पावो ।
एतो विश्वास करो उनमें ते तो जगत पिता पर क्यों न लगावो ॥

॥ गान ॥

राग खम्भाच । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई देखो जगत अंधियारो । है तो आप बूझे
अवरां ने, भटकत द्वार ही द्वारो ॥ टेर ॥

मीन मेख करक सिंह तुल कहे, भरम फसायो भारो । नवग्रह पकड़ औरां ने देवे, क्या व्हेला जद थारो ॥ १ ॥ कोई ने तो चन्दा आठ बतावे, कोई ने केवे इग्यारो । घर रो चंद आवेला जद खोटो, तो कुण होसी मेटण हारो ॥ २ ॥ कोई ने शनिश्चर बुध समझावे, कोई ने भोम अंगारो । नव में दस वो आय मिले ला, तो मार पड़ेला सिर भारो ॥ ३ ॥ औरां रा ग्रह तो शान्ति करावे, अपणो कोई न विचारो । एक दिन ग्रह मारे ला सब थांने, नहीं तर ब्रह्म संभारो ॥ ४ ॥ जितने ग्रह और राशी थीं जितनी, भस्म किये हैं मैं तो सारो । मान कहे नित ठगो तुम जग को, अब नाम न लीजे हमारो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग खम्भाच । ताल दीपचंदी ॥

साधो भाई मेरे तो नित शुद्ध चंदा । सातों अर आयेंगे
उनको, जो पड़े हैं भरमना के फंदा ॥ टेर ॥

राशी और ग्रह सब मैं ने वणाये, मोको क्यों कर ग्रहंदा । मंगल रवि शनि नहीं म्हारे, नित उठ शुभ रहंदा ॥ १ ॥ राहु ने केतु आय ये थाँने, मैं इनमें नहीं बंधा । मेरे तो गुरु सदाई शुभ दृष्टि; हरदम रहूँ मैं स्वच्छन्दा ॥ २ ॥ क्यों ग्रह लागे करूँ क्यों शांति, यह सब उलटा धंधा । तुमरे ग्रह तुमही को लागो, मेरे तो परम आनन्दा ॥ ३ ॥ पांच शास्त्र जो पहिला जोया, पोल ही पोल भणंदा । छठा मत ज्योतिष मांहे आवे यह तो, पाणी का धागा पडंदा ॥ ४ ॥ नीर का धागा कभी नहीं निकसे, पोल ही पोल मरंदा । मानसिंह कहे कोई मत फसियो, ना कोई सूर नहीं चंदा ॥५॥

अपने मतलब कारणे, सभी बजावे ढोल ।।
मनुष्य बली ते पशु करी, पशु ने आटो होय ।
मानसिंह प्रत्यक्ष है, करे ये स्वादी सोय ।।
देवी बली जो माँगती, तो मनुष्य त्यागती नाँय ।
मनुष्य छोड़ जो पशू भखे, अब ये पशु न खाय ।।
मोको अब मालुम पडी, देवी न चाहे कोय ।
यह स्वारथ के कारणे, करे फितूर जो सोय ।।
मान कहे मानूं नहीं, ऐसा देव पुजार ।
मूक्त अध विश्वास से, पडे नरक की मार ।।

।। दोहा ।।

इच्छा आदि ब्रह्म की, ब्रह्म मे रहत समाय ।
मानसिंह सब में रहे, वो निज मेरी माय ।।
जीव भयो माता भई, ब्रह्म भयो मैं कथ ।
ब्रह्म जीव दोनो मिटचो, फिर रयो न आदि अन्त ।।
मानसिंह इण विधि सदा, देवी पूजा कीन्ह ।
अहकार भैसो खडो, जो काट के झटका दीन्ह ।।
मैं ममता के रक्त को, दीनो हवन मे डार ।
ब्रह्म ज्योति हरदम जगे, जार कियो मैं छार ।।
इच्छा रूप देवी हती, सो हो गई मेरो स्वरूप ।
मानसिंह मुझ में मिल्यो, फिर रयो नाम नही रूप ।।

।। सवैया ।।

हिन्दु के देवन पूजत धापे अब तुरक के देव पै कीनी चढाई ।
उन से न भली जो हुई अपनी अब यह तो भली कर देखेंमे भाई ।
हिन्दु की झूठन से धापे नही अब झूठन जाय तुरको की खाई ।
महापमाद तो कड़वो हतो अब शीरणी लागत मीठी सवाई ।
वेद के मंत्रो से धाप गये अब पहुँचे हैं जाय दरुद के ताँई ।
घर के निज देवो को भूठे किये अब तुरकन की जो करी सत्यताई ।
नृप मान कहे अबे शरम मरो कुछ इतनी न करो तुम निर्लज्जताई ।
कोई यह है न साचे और वो है न साँचे अध विश्वासियो ने पोल चलाई ।।

॥ सवैया ॥

पीर पैगम्बर पूजो किते तुम चाहे किते भैरूँ भूत मनावो ।
अजिया सुत साटे पूत लेवो तो पूत कबी सुपने नहीं पावो ।
चाहे पढ़ो तुम वेद के मंतर चाहे कुराण के कलमा भरावो ।
चाहे तो महाप्रसाद लेवो और चाहे तुम जाय के शीरणी खावो ।
एतो विश्वास करो सगरे पर बिन विश्वास नहीं कछु पावो ।
एतो विश्वास करो उनमें ते तो जगत पिता पर क्यों न लगावो ॥

॥ गान ॥

राग खम्भाच । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई देखो जगत अंधियारो । है तो आप बूझे
अवरां ने, भटकत द्वार ही द्वारो ॥ टेर ॥

मीन मेख करक सिंह तुल कहे, भरम फसायो भारो । नवग्रह पकड़ ओरां ने देवे, क्या व्हेला जद थारो ॥ १ ॥ कोई ने तो चन्दा आठ बतावे, कोई ने केवे इग्यारो । घर रो चंद आवेला जद खोटो, तो कुण होसी मेटण हारो ॥ २ ॥ कोई ने शनिश्चर बुध समझावे, कोई ने भोम अंगारो । नव में दस वो आय मिले ला, तो मार पड़ेला सिर भारो ॥ ३ ॥ औरां रा ग्रह तो शान्ति करावे, अपणो कोई न बिचारो । एक दिन ग्रह मारे ला सब थांने, नहीं तर ब्रह्म संभारो ॥ ४ ॥ जितने ग्रह और राशी थी जितनी, भस्म किये हैं मैं तो सारो । मान कहे नित ठगो तुम जग को, अब नाम न लीजे हमारो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग खम्भाच । ताल दीपचंदी ॥

साधो भाई मेरे तो नित शुद्ध चंदा । सातों वर आयेंगे
उनको, जो पड़े हैं भरमना के फंदा ॥ टेर ॥

राशी और ग्रह सब मैं ने बणाये, मोको क्यों कर ग्रहंदा । मंगल रवि शनि नहीं म्हारे, नित उठ शुभ रहंदा ॥ १ ॥ राहू ने केतु आय ये थांने, मैं इनमें नहीं बंधा । मेरे तो गुरु सदाई शुभ दृष्टि, हरदम रहूँ मैं स्वच्छन्दा ॥ २ ॥ क्यों ग्रह लागे करूँ क्यों शांति, यह सब उलटा धंधा । तुमरे ग्रह तुमही को लागो, मेरे तो परम आनन्दा ॥ ३ ॥ पाँच शास्त्र जो पहिला जोया, पोल ही पोल भणंदा । छठा मत ज्योतिष माँहे आवे यह तो, पाणी का धागा पडंदा ॥ ४ ॥ नीर का धागा कभी नहीं निकसे, पोल ही पोल मरंदा । मानसिंह कहे कोई मत फसियो, ना कोई सूर नहीं चंदा ॥५॥

॥ सवैया ॥

औरन ग्रह बनाय बनाय के अपनो गृह खोय दोगे भाई।
और के ग्रह को रेत उछालो अपने गृह की खोज लगाई।
इन नव ग्रह में बहुत फँसे अब तो न फँसे गुरु राह बताई।
दशवो ग्रह है अपनो निज आतम जो खोजें ता उत्तर पाई।
ओ दशवो जो तू नही खोजैं तो वो दशवो एक काल जो आई।
यह नव ग्रह जो रहेगें धरे थे ही दशवे घर को पकड ले जाई॥

॥ सवैया ।

राशी ही राशी को कहा बके और कहा तू जूदा ही जूदा बतलावे।
अपनी राशी जो आत है खोटी इनको नही तू ध्यान में लावे।
गणित और फलित करे सब को अपणी नही गणना आप सभावे।
गिणतां गिणतां गम भूल जहे जब आप के ऊपर चोट मचावे।
बारह ने तेरह छोड सभी तू है जिनको तू क्यों न उठावे।
नव दश एकादश औरबारह सब ही को तू एक साक्षी कहावे।
गुरु देव ही नाथ जो हाथ पकड़ के नित प्रति यूं तो को समझावे।
नप मान कहे अज हू न लखे तो जन्म और मरण को दुःख तू ही पावे॥

॥ गान ॥

राग बसन्ती । ताल कैरवा ॥

ओ भ्रम कौन उडावे, मेरे सतो ओ भ्रम कौन उडावे। अन्ध विश्वास
छाम महे नित, इनको कौन जगावे, मेरे सतो ॥टेर॥

लीनो लोट पूतला कीना, आगे रो प्राण पधरावे । ताहि को फिर मारण बैठे, यूं ग्रह किम कर जावे ॥ १ ॥ नव और सात लिया सब धातु, जिनको दान करावे। चांदी सुवरण आप ले जावे, और सो बार नचावे ॥ २ ॥ घृत और तेल में देखे मुख अपनो, सुवरण मांय गिरावे। जो वे ग्रह साचा ही हूवे तो, दान लेवे ज्यां ने खावे ॥ ३ ॥ ग्रह शान्ति को पढे नित मन्तर, जपिये पढ़ के सुनावे। जपनहार दुःख सुख क्यूं भोगे, यही तो हाँसी मोहे आवे ॥ ४ ॥ औरां रा ग्रह शान्ति करतो, ऊमर सगरी गमावे। सगलाई ग्रह जद लेवेला बदलो, तो फिर कोई न छुडावें॥५॥ मरण जन्म ने मेट सके नही, कुण इण फदे मे आवे। जपिया आप खाट मां है पडिया, ज्यां ने औषध कोई न पिलावे ॥ ६ ॥ अपनो भोग आप नही मेटे, औरां ने खावे ॥ ७ ॥ जपिया और ग्रह मानूं नही दोनूं, मो पर क्यों फिर आवे। मानसिंह स्वरूप मेरे में, राशी ने ग्रह सब विलावें ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

पूनम और एकादशी कौन है चन्दा चौथ को व्रत ठहरायो ।
अष्टमी पंचम सब ही किये और नवमी चतुर्दशी व्रत करायो ।
जेते है व्रत ते किये सभी पर यह मन डोलत नाँहि रहायो ।
ज्यों ज्यों भूख मरयो त्यों ही दौड़यो दूणो विषय रस को यह चायो ॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म विचार को भूल गये और फल ही फल में शीश कुटायो ।
फल तो जाने मिल्यो न मिल्यो क्या किनको मिल्यो ज्याँरो पत्र न आयो ।
बाप किये और दादा किये उन ते ही पहिले व्रत बतायो ।
हम हूँ करे समाचार नहीं कुछ कौन से मोक्ष में स्थान थपायो ।
बिना पते ये बात है यारो ऐसो मुझे फल दाय न आयो ।
मान कहे जो कियो ब्रह्म को व्रत ऐसो कियो तो सही सुख पायो ॥

॥ गान ॥

तर्ज 'बाणी' की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई ऐसा व्रत मैंने कीना । भूखो रहूँ न धाप ही खाऊँ,
यूँ निश्चय ले लीना ॥ टेर ॥

सब कुछ खाऊँ और कुछ नहीं खाऊँ, यह पहिचान कर लीना । एकादशी पूनम अमावस, दूजा भाव तज दीना ॥ १ ॥ जो खावें सो मैं ही तो खाऊँ, मुझ से कुण रहे न्यारा । जितने भूखे सब ही मैं हूँ, यों कर असल विचारा ॥ २ ॥ मैं हूँ स्वर्ग नरक पुनि मैं हूँ, मैं यमराज कहाऊँ । मेरा दंड मैं ही तो भोगूं, किण को दण्ड छुड़ाऊँ ॥ ३ ॥ गोरख कबीर भरथरी रसिया, जिन यह रहस्य बताया । मानसिंह गुरु देवनाथ से, असली व्रत हम पाया ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

तर्ज 'बाणी' की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई भूख मरे सोई गेला । हिंदू ने तुर्क सुणो
सब कोई, पड़ो मत पोल रे भेला ॥ टेर ॥

भूखाँ मरियाँ मिलेला नहीं भगवत, विषयाँ री जाग्रति हुवेला । काया कती ने टुकड़ा दे दो, नहीं तो रांड लड़ेला ॥ १ ॥ काया तो कहे भोजन मैं करसूं, ये व्रत नाँय फलेला । भोजन करो ने त्याग दो ममता तो सहजे चौरासी टलेला ॥ २ ॥ भूखाँ ही मरियाँ मिले जो भगवत, तो अजगर ने ही मिलेला । उमर भूख कदे नहीं

धापे, ओ तो मरतां ही सहज तिरेला ।। ३ ।। सूक्ष्म आहार अति नही खावे, सोच विचार करेला । भूखा मरत जो प्राण निकल गयो, तो अन्न की ईली हुवेला ।। ४ ।। जिनकी जहाँ वृत्ति तहाँ जन्मे, वेद हू साख भरेला । भूखे की वृत्ति अन्न माँहि होसी, तो क्यो कर जन्म टलेला ।। ५ ।। हिंदू व्रत तुर्क करे रोजा, दोनो ही मूढ कहेला । व्रत नाम एकाग्र रहणो, कोई शूरा ही संत समझेला ।। ६ ।। मान कहे म्हाने गुरु नही मिलया, जप तप व्रत किया पहला । देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, मिलिया ब्रह्म पद भेला ।। ७ ।।

।। दोहा ।।

जग मिथ्या कहते फिरे, ये ही बात सुनाय ।
इनको कुछ मिथ्या नही, क्यो कर मोय पत आय ।।

।। चौपाई ।।

सबको यह जो मिथ्या बतावे । कहत इन्हें कुछ शरम न आवे ।।
जोरहिं द्रव्य रचहिं मठ नाना । फिर कहो त्याग हि त्याग बखाना ।।
ऐसो त्याग हमे नहीं भावे । देखत मनहु ग्लानी आवे ।।
धारेहु भेख बने सन्यासी । लिये फिरत अविद्या फासी ।।

।। दोहा ।।

बडे बडे पंडित गुनी, उपनिषद् को गान ।
अर्थ जिन्हे अनरथ करे, करते शरम न आत ।।

।। चौपाई ।।

ऐसो त्याग दूर तज दीजे । भूल नही इनकी पत कीजे ।।
इनकी पत करे सोई दुःख पावें । यह नित बैठे मौज उडावैं ।।
त्याग तो सोई सत्य है भाई । पार्थ प्रति कृष्ण ने गाई ।।
सब कछु करी अकृत्य रहाना । सोई त्याग सत्य कर माना ।।
ले सन्यास अर्जुन बन जावे । धर्म घटे गीदड कहलावे ।।
जाय राज घर में होय हानि । शत्रु हँसे जग निन्दा जानी ।।
धृक् ऐसे त्याग की खाक उडाओ । उत्तम त्याग सो ही चित लाओ ।।
परधन तजो तजो परनारी । गृहस्थ छते रहिये ब्रह्मचारी ।।
जग में रहो कर्म सब कीजे । सुत पितु नारी को नाँहि तजीजे ।।
जेते कुकर्म होय निवारो । शुद्ध कर्त्तव्य करो चित्त धारो ।।

॥ दोहा ॥

अपनो रूप सब में लखे, विश्व आप सम जान।
सो संन्यासी सत्य है, कह मरुधर पति मान ॥

॥ गान ॥

राग मांड । ताल दादरा ॥

नर मूढ़ अज्ञानी, बात न जानी कूड़ो बने हकदार ॥ टेर ॥
घर की दुकान से बाहिर आयो, याँही करली तैयार । वहाँ जो हतो धन माल व्यापारी, याँ मूरत को व्यापार ॥ १ ॥ वर्ण आश्रम को छोड़ के निकस्यो, याँ भी झगड़ो लार। चेला ने चेली चित में चाहत, बन्यो है ठग व्यापार ॥ २ ॥ गृहस्थ ही में तो हुती ठगबाजी, अब बाजे साहूकार । पद संन्यासी करे साहूकारी, कइयाँ ने बैठो मार ॥ ३ ॥ देव हू नाथ को साथ किये जब, भागा भरम अन्धार । सब में मैं और मो में है जग, टूटे द्वैत विकार ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग जोगिया । ताल दीपचन्दी ॥

बिन श्रद्धा के जोगी; रहे जग बिन श्रद्धा के जोगी ॥ टेर ॥
जोग पंथ जान्यो नहीं मन में, रहे विषय रस भोगी । देवत दोष कुटुम्ब नारी को, मन नहीं माने रोगी ॥ १ ॥ रामचंद्र संन्यस्त लियो कब, जनक कदे बन धायो । धर्मराज पार्थ आदि यह, कौन सो योग कमायो ॥ २ ॥ नारी ही नारी बुरी कहत सब, कहत शर्म नहीं आवे । बड़े बड़े ऋषि इन्हीं संग आये, ये किनके ही नहीं जावे ॥३॥ क्या कोई नारी करे किसी का, क्या कोई योग डिगावे । मन तो नहीं यह अपनो मानत, माखण ज्यों गल जावे ॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु कृपा कीन जब, भोग में योग सिखावे । भोग ने योग को एक मान अब, मान अभय पद पावे ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मानसिंह संसार में, संन्यासी एक दोय ।
सत्यानाशी है घणा, ज्यांरी गणना न होय ।
ज्यांरी गणना न होय, माँग के जगत को खावें ।
माँग्यां भगे न भूख, फेर पाखंड चलावें ।
जप तप और सिद्धाइयां, दीनो जगत डुबोय ।
मानसिंह संसार में, संन्यासी एक दोय ॥

॥ सवैया ॥

केतेक काले और केतेक पीले केतेक भगवाँ भेष बनाई ।
केतेक श्वेत रखे अपमानी न्यारी न्यारी जो टेक चलाई ।
केतेक तुलसी केतेक चंदन केतेक काठ की माला सजाई ।
एकमुखी पचमुखी रुद्राक्ष में एक से एक करे अधिकाई ।
केतेक कान फड़ाय छुरी से पत्थर की ले मुद्रा पहिनाई ।
ताहि ते नाँय भई तृप्ती तब लेके कनक की मुद्रा चढ़ाई ।
महंत और संत बने सगरे जो कोई किसी से नहीं कम भाई ।
ढूंढणा थो जाको भूल गये यूँ स्वांग ही स्वाँग में बात गमाई ।
नाम वैरागी और राग घणी जाके किंचित मात्र भी नाँय मिटाई ।
नाम संन्यासी न नाश कियो कुछ नाम के काम को योही लजाई ।
मरुधर पति मान कहे सबसे मैं संतन की ही करूँ सेवकाई ।
पर नकटे निर्लज्जों से डरता रहूँ जो संत है उनको मैं दास सदाई ॥

॥ दोहा ॥

नाम तो लेत बैराग को, गाढ़ा अनन्त जो राग ।
मानसिंह जग आय के भली उड़ाई खाक ॥

॥ सवैया ॥

जोग ही जोग बके सगरे और जोग कहा इनको नहीं जाने ।
केते खैंच कर श्वास चढ़ावत रेचक पूरक कुम्भक ठाने ।
के ही मल के द्वार को बान्धत केते उड़ाण से बन्ध लगाने ।
केते ही नाभि में उलटत उल्टे केतेक अष्ट ही कमल छिदाने ।
केतेक नहावत त्रिपुटी संग में पान अपान की संधि मिलाने ।
जोग की गैल मिले जब ही कोई सहज ही योग के पन्थ में आने ।
एक न दुःख परे उनको जिन खैंच के कीनो है सुरत ठिकाने ।
मान कहे यह जोग सही है यों करके कर जोग बखाने ॥

॥ सवैया ॥

केते खड़े जो सिद्धाई करे यों पत्थर को ये अफीम बनावे ।
केतेक नौन करे मिश्री मन चाही गपों को ये मान उड़ावे ।
केतेक मानुष सिंह बने बन बीच में आय के जगत डरावे ।
या में नाँहि सिद्धाई कोऊ ये तो जगत ठगाई की राह चलावे ।

मानुष कीन्ह हरी हमको फिर कहां पशु बन बन में जावे।
नृप मान कहे मानुष तन में सुख ऐसो पशु में कभी नहीं पावे ।।

।। सवैया ।।

केतेक भैरव भूत को पूजत केतेक यक्षिणी मंत्र सुनावे।
केतेक योगी आकाश उड़े और केतेक माल मता को उड़ावे।
केतेक जंत्र और मंत्र को साधत केतेक कंकरी मूठ चलावे।
केतेक मरे को आन बुलावत केतेक पोला जो पंथ चलावे।
बाप मरयो न बुलायो कोई और आप हू मरन की राह संभावे।
मान कहे जो सिद्धाई करो कई और सिद्धाई को भूर मिलावे।
मेरो ही नूर सभी में खड़ो जब कौन सिद्धाई में हाथ उठावे।
मेरी सिद्धाई मिली मुझ से अब और सिद्धाई नहीं हम चावे ।।

।। सवैया ।।

जीवत जाय गडे जो जमी में ये तो जगत ठगान सिधाई।
यामें कोई कल्याण लखे सुपने हू कल्याण होवे नहीं भाई।
आप ही मुफ्त में जाय यों जीव ते इन में जो कौनसी दीखे भलाई।
बाहर रयो जब जगत ठग्यो और मरते मरत दुकान जमाई।
स्वास को गिणतो अन्तर करके अभ्यास से यों कर गिणत लगाई।
अन्तिम स्वास को आवत देख्यो तो जाय दब्यो वह खाड के माँई।
पहले ही खाड में जीवत पड़यो थो मूंवे खाड तो छूटत नाँई।
नृप मान कहे हम तो नहीं चाहत चाहे जिसे ये दिखावो सिद्धाई ।।

राग भैरवी। ताल कैरवा ।।

भरम गांठ नहीं जावे; साधो देखो भरम गांठ नहीं जावे ।। टेर ।।
मूंज जली बल खाक भई पर अजहु वट न छिपावे। भेष धरयो पर टेक नहीं आई कुल की वृ झलकावे ।। १ ।।चरण परसियां चित होय सीधो पाप परिक्रमा से जावे। दर्श किया ते दुःख होय दूरा देखो पोल जमावे ।। २ ।। भेदाभेद अजहु मिट्या नहीं घूल संन्यस्त कमावे। इतके शिष्य उतको बहकावत भले बुरे बतलावे ।। ३ ।। भरम को भूत बढ्यो उर अन्दर अब वो कौन निकलावे। चौथे आश्रम के पूरे ठग यह कौन आनो ठग आवे ।। ४ ।।देवनाथ गुरु शुद्ध संन्यासी ज्यों गीता में कृष्ण सुनावे। मान गृहस्त संन्यस्त एक है भूल बार मत जावे ।। ५ ।।

॥ गान ॥

राग बिहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई सूना नींद उडाओ रे । जन्म ही जन्म बहुत तुम सोये,
अब चेतन चेताओ रे रे ॥ टेर ॥

स्वाँग पाखंड दंड धरो केता, यूँ साहिब नहीं पाओ रे । साहिब मिलन को मग है न्यारो मन समझे जद आवो रे ॥ १ ॥ जन्त्र ने मन्त्र करो सिद्धायाँ, जगत ठगो ने भल जावो रे ॥ ठगणे निकस्यो जिनको भूलो तो, बिच माहे आप ठगावो रे ॥ २ ॥ माघ पोष माँहे नीर ढोलो सिर, यह सब जगत रिझावे रे । जलचर जीव पड़ा रहे माँहि तो, किमडा ने मुक्तो ले जावो रे ॥ ३ ॥ निजा धर्म ज्ञान पीवो रज बीरज, क्यूँ थे डुबो ने डुबावो रे । कीडे रहत कीच के माहि , वाँने किम्या धर्मी बतावे रे ॥ ४ ॥देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, सैनी सैं समझावो रे । मान गृहस्थ सन्यस्त कौन फिर , अपनोई रूप दरसावो रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग टोडी । ताल तिताला ॥

कैसे आय विश्वास दभिन को, कैसे आय विश्वास ॥ टेर ॥

बने रहे परि पक्व महात्मा, करत विषय रस हास । मतलब काज कुछ की कुछ पढावे, कैसे होय प्रकाश ॥ १ ॥ साख पुरातन दे दे देखो, सबही बिगाड्यो यह रास । कहें सर्वस्व सौंप दो गुरु को यूं दे भक्ति को त्रास ॥ २ ॥ देखो मीरा भाव कियो कैसो जिन गुरु कीनो रैदास । ऐसी साख अनेक दिखावे, डारे भरम को फास ॥ ३ ॥ मीराँ जैसी मीराँ ही कहिये संत जिसे रैदास । मान गहे दभिन मुख कालो, जिन कियो देश को नाश ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

हंस को रूप धर्‌यो बगुले और सैनहीं मूंद के ध्यान लगावे ।
आवत देखत है मच्छी को ताही को मुख में गलि जावे ।
हँस ही जान के आवत मच्छी अपने ही मुखते मोती झिलावे ।
यह नही जानत है मन में मोती बदले हमें निगलावे ।
मान कहे विषयन की मच्छी यह त्यागे नहीं और संत कहावे ।
लानत है अस संतन को जिन को संग हमें सुपने नहिं भावे ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे रे नाथ जी भली डुबाई बात ।
नाथन नाम धराय के, रह गये आप अनाथ ॥

कान फड़ाये क्या हुए, मनहु फाटो नाँय ।
जब मन फाटे जगत ते, तब निज नाथ कहाय ।।
मान कहे हे नाथ जी, मती लजावो स्वांग ।
साधु रूप कहाय के, अकल खाई क्यों भांग ।।

॥ सवैया ॥

ज्ञान वैराग्य नहीं उर में यह दुःख विपत्ती से भेष सजावे ।
कान फड़ाय के धराय के स्वांग यह नाथ पने को जो नाम लजावे ।
भेष की टेक डुबाय दिवी यह काम और दाम में ध्यान लगावें ।
जगत बिचारी में भूल पड़ी यह बापजी कह पद ग्रान गिरावें ।
मान कहे रे दया कछु नाहीं है बाप बने किस विषय कमावें ।
देय तो देव स्वरूप भये नकटे सो कनक में दाग लगावे ।।

॥ सवैया ॥

इत के न रहे उत के न रहे यूँ स्वांग सजाय भये सम सूरे ।
आन कड़ाकड़ माची जबे सिर पर किलकार भगे भग दूरे ।
कान फड़ाय फट्यो नहीं यह मन फाटे बिना मन है सब कूरे ।
मान कहे मैं मानूं नहीं देखो नाथ नहीं ये माया मजूरे ।।

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज "फकीरी" की । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा स्वांग फकीरी न धार । करएा फकीरी है
दुस्तर करड़ी, शेल सहे सिर सार ।। टेर ।।

शूली सेज बिछाई सुन्दर, ता तल अग्नि जार । ता पर सोय जगत बहकावे, यों खुश नहीं करतार ।। १ ।। कान फड़ाय सुरंगी कंथा, हाथ टीकरा धार । लोक दिखाय अलख बम बम कहे, जाएी भूल गंवार ।। २ ।। भंग धतूरा चरस पिवे नित, अगन पलीता उजार । राम न चीन्हो उमर सब बीती, दीनों कलेवर जार ।। ३ ।। भेख धरयो और टेक न झाली, समझयो न सार असार । कनक कामिनी छूटी न उर ते, आयो न त्याग लिगार ।। ४ ।। त्याग को त्याग कियो नहीं मूरख, नहीं बैठो मन मार । मान कहे ऐसो जीवन धूल सम, बार बार धिकार ।। ५ ।।

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज "फकीरी" की । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा अमल फकीरी और । असली छोड नकल कर
बैठा, मन ही मन के चोर ॥ टेर ॥

त्याग भाग लक्षणा लीनी, ज्यारे दिल बिच ऊगा भोर । समझ सूं समझ रमझ कर लीनी, दे डके पर ठोर ॥ १ ॥ ज्यांरी लहर जगत क्या जाने, मिले चोर सूं चोर । धर पाखण्ड दण्ड कई भांति, जावे वा सग दौर ॥ २ ॥ मन मुद्दा मिल मस्त रहे वे, बांनें न परवा और । चाहे बिगडे और चाहे रहे जग, निरख लियो निज जौहर ॥ ३ ॥ नाम सन्यस्त गृहस्थ सं बदतर, कर रह्या होडा होड । अपनी अपनी खैंच खैंच कर, रह गये ज्यूं त्यूं हौड ॥ ४ ॥ त्याग ग्रहण उनके कछु नाही, वाद विवाद न और । अपना स्वरूप परख लियो आप ही, जैसे मे चद्र चकोर ॥ ५ ॥ वाचक ज्ञान बके बहतेरा, उपनिषद पर जोर । अपनी आपको सूझी नांही, या ही रहे निकोर ॥ ६ ॥ बुरे भले जैसे तैसे रहो, कछु न लेवो मोर । मानसिंह मैं तो साच कहो है, अधिक नहीं कछु जोर ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज "फकीरी" की । ताल दीपचदी ॥

फकीरा स्वांग फकीरी के चोर ॥ टेर ॥

स्वांग फकीरी जगत रिझावे, राखे चिलम पर जोर । लाबा लाबा उडत पलीता, माचे रह्यो धकधोर ॥ १ ॥ चहु दिश आग जलाय जोर सूं, बैठे रहे इक ठौर । कर कर धाक डरावे जग ने, जाणे सिंह की घोर ॥ २ ॥ बात बात मे श्राप देत वे, घस घस दन्त करोर । जो सिद्ध होय तो जग से क्यो मांगत, भटके क्यू चहुं ओर ॥ ३ ॥ भोदू भेड डरे वे बपूरे, मिले चोरां ने ढोर । मानसिंह गुरु देवनाथ मिले, नही डरपे मन मोर ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

स्वांग फकीरी को धारके बैठे लाम्बो चिलम जो हाथ रखावे ।
प्रीति भई मुलफे अन्दर यो कर ललकार के बानी सुनावे ।
अलख अलख कहे मुखते ज्यांरो लेख नही तो कहा बतावे ।
मान कहे है ऐसे फकीर जिन्हे धक है ये नित उठ जगत रिझावे ॥

॥ सवैया ॥

दोय जो हाथ को चिम्मट राखत लेकर चिम्मट चिराग चढावे ।
रात और दिवस पिवे नित मुलफा या मे ही वे फकीर कहावे

आप तो बिगड़े बिगड़ा दियो जग आप जरे औरों ने जरावें।
जैसो ही कीट जम्यो है चिलम में ऐसो ही कीट उर में जम जावे।
मान कहे धृक है इनको ये भेख फकीरी को नाम लजावे।
पाखण्ड धार के जगत ठगे यह भेद फकीरी नहीं कछु पावें।

॥ गान ॥

राग सोरठ। ताल कैरवा ॥

साधो भाई मत रहो प्रेत समाना। दीखो देव पशू बन बैठा,
नेक लाज नहीं आना ॥ टेर ॥

चड़स शराब पियो थे बेहद, बैठा बको ज्यूं स्वाला। शुद्ध अशुद्ध ज्ञान नहीं थाँने, वृथा ही भेख भंडाणा ॥ १ ॥ भगवां माँय भगवान बसत है, गावे वेद पुराणा। भेख की टेक रती नही राखो, उर अज्ञान भराणा ॥ २ ॥ करो अखंड पाखण्ड बहुतसा साधु लक्ष्य भुलाना। गोरख कबीर हुवे जैसे शुक, जिन यह भेद पिछाणा ॥ ३ ॥ खावो पीवो मौज उड़ावो, सुख भोगो थे नाना। कनक कामिनी त्याग किये नहीं, जिनको समझो प्राणा ॥ ४ ॥ साधु सो नर सीधा चाले, निर्मल नीर कहाना। नीर के माँय हिलन को आवरण, नीर में यह मिल जाना ॥ ५ ॥ धन्य कबीर और गोरख धन्य है, धन्य भरथरी माना। मानसिंह तिनको मत लीनो, आवागमन मिटाना ॥ ५॥

॥ दोहा ॥

दोपारे सारंग भली, सोरठ भली अधरात।
कर जो समझ विचार ने, ओ समय देखने बात ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ, तर्ज "फकीरी"। ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा समझलेवो रे म्हारा लाल। खावो माल और मौज उड़ावो,
दोरी खेंची जेला खाल ॥टेर ॥

असल फकीरी भूल गया थे, निकम्मा बजावो गाल। बाजो महाराज लाज नहीं मन में, खबर पड़ैला आवे काल ॥ १ ॥ जगत पिता बण कर थे बैठा, और नहीं भेख प्रतिपाल। कालनेमी रावण गति होई, वोही होसी थांरो हाल ॥ २ ॥ होय फकीर फिकर तज अपना, पण करो विश्वरो ख्याल। काच कथीर किणी ने मत दीजो, बाजो थे हीरों रा दलाल ॥ ३ ॥ खाओ मान बरजां नहीं थांने पण करजो नमक हलाल। नमक हराम यदि थे करसो, काको नहीं थारो काल ॥ ४ ॥

देव स्वरूप नाथ माहे मिलिया, जिन कर दियो माला माल। मानसिंह घर बैठा फकीरी, कुण फिर होवै कंगाल ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

साधो रे भाई थे मती कहो ज्ञान लकड रे।
कर्मयोग बिना बात्याँ करसो, तो लेऊँला जीभ पकड रे ॥ टेर ॥
सूखो ज्ञान त्याग क्यो गावो, बैठा करो अकड रे।
औरां ने त्याग वैराग बतावो, आप तो बैठा जकड रे ॥ १ ॥
फिकर चौगुणी गृहस्थ सू मन में, तब क्योंकर हुवा फक्कड रे।
झूठो केवो ने उणी पर जावो, नित्य भी मचावो गडबड रे ॥ २ ॥
हम गृहस्थी ऐसे नही मानो, औ मुणियो न जाय जिकर रे।
है सब गृहस्थी सच्चे सन्यासी, समझ ने देखो कोई अड रे ॥ ३ ॥
बातांरो ब्रह्म ज्ञान नही चलसी, काँई बाचो जैसे फड रे।
घट में आपरी मिले स्थापरी, सीश उतार देऊँ मैं धर रे ॥ ४ ॥
फागण माँय बके ज्यूँ बालक, ज्यूँ थे बको भड भड रे।
जनक वशिष्ठ सा मिल्या कोई गृहस्थी, तो मेट देवेला खडबड रे ॥ ५ ॥
असली बात हाथ नही आई, भरम गये रया चढ रे।
निन्दो कृष्ण शर्म नही आवे, लेसी कोई नाक कतर रे ॥ ६ ॥
जिण कया वेद और उपनिषद् कद छोड्या वाँ घर रे।
योगी कृष्ण जिवाँरी सुणलो, नारी सोले सहस्त्र रे ॥ ७ ॥
ब्रह्मा आदि पिता सब जगरो, जिण गृहस्थ पणो लियो धर रे।
करके ग्लानी निकल्या इण जग सूं, वांरी निकल गई अकल रे ॥ ८ ॥
देवनाथ गुरु साचा गृहस्थी, ज्ञान घोडे आया चढ रे।
हठ कियो मान वो पकड चढायो, आऊँ नही पाछो मैं मुड रे ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

चवडे मारी फूंक, हमारे गुरु चवडे मारी फूंक ॥ टेर ॥

शब्द सुणाया श्वास मे आया, गया कान में पूरा। ऐसा शब्द तन लागिया रे, भया कलेजे रा टूक। हमारे गुरु. ॥ १ ॥ शब्द सुणाया तृप्ति आया, मिटी अनन्त युगाँ री भूख। तृष्णा वेलडी जल ने लागी, मूल सहित गई सूख। हमारे

गुरु. ॥ २ ॥ फूंक लगी ने मोय आनन्द आयो, मिट गई हाका हूक । मानसिंह कहे सुनो हो मित्रो, अब मिट गई विरह की कूक । हमारे गुरु. ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

राग सिन्धवी, तर्ज हेली की । ताल केरवा ॥

अलमस्ताना ने नहीं छेड़िये ए हेली; छेड़या पीछे रहसी नांय । म्हारी हेली ए; अलमस्ताना. ॥ टेर ॥

खुला खजाना ज्ञान रा ए हेली; तीन काल में नहीं खूट । जो आया जिके ले गया ए हेली; वे भी भया है अखूट ॥ १ ॥ जो छेड़ो तो मरणो धार लो ए हेली; तज दो जीवणी री आस । ज्ञान शराब नित पीवणो ए हेली; मुवां पीछे लेवे अपणे मांय । मांय लियो तो पाछो नहीं जावे ए हेली, जल बिच तरंग समाय ॥ ३ ॥ अलमस्ताना सिंह ज्यूं ए हेली; करत अट पटी घोर । सूरा जिके तो सन्मुख रेवे ए हेली; भाग जावे सब चोर ॥ ४ ॥ सिंहारा टोला नहीं ए हेली, मंठ मठ नहीं हूं सन्त । सन्त तो जग में थोड़ा मिले ए हेली; आदि दिखावे पन्थ ॥ ५ ॥ बीसा दसा टिकसी नहीं ए हेली, नहीं रे कांचलियों सूं काम । आदि पन्थ तो कोई और है ए हेली; ए सब विषय रा गुलाम ॥ ६ ॥ बारह पंथां सूं पन्थ और है ए हेली; वो पन्थ आदि अनादि । शिव ने विष्णु उठे हैं नहीं ए हेली; जाणे कोई विरह रा साध ॥ ७ ॥ गुप्त पंथ गुरु रो नहीं ए हेली, चवड़े वाजे ढोल । एड़ा अलबेला म्हारा नाथ जी ए हेली; सब री निकाली पोल ॥ ८ ॥ मान पुजारी उण नाथ रो ए हेली; हुय गयो आप सनाथ । नाथ होय उण घर पहुंचियो ए हेली; नहीं उठे दिन और रात ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

राग मालकोश । ताल तिताला ॥

लूटे ठग मारग में; देखो लूटे ठग मारग में ॥ टेर ॥

जेते ठग यह मिले रहत हैं, एक एक की पख में । जात बटाऊ अपनी धुन में, वे खड़े रहत इस तक में ॥ १ ॥ कोई पंडित कोई गुरु बन बैठे, एक एक के हक में । असली बात हाथ किम आवे, पड़े ठगन की लग में ॥ २ ॥ छोड़त नहीं शोक के अन्दर तो कैसे छोड़े हरख में । माया की लाव लगी उर अन्दर, रहत हैं नित तक में ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु दया करी जद, आनन्द मिला परख में । मानसिंह अब धाप गये हम, आवें न इनकी चरख में ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी ताल कैरवा ॥

क्या भ्रम जाल बिछायो, यों भेद ही भेद बताओ ॥टेर॥

वेद युक्त बात सब भूले, पोल ही पोल चलायो। पोल के ढोल बजे सो सुणे नही, अन्धाँ जग बहकायो ॥ १ ॥ वेद शास्त्र और उपनिशद् इन सब एकहि गायो। पोल पुराण कपोल बधी इन, खूब ही जगत् बहकायो ॥ २ ॥ ब्रह्मा के इष्ट ब्रह्मा ही भाखत, ब्रह्मा जगत रचायो। विष्णु पुराण विष्णु की भाखत, न्यारो ही न्यारो ठहरायो ॥ ३ ॥ शिव पुराण शिवजी से सृष्टि गणपति और बतायो। कोई कहे सूरज से उपजो, याको अन्त नहीं आयो ॥ ४ ॥ देवी पुराण कहे देवी से, साच न किणी ठहरायो। मैं तो बात एक नहीं पाई, भ्रम भ्रम में भरमायो ॥ ५ ॥ जिसने सृष्टि रचाई सारी, सो तो माँय समायो। देवनाथ गुरु कृपा करी है, सूताँ मोय जगायो ॥ ६ ॥ मानसिंह मैं मान्यो घणा दिन, जब तक निगे न आयो। दृष्टि खोल आपने जोयो तो, दूजो नही दरसायो ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

कहत शरम नहीं आवे, बात ऐसी कहत शरम नहीं आवे ॥टेर॥

अपनी अपनी खैंच खैंच कर, ताण्य उलटी जावे। श्वान मुख हाड तोडत है मुख को, तदपि ताय चबावे ॥ १ ॥ कोई भक्ति कोई योग बतावे, कोई कर त्याग सुनावे। एक एक की काट छाट मे, जग तो मारी जावे ॥ २ ॥ योगी कहे कृष्ण है योगी, भक्त ही भगवत बतावे। कहे सयासी कृष्ण है साधू कोई ब्रह्मचारी सुनावे ॥ ३॥ कोई कहे यशोदा को जायो कोई एक ग्वाल बनावे। कोई कहे वसुदेव लाल याको, क्षत्री को पूत बतावे ॥ ४ ॥ एक ही नाम अनेक अर्थ कर, फिर फिर जगत बहकावे। सुनत सुनत सब होश उडे है, अब देव कौन सो ध्यावें ॥ ५ ॥ पुरुष तो एक हजार नाम दे, किण सूं खाज्यो जावे। मानसिंह मैं तो हार गयो अब, ऐसो न सुमरयो जावे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

किण किण ने समझाऊँ, उल्टो जग किण किण ने समझाऊँ ॥ टेर ॥

जैसे गुरु वैसे ही चेला, क्यूंकर के मैं बचाऊँ। एक होय तो पकड मिला दूं, है अनन्त क्या गाऊँ ? ॥ १ ॥ मेरी समझाई कोई न समझे मैं क्यो यह दुख पाऊँ। पड गई

बाण छूटे नहीं मुझसे, जलते ही बचे सो बचाऊँ ।। २ ।। मेरो तो चित्त ये ऐसे कहत है, कि मुझसो ही जगत बनाऊँ। हुवो हैरान बात में बक बक, आदत क्यों कर मिटाऊँ ।। ३ ।। देवनाथ गुरु दियो नशो यह, सो मैं सब को बताऊँ। मानसिंह यह असल नशा कोई, पीवे तए फेर पिलाऊँ ।। ४ ।।

।। गान ।।

राग काफी–कान्हड़ा । ताल तितला ।।

अब हम क्या किनको समझावें । एक को कहत एक
नहीं माने, अपनी अपनी मचावे ।। टेर ।।

एक भूल तो मिटत नहीं है, दूजी भूल ले आवें। भूल को भरयो समंदर देखो, कब तक इन्हें मिटावें ।। १ ।। पंथन की भूल है भूल मन्थन की, मत की भूल सुनावें। भूल भूल में है सो भूल गये, अब क्यूंकर के सुलझावें ।। २ ।। अपनी भूल डारी ग्रंथन में, नहीं निज भेद बतावें। जैसा हृदय निकली है बाणी, क्यों ग्रंथन दोष लगावें ।।३।। देवनाथ गुरु की न कृपा अब, अपनी तो दूर हटावें। कहे मानसिंह अपनी भूल यह, किनको जिकर चलावें ।। ४ ।।

।।सवैया ।।

देश ही देश को दूर कहें है दूर कहाँ और कहाँ हम जावें।
मार्ग तो कोई बतावे नहीं और दूर ही दूर की बात यह गावे।
केतेक गाँव तो मारग आय और कौन से गाँव ते मारग पावे।
दूर ही दूर में भूल गये हम खोज थके कहीं हाथ न आवे ।।

।। सवैया ।।

दूर ही दूर को छोड़ो परे जहाँ निशान नहीं वहाँ को अब धावे।
देश मेरो निज निश्चय को है वो मोहि में मेरा में आय मिलावे।
मरुधर पति मान कहे एसो पायो मै नाँ तो गयो और नाँ कोई जावे।
आप में स्थिर हो जाय है देश यह दूजो कहे सो झूठ बतावे ।।

होरी और वसन्त

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

आज मेरे घर होरी । मिटी मन की झकझोरी ॥ टेर ॥

समझ जो नाँय परी मोय सजनी, भई मैं और की औरी । जब मोय समझ लगी उर भीतर, मेरो मुझ श्याम मिलो री, गयो सब डर न डरोरी ॥ १ ॥ सूती नीद विषयन अटैया, कैसो भाग जग्योरी । विषय की नींद से जागत क्या भई, टूट गई जीव डोरी, श्यामा बिच श्याम मिलोरी ॥ २ ॥ आदि अमर मरूँ नही जन्मूँ, निश्चय केसर घोरी । ओइम सोहम् स्वन शब्द दोय, बन के फाग उचरोरी; रटत सब होरी होरी ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु दिल में दरसे, अब क्यों भरम फिरोरी । मानसिंह ऐसी होरी खेले, ब्रह्मानन्द भरोरी, काहू से नाँय डरोरी ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

मत कर निकमी झौड । पिया जी सूं प्रीत कर प्यारी ॥ टेर ॥

करणी केसर सुरत शिला पर, रगडो आठूं पौर । हृदय की मटकी जल जरना को, निश दिन तू तो घोर । पिया जी सूं ॥ १ ॥ परा पश्यती और मध्यमा, ए तीनूं ही ले लें चकोर । बेखरी शब्द हाथ पिचकारी, कस मारी प्रीतम ओर ॥ २ ॥ उर वैराग्य कुमकुम सुरंगी, निडर होय के घोल । चित्त को चग ले खूब बजावो, करकर ज्ञान ठटोर ॥ ३ ॥ अगम निगम निशाण बजे दोऊँ, गरज रह्या है घनघोर । दशवें द्वार रची अब होरी, बीच खेले चित चोर ॥ ४ ॥ जीव ने पीव जुदो हम राख्यो, उलटी पडी झकझोर । देवनाथ गुरु हाथ पकड कहे, अब पिव दीखे चहू ओर ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

होरी में हिम्मत ना हरोरी । श्याम सग खेलो गोरी ॥ टेर ॥

जिण जिण हिम्मत हार दिवी है, भव जल बीच गिरोरी । सन्मुख श्याम सूं खेल ले फागण, नही मन नेक डरोरी, पियाजी सूं मन कर चोरी ॥ १ ॥ क्यो भूली तू मूरख बावरी, करने लगी सेरे ठठोरी । पिया ते प्रेम नही कर जाने, होय रही निपट अघोरी; औरों से करत झकझोरी ॥ २ ॥ प्रीतम सग प्रीत कर प्यारी, ले समता

की रो री। उड़त गुलाल लाल प्रीतम संग, अमर सौभाग्य करोरी; और पिया नाँहि वरोरी ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु प्रगट पुकारे, क्यों यूँ मुफत मरोरी। मान कहे अब मान बावरी, मत तू डरत छिपोरी; मिलो वालम से जोरी ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

क्यों आली शरमावे। पियाजी से मिलनो न भावे ॥ टेर ॥
ऋतु वसंत भाग से आई, यह वार बार नहीं आवे। भाग देख सकी कृष्ण मिले यूँ, तू क्यों मुखड़ो छिपावे; नाहक मुख स्याही लगावे ॥ १ ॥ अभी तो मान मान में मरत तू, काल मान उड़ जावे। श्याम गया तेरो मान न पूछे, कौन से भाव बिकावे; देख तू सब भूल जावे ॥ २ ॥ जो अपनो तू मान चाहत है, हठ क्यूँ न दूर हटावे। मान दियाँ से मान रहत है, मान रख्याँ मान जावे, पिया सुपने नहीं आवे ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु कृष्ण बने तू, श्यामा क्यों न बन जावे। मानसिंह कई मान बावरी, नाहक स्वाँग दिखावे; जरा तोये लाज न आवे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

आज सखी फागण आयो। पिया जी सूँ प्रेम बढ़ायो ॥ टेर ॥
निर्लज्ज फाग बहुत दिन खेले, जिनमें स्यान गमायो। नहीं कहने के वचन कहे हम, अब सत् गुरु हटकायो, सैनी करके समझायो ॥ १ ॥ कहाँ तो कृष्ण कहाँ व्रज वनिता, फिर फिर जगत ठगायो। पर नारी को तक तक जोवत, अपनो ही धर्म गमायो; धरम को जहाज डुबायो ॥ २ ॥ करत स्तुति होत है निन्दा, फैली ने फैल मचायो। भक्त नाम में दुष्ट बने यह, कृष्ण को नाम लजायो, देश में जुल्म फैलायो ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु कृपा करी जद, मोको तो डूबत बचायो। हाहा मान नहीं वहत जात यूँ, जुल्मी पेच में आयो; घणा दिन मैं दुःख पायो ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

फाग मलीन खूब ही खेले खूब ही जो नर नारी रिझाई।
ऊँचे स्वर धमाल और काफी यह गाय ही गाय के राग सुणाई।
तदपि कृष्ण मिल्यो न हमें हम जोय लिये मंदिर सब जाई।
जैसे हैं देव हैं तैसे पुजारी इन में कमी न उनमें अधिकाई।
नृप मान कहे यह खूब जची इनपोन की चंग हमेश बजाई ॥
मेरे तो हाथ पड़ी यह अब ही मैं फोड़ के वाको दूर बगाई ॥

करोरी। धर्म मे हानि लाभ नही देखे, इनको काम सगोरी ॥ ४ ॥ होरी होरी मे होरी भई है, बिगड गई सब गोरी। मानसिंह करे अरज ईश से, अब कर दुष्टन की होरी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥
राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

लाखो की श्यान गमई। गुडो ने गोल मचाई ॥ टेर ॥

कृष्ण की होरी तो भूल गये ये, विषय की होरी रचाई। नैन निजारा कर कर थाके, विषय की बेल बढाई, कुबध यह उल्टी चलाई। गुडो ने ॥ १ ॥ लाखो मण गुलाल उडाय के, नारी हजारूँ बिगडाई। कृष्ण जिसे उत्तम ब्रह्मनिष्ठा, जिनकी धूल उडाई, करी तुरको मे हमाई ॥ २ ॥ दोष को भी उपदेश यह समझे, देखो अकल गमाई। जगत पिता हरि उव से न चूके, आवन नही शरणाई, देखो यह पोल है भाई ॥ ३ ॥ आप स्वय ये कृष्ण बन बैठे, निर्लज्ज लाज नही आई। नारी जात समझ बिन गैली, गुडन जाल फमाई, मुफ्त में लाज गमाई ॥ ४ ॥ कृष्ण जिसे केते है जग मे, जिन मुख बिच विश्व दिखाई। सोलह हजार भोगी जिन रानी, सब को कृष्ण दरसाई, करो इतनी समर्थाई ॥ ५ ॥ फँसे बहुत दिन इन फागण में, नही कुछ मिली भलाई। देवनाथ गुरु कृपा करी जद, होरी असल खेलाई, लपट मन भावत नाँई ॥ ६ ॥ जैसी बहिन पुत्री है अपनी, तैसी ही समझ पराई। सुरत सखी जो कृष्णजी के चरणाँ, पल अब पलटत नाँई, रहे हरदम लिपटाई ॥७ ॥ निजानन्द फागण अब खेल्यो, जागी यह झूठ सफाई। मानसिह अबे छोई न ओ सुख, इनमें ही मिली है भलाई, अबर तो रोल है भाई ॥ ८ ॥

॥ गान ॥
रेखता, राग कामोद। ताल रुपक ॥

चाल सखी उण देश मे, जहाँ अजब फागण होयजी। पीव के सग खेल हरदम वहाँ न रोके कोय जी ॥ १ ॥ मन का पडदा दूर करले, गफलत मे मत सोय जी। खेल निज प्रीतम से होरी, मूरत मोह पोयजी ॥ २ ॥ मरधर पति कहे मान प्यारी, मत विषय बिच रोय जी। करना है तो अभी करले, पीछे बने नही को
॥ ३ ॥

॥ गान ॥
राग प्रभाती। ताल कैरवा ॥

देखो री मोहन की होरी, सब में खेल खिनारो है ॥ टेर ॥

प्रात खेल मध्यान्ह ही खेले, नहि कुछ समय विचारो है। खेलन हारी तो थाक ग पण ये नहि थाकन वारो है ॥ १ ॥ खेले अगम पिछम भी खेले, उत्तर दक्षि

सारो है। जल थल नभ और पवन पावक में, ओ नहीं रेवत न्यारो है ॥ २ ॥ औरन को तो अन्त होत है, इनको अन्त न पारो है। और तो फाग मास दोय खेले, ओ खेलत मास जो बारों है ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु मिलिये रसिया, जब निज नयन निहारो है। मान कहे अब माल बावरी, परस इसो पिव प्यारो है ॥ ४ ॥

॥ गान ॥
राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

कच्चे रंग न खेलो प्यारी, कह माधव अलबेलो ए ॥ टेर ॥
धूप पड्याँ ओ रंग उड़ जासी, फागुण रस ना रहेलो ए। पक्का रंग उड़े नहीं कबहू, लाल ही लाल दिखेलो ए ॥ १ ॥ कच्चे रंग डूबी कई गोपी, ज्याँरो कुण संग करेलो ए। तू तो प्यारी रंग ले पक्का, इण बिन नाँही सरेलो ए ॥ २ ॥ राधे कृष्णमय नाम धरयो तू, नहीं तर नाम हरेलो ए। मेरी कारो लाल है तेरी एक होय पिगलेलो ए ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु समज बताई, अब कछु नाँही डरेलो ए। मान महान में आन समायो, नहीं जन्मे न मरेलो ए ॥ ४ ॥

॥ गान ॥
राग सारंग-लहर । ताल कैरवा ॥

म्हाँ ने श्रीमद सत गुरु पायो है लोय; होय नशे बिच सोय रयो ॥ टेर ॥
पहिलो प्यालो पीताँ ही भभक्यो, हाथ में खड्ग उठायो हे लोय। मार मैदान कियो मैं सब को; घर पर निजर न आयो हे लोय। होय नशे बिच. ॥ १ ॥ दूजे प्याले शीश उतारयो, कड़क घमसाण मचायो हे लोय। कुटम्ब ने मार माचा सब दुशमी, उठे रण रंग चढ़ आयो हे लोय ॥ २ ॥ तीजे प्याले त्रिविध दुःख त्याग्या; उठे अजर अमर सुख आयो हे लोय। सब माँहि मैं और मुझ में सब भास्या; उठे उर अज्ञान मिटायो हे लोय ॥ ३ ॥ चौथो प्यालो पियो ने चुप होया; अब निर्भयरी नींद घुराया हे लोय। दुशमण हुता ज्याँरो पाप काटियो; अब सूताँ ने कोई न जगायो हे लोय ॥ ४ ॥ देवनाथ गुरु अन्तर्यामी; मनड़े रो भरम मिटायो हे लोय। मानसिंह अब समझ्यो आप ने, मैं ही सब बीच समायो हे लोय ॥ ५ ॥

॥ गान ॥
राग सारंग—लूहर । ताल कैरवा ॥

म्हाँने सतगुरु सार समझायो हे लोय; निजपत आयो मन माँयलो ॥ टेर ॥
समझ्यो बैन सैन उर लागी; मैं तो समझ निगम घर आयो हे लोय; निजपत आयो. ॥ १ ॥ सर्गुण निर्गुण एक समझिया, म्हाँ रे मनड़े रो भरम मिटायो हे लोय ॥२॥ देवनाथ गुरु शांति स्वरूपी, मान ले ताहि में समायो हे लोय ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

मान बसन्त सब ही कहे, पर अन्त लखे नही कोय ।
अन्त लख्यां "बस अन्त" है, सन्त मुनि कहे सोय ॥
गाना गावत अन्त कहा, रहे आध के मांय ।
मान बसन्त क्यो कर लखे, "बस अन्त" जो आयो नांय ॥
और बसन्त कितनी कहो, विधि विधि रचि बनाय ।
अपनो अन्त तो आप है, रहे बसन्त के मांय ॥

॥ गान ॥

राग बसन्त । ताल धमाल ॥

देखो देखो रे जग में है अज्ञान, मूल तजे और सीचे पान ॥ टेर ॥ निजानन्द को दियो है त्याग, भटक रहे विषयन में लाग । थाक गये मुनिजन महान् ॥ १ ॥ प्रबल बढी है विषयन की ज्वाल; भूल गये कई मुनिवर ख्याल । मिथ्या जान्यो कोई गुनि गुणवान् ॥ २ ॥ जिन निज स्वरूप की निश्चय कीन, जग चरित्र अपनो लख लीन । मिट गई जिनके दु ख की खान ॥ ३ ॥ देवनाथ गुरु शुद्ध स्वरूप, दूर गया जाके भरम कूप । मान कहे मन रह्यो रे मान ॥ ४ ॥



मजदूर प्रि प्रेस इंदौर—

॥ दोहा ॥

मान वसन्त सब ही कहे, पर अन्त लखे नहीं कोय।
अन्त लख्यां "बस अन्त" है, सन्त मुनि कहे सोय॥
गाना गावत अन्त कहा, रहे आप के मांय।
मान वसन्त क्यों कर लखे, "बस अन्त" जो आयो तांय॥
और वसन्त कितनी कहो, विधि विधि रचि बनाय।
अपनो अन्त तो आप है, रहे वसन्त के मांय॥

॥ गान ॥

राग वसन्त। ताल धमाल॥

खो रे जग में है अज्ञान; मूल तजे और सींचे पान॥ टेर॥
ो दियो है त्याग; भटक रहे विषयन में लाग। थाक गये मुनिजन महान्
र वढ़ी है विषयन की ज्वाल; भूल गये कई मुनिवर ख्याल। मिथ्या
. गुनि गुणवान्॥ २॥ जिन निज स्वरूप को निश्चय कीन; जग चरित्र
लीन। मिट गई जिनके दु:ख की खान॥ ३॥ देवनाथ गुरु शुद्ध स्वरूप;
के भरम कूप। मान कहे मन रहयो रे मान॥ ४॥

